चित्र सूची

पृष्ठ

स्व० आयुर्वेद-पंचानन बाबू हरिदास वैद्य

भर्तृहरि कृत

श्रृंगार-शतक

शम्भुस्वयंभुहरयो हरिणेक्षणानां
येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः।
वाचामगोचरचरित्रविचित्रिताय
तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ॥१॥

जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और महेश को, मृगनयनी कामिनियों के घर का काम-धन्धा करने के लिये दास बना रखा है, जिनके विचित्र चरित्रों का वर्णन वाणी से किया नहीं जा सकता,—उन पुष्पायुध भगवान कामदेव को मेरा नमस्कार है ॥१॥

भगवान कामदेव की विचित्र महिमा का पार नहीं। आपके अजीब-अजीब कामों का बखान जुबान से कौन कर सकता है? यद्यपि आपका शस्त्र फूलों का धनुर्बाण है, तथापि आपने इसी हथियार से त्रिलोक को अपने अधीन कर रखा है। औरों की क्या चलाई, स्वयं जगत्‌के रचने वाले ब्रह्मा, पालनेवाले विष्णु और संहार करने वाले शिवजी तक को आपने बाकी नहीं छोड़ा। इन तीनों देवताओं को भी आपने, घर का काम-धन्धा करने के लिए, कुरंगनयनी सुन्दरी कामिनियों का गुलाम बना दिया है। यद्यपि भगवान कामदेव भगवान विष्णु के पुत्र हैं, पर आप अपने पिता से भी बढ़ गये। "गुरु गुड़ रहे और चेला चीनी हो गये" वाली कहावत आपने चरितार्थ की। आपने स्वयं अपने

पिता पर ही हाथ साफ किये। उन्हें ही अनेक कुएँ झँकवाये। अपने पिता से लक्ष्मी और रुक्मिणी प्रभृति की गुलामी करवा कर भी आपको सन्तोष नहीं हुआ। आपने उन्हें परनारी ब्रजबालाओं तक के प्रेम में पागल सा कर दिया। यहाँ तक कि उनसे मालिन और मनिहारिन तक के स्वाँग भरवाये। एकबार बेचारे को जलन्धर-पत्नी वृन्दा के यहाँ भेष बदल कर जाने तक पर मजबूर किया और शेष में उनका फजीता करवाया। विष्णु के अनेक अवतारों में उनके विविध चरित्रों में स्त्रियों की आज्ञाकारिता और उनके अनुराग-रंग में विभोर होकर साधारण मनुष्य के समान व्यवहार के उल्लेख मिलते हैं। किन-किन का वर्णन यहाँ करें? जब विष्णु का यह हाल है, तो औरों का क्या पूछना!

पूर्ण योगी, श्मशान-वासी शिवजी तक को आपने नहीं छोड़ा। बेचारे को शैलसुता का क्रीतदास बना दिया, यहाँ तक तो खैर थी। आपने एकबार उनकी सारी सुध-बुध हर ली और मोहनी के पीछे इस बुरी तरह दौड़ाया कि, हमसे तो लिखा तक नहीं जाता। एक और मौके पर शिवजी समाधि में लीन थे। वहीं वन में मृत्युलोक-वासिनी चन्द-मृगलोचनी परम सुन्दरी युवतियाँ अपनी रूपच्छटा से वन को प्रकाशमान करती हुई, क्रीड़ा कर रहीं थीं। उनको अपूर्व रूप-लावण्य को देखकर, शिवजी का शांत मन अशांत हो गया—उनके भोगने के लिए मचल पड़ा। शिवजी, सारा शमदम भूल, काम के वश हो, उनके पीछे दौड़े। आप अपनी शक्ति से उन्हें आकाश में ले गये और उनसे भोग-विलास करने लगे। पीछे गिरिजा महारानी को जब आपकी करतूत मालूम हुई तो उन्होंने क्रोध में भर स्त्रियों को तो नीचे पटका और भोले भण्डारी को डाँट-डपट कर कैलाश में लाईं और ऊँच-नीच समझाकर फिर समाधि में लगाया।

कई बार आपने चार मुँह वाले, सृष्टि के रचयिता, ब्रह्मा को भी अपने जाल में फँसा लिया। पढ़ते हैं, विधाता ने एक बार तो अपनी निज पुत्री तकके पीछे दौड़कर अपनी घोर बदनामी कराई। इसके सिवा, एक बार ब्रह्माजी शान्तनु नामक ऋषि के पास किसी काम से गये। उन ऋषि की स्त्री अमोघा

अनुपम सुन्दरी थी, पर थी पतिव्रता। उस समय ऋषि घर पर न थे। अमोघा ने आपके बैठने के लिए एक आसन बिछा दिया और पूछा—"भगवन्, आप किस लिए पधारे हैं ?" विधाता ने कहा—"कुछ जरूरी काम है, पर ऋषि से ही कहूँगा।" ये बातें करते-करते ही आपका मन अमोघा पर मचल गया। आपको कामदेव ने ऐसा व्याकुल किया, आपका—वहीं आसन पर निकल गया। आप शर्मिन्दा होकर चुपचाप चले आये। जरा देर के बाद ही शान्तनु ऋषि भी आ गये। उन्होंने आसन को देखकर सारा हाल पूछा। अमोघा ने सारा वृत्तान्त ज्यों-का-त्यों निवेदन कर दिया। सुनते ही ऋषि बोले—"धन्य कामदेव! तुम्हारी शक्ति-सामर्थ्य की सीमा नहीं, जो तुमने जगत के रचयिता ब्रह्माजी को भी मोहित कर दिया !"

सुरपति और गौतम-नारी अहिल्या की बात को कौन नहीं जानता ? अहिल्या परम सुन्दरी थी। देवराज का मन उस पर चला गया। उन्होंने उससे मिलने के बहुत कुछ दाँव-पेच लगाये, पर वह हाथ न आयी। तब उन्होंने एक दिन तीन-चार बजे रात को वहाँ जाने का विचार स्थिर किया, क्योंकि उस समय ऋषि गंगा स्नान को चले जाते थे। इन्द्र ने चन्द्रमा को साथ लिया, अतः चन्द्रमा ने मुर्गा बनकर द्वार पर कुकड़ूँ-कूँ-कुकड़ूँ कूँ करना आरम्भ किया। ऋषि समझे कि अब रात का अवसान हो चला। वे उठकर नहाने चले गये। देवराज उनका रूप धरकर घर मे घुस गये और बातें बनाकर मनमानी की। इतने मे ऋषि भी स्नान करके आ गये। उन्होने इन्द्र और अहिल्या दोनो को श्राप दिया। अहिल्या पत्थर की हो गई और इन्द्र के शरीर मे भग-ही-भग हो गये।

पुराणों मे ऐसी ऐसी अनेक कथायें भरी पड़ी हैं। हमने, नमूने के तौर पर, तीन-चार यहाँ लिख दी हैं। किसी ने ठीक ही कहा है :—

कामेन विजितो ब्रह्मा कामेन विजितो हरिः।
कामेन विजितः शम्भुः शक्रः कामेन निर्जितः॥

मनमाने नाच नचाये, तब और किसकी कही जाय ? सारांश यह भगवान कामदेव सबसे अधिक बलवान है, इसी से कवि महोदय, सब देवताओं को छोड़ भगवान कामदेव को नमस्कार करते हैं।

पाश्चात्य विद्वानों में से एक गेटे नामक महापुरुष कहते हैं—Cupid even a rogue, and whoever trusts him is deceived. कामदेव सदा छल करता है, जो उसका विश्वास करता है, वह धोखा खाता है। कोई कुछ कहे, हम तो यही कहेंगे कि खूबसूरती में बड़ी क्षमता है। खूबसूरती पुरुष को अपनी ओर उसी तरह खींचती है, जिस तरह चुम्बक पत्थर लोहे को खींचता है। कविवर पोप महोदय ने कहा भी है—"Beauty draws us with a single hair" सुन्दरता एक बाल के द्वारा भी हमको अपनी ओर खींच सकती है। चैनिंग महोदय भी कहते हैं—"Beauty is an all pervading presence" सौन्दर्य की सर्वत्र सत्ता है। मतलब यह है कि पुरुष सौन्दर्य का दास है। जिसमें भी, वकील लावेल महाशय के "Earth's noblest thing, a woman perfected" साध्वी स्त्री संसार का सर्वोत्तम पदार्थ है। अतः ऐसे सर्वोत्तम पदार्थ से प्रेम करना और प्रेमवश उसकी गुलामी करना,कोई बुरी बात भी नहीं है। हाँ, प्रेम-क्षेत्र के बाहर की गुलामी बेशक बुरी है, क्योंकि जे० जी० हालैण्ड महोदय कहते हैं—"Duty, especially out of the domain of love, is the veriest slavery in the world," प्रेम—क्षेत्र के बाहर जो कर्तव्य किये जाते हैं; वे घृणित से घृणित गुलामी से बुरे हैं। तात्पर्य यह है कि, अपनी सती-साध्वी स्त्री या माशूका की गुलामी में दोष नहीं बेशर्ते कि वह सच्ची पतिव्रता हो। सती स्त्री अपनेपति की आज्ञा पालन करके उसे हर तरह से संतुष्ट करके; उस पर अपना प्रभाव—रोब जमा लेती है। लेवर महोदय कहते हैं—"A chaste wife acquires an influence over her husband by obeying him." साध्वी स्त्री अपने पति की आज्ञापालन कर, उस पर अपना प्रभाव जमा लेती है। जब एक, दूसरे की हर तरह खातिर रखता है, उसको प्यार की नजर से देखता हुआ, उसके लिए अपना तन-मन

न्योछावर करता हैं, तो दूसरा ऐसा कौन होगा, जो वदला चुकाने में घाटा रखेगा ? बस, हमारे विष्णु भगवान जो लक्ष्मी के घर का काम-धन्धा करते हैं और शिवजी, गिरिजा रानी की सेवकाई करते हैं, उसमे दोष ही क्या है ? क्योकि लक्ष्मी और पार्वती दोनो ही रूप, यौवन और लावण्य की खान, प्रथम श्रेणी की पतिपरायणा और तन-मन से पति-सेवा करने वाली है। अव रही उनकी वात, जो परसई खूवसूरत रमणियो का दासत्व स्वीकार करते हैं। उनके दासत्व मे सच्चा प्रेम और पवित्रता नही, केवल सौन्दर्य का प्रभाव है। सौंदर्य अपने दर्शको को मदिरा की तरह मतवाला कर देता है और वे उसी नशे के वश हो, अपने होश हवाश खो, अपनी माशूकाओ की गुलामी करने लगते हैं। कामदेव स्त्रियो का चाकर है। वे जिन्हें अपना शिकार चुनती हैं, जिन्हें अपने अधीन करने की आज्ञा देती हैं, वह उन्हीं को अपने पुष्पायुध से कावू मे करके, अपनी स्वामिनियो के हवाले कर देता है। कामदेव ही नही, स्वयं परमात्मा स्त्रियो के इच्छानुसार चलता है। अँग्रेजी मे एक कहावत है—"What woman wills, God wills" जो स्त्री चाहती है, वही परमात्मा चाहता है। स्त्री और परमात्मा की एक ही इच्छा है।

विधि हरि हरहु करत हैं, मृगनैनी की सेव।
वचन अगोचर चरित गति, नमो कुसुमसर देव॥

सार —कामदेव ने त्रिलोकी को स्त्रियों का गुलाम बना रखा है।

1. I bow to that Lord Kamadeva (Cupid) who has flowers for his weapon, whose wonderful actions are beyond the power of speech and by whom Shambhu, the Self-born (Brahma) and Hari have been rendered constant servants of the deer-eyed women to discharge their house-hold duties

स्मितेन भावेन च लज्जया भिया
पराङ्मुखैरर्द्धं कटाक्षवीक्षणैः ।
वचोभिरीर्ष्याकलहेन लीलया
समस्तभावैः खलु बन्धनं स्त्रियः ॥२॥

मन्द-मन्द मुस्कराना, लजाना, भयभीत होना, मुँह फेर लेना, तिरछी नजर से देखना, मीठी-मीठी बातें करना, ईर्ष्या करना, कलह करना, और अनेक तरह के हाव-भाव दिखाना,—ये सब स्त्रियों में, पुरुषों को बन्धन में फँसाने के लिए ही होते हैं; इसमें सन्देह नहीं ॥२॥

स्त्रियों में हाव-भाव या नाज-नखरे स्वभाव से ही पैदा हो जाते हैं। ये हाव-भाव या नाज-नखरे, पुरुषों को मोहित करने या बन्धन में बाँधने के लिए, उनके ब्रह्मास्त्र हैं। पुरुष उनकी रूपच्छटा की अपेक्षा उनके हाव-भावों पर जल्दी मुग्ध होता है। उनके हाव-भाव उसके दिल पर नक्श हो जाते हैं। उन्हें वह दिन-रात याद किया करता है। पुरुष को वशीभूत करने के लिये, स्त्रियाँ उसको देख कर, होठों में हँसती या मुस्कराती हैं; कभी परले सिरे की लाज करती हैं और कभी बेहयाई; कभी किसी डरने का-सा नाटक करती हैं; कभी उसकी ओर नजर भर देखती हैं और कभी मुँह फेर लेती हैं; कभी तिरछी नजर से देखती हैं और कभी उसको अच्छी तरह से देख या घूरकर झट से घूँघट कर लेती हैं; कभी किसी बहाने से घूँघट को हटा कर अपना चन्द्रायन उसे फिर दिखा देती हैं और फिर शीघ्र ही घूँघट कर लेती हैं; कभी चलती-चलती राह में ठहर कर, अपने पैर का जेवर-बिछुआ प्रभृति ठीक करने लगती है। कभी कहती हैं—"तुम उस स्त्री के यहाँ क्यों गये? मैं तुमसे न बोलूँगी।' पुरुष बोलना चाहता है, तो कहती हैं—"वहीं जाओ, मुझसे क्या काम है? वह बड़ी सुन्दरी है, मैं उसके मुकाबिले में किस काम की हूँ?" इत्यादि। पुरुष यदि चूमना चाहता है, तो एक अजीब आन-बान और अदा के साथ उसके मुँह के पास से अपना मुँह हटा लेती हैं। अगर वह स्तनों पर हाथ डालता है, तो

एक अजीब अदा से उसके हाथ को झटक देती हैं, जिससे बुरा भी न मालूम हो और पुरुष उल्टा मर मिटे। अगर पुरुष किसी दूसरे के यहाँ चला जाता है या उससे और कोई अपराध हो जाता है, तो झट आँखो मे आँसू भर लाती हैं। उन आँसुओ मे कामियो को जो मजा * आता है, उसे लिख कर बता नहीं सकते। बातें करती हैं तो निहायत मीठी-मीठी और ऐसी रस-घुली, कि पुरुष उनकी बातों पर ही क़ुर्बान हो जाता है। कहाँ तक लिखें, स्त्रियो मे जवानी के समय अनन्त हाव-भाव आप ही पैदा हो जाते हैं। वे उन्हें कोई सिखाने नहीं जाता। जेवर स्त्रियों के रूप को हजार गुणा बढा देते हैं, तो नखरे उसे लाख गुणा बढा देते हैं।

एक बार इतिहास-प्रसिद्ध लोक-विमोहिनी नूरजहाँ † बचपन मे, अपनी माँ के साथ बादशाही महलो मे गई। उस समय नूरजहाँ का मेहरुन्निसा कहते थे। जहाँगीर ※ भी लडका ही था। उसे उस दिनो सलीम कहते थे। सलीम को कबूतर उड़ाने का शौक था। शाहजादे के हाथ मे दो कबूतर थे। वह उन्हें किसी को पकडा, और कबूतर दरबे से निकालना चाहता था। पास ही मेहर खडी थी। शाहशादे ने कहा—"मेहर! जरा हमारे कबूतरो को तो अपने हाथों मे पकड़े रहो।" मेहर ने कहा—'बहुत अच्छा, लाइये।" शाहजादे ने मेहर को कबूतर थमा दिये और आप आगे दरबे की ओर चला गया। इतने मे एक कबूतर किसी तरह मेहरुन्निसा के हाथ से उड गया। शाहजादे ने आकर पूछा-"हमारा एक कबूतर कहाँ गया? मेहर ने कहा—"वह तो उड गया।" शाहजादे ने पूछा—"कैसे उड गया?" मेहर ने उस समय भोली-भाली, पर एक अजीव अदा के साथ हाथ का दूसरा कबूतर भी छोड़ते हुए कहा—

*"Beauty's tears are lovelier than her smiles"—Compbel.
सुन्दरी के आँसू उसकी मुस्कान की अपेक्षा प्यारे लगते है।

† नूरजहाँ—(शब्दार्थ) संसार को प्रकाशित करने वाली ज्योति। मुगल-सम्राट जहाँगीर की मशहूर बेगम का नाम है।

"शाहजादे ! ऐसे उड़ गया ! "शाहजादे का दिल आज के पहले मेहरुन्निसा पर नहीं था, पर इस वक्त एक अदा ने शाहजादे को मेहरुन्निसा का गुलाम बना दिया। आज-पीछे वह मेहर को जन्म-भर न भूला। उसने मेहरुन्निसा को अपनी बीवी बनाने के लिए बड़ी कोशिशें कीं, पर उसे कामयाबी न हुई; क्योंकि बादशाह एक मामूली सरदार की लकड़ी से हिन्दुस्तान के शाहजादे की शादी करना उचित न समझते थे। उन्होंने झगड़ा मिटाने को मेहर की शादी शेर अफगन के साथ कर दी। सलीम का वश न चला; पर वह मेहर को भूला नहीं। जब वह तख्तेशाही पर बैठा, उसने मेहर को बंगाल से मँगवाकर, उसके कोमल कदमों में अपना शाही ताज रख दिया और सदा को उसका गुलाम होना कबूल किया। देखा पाठक ! स्त्री के एक नखरे ने क्या काम किया ?

हम स्त्रियों के हाव-भाव और नाजो-अदाओं पर मर मिटने वालों के चन्द नमूने नीचे देते हैं। उस्ताद जौक फरमाते हैं :—

मैं तो उसी झिचक पै फिदा हूँ कि कान को।
शब क्या हटा लिया, मेरे लाकर दहन के पास॥

मुझे उनका वह हाव कितना अच्छा मालूम हुआ कि, उन्होंने अपने कान को मेरे मुँह के पास लाकर हटा लिया। इस अदा पर मैं फिदा हो गया।

जौक का ही एक और शेर है :—

ऐ जौक, मैं तो बैठ गया, दिल को थामकर।
इस नाज से खड़े थे वह, रक्खे कमर पे हाथ॥

किस अन्दाज से वह कमर पर हाथ रखे खड़े थे ! मैं तो उन्हें देखकर दिल थाम कर बैठ गया, नहीं तो दिल चला ही था !

महाकवि नजीर ने नाजनियों की चुलबुलाहट का, सीधी सादी भाषा में, कैसा चटकीला चित्र खींचा है ! जरा उसकी भी चाशनी देखिये—

ये राह चलने की चुलबुलाहट,
कि दिल कहीं है, नजर कहीं;

कहाँ का ऊँचा, कहाँ का नीचा,
खयाल किसको, कदम की जा का ॥
लडाये आँखे वो बेहिजाबी
कि फिर पलक से पलक न मारे ॥
नजर जो नीचे करे तो गोया,
खुला सरापा चमन हया का ।
ये चञ्चलाहट, ये बुलबुलाहट,
खबर न सर की, न तन की सुध-बुध ।
जो चीरा बिखरा, बला से बिखरा,
न बन्द बाँधा, कभू कबा का ।

मैंने एक छोटी उम्र की नाजनी देखी । वह अपनी राह-राह चली जाती थी, पर उसके चलने मे गजब की चुलबुलाहट थी । उसका दिल कही था और उसकी आँखें कही थी । उसे ऊँचे-नीचे स्थानो तक का ख्याल न था । यह भी ध्यान नही था कि पैर कहाँ पडते हैं ।

वह बेहया जब आँखें लडाती थी, तो इस तरह लड़ाती थी कि पलक से पलक न लगाती थी और अगर नजर को नीची करती थी, तो ऐसा मालूम होता था, मानो हया और शरम का चमन ही खुल गया है ।

उसमें ऐसी चचलता और चुलबुलाहट थी, कि न उसे अपने सर की खबर थी और न शरीर की सुध-बुध थी । सिर से ओढनी उतर गई है तो उतर गई, परवाह नहीं । कुरती का बन्द खुला पडा है, तो खुला ही पडा है । *

---

* यो चञ्चलता और चुलबुलाहट उठती जवानी की सभी स्त्रियो मे होती है, पर ऐसी चुलबुलाहट, जिसका मजेदार चित्र मियाँ नजीर ने खीचा है, कुल-वधुओ मे नही देखी जाती और वह भी राह में । हाँ, ऐसी चुलबुलाहट कुल-वधुओ में भी देखी जाती है, पर शादी हो जाने के दो-चार वर्ष बाद अपने घर में—अपने पति के सामने, जब कि उनकी लज्जा-शर्म और सकोच भय प्रभृति दूर हो जाते हैं । हमारी समझ मे यह चित्र किसी कमसिन वारागना का है ।

रस में त्यों ही रोष में, दरसत सहज अनूप
बोलनि चलनि चितौनि में, वनिता बन्धन-रूप ॥२॥

सार-स्त्री हर हालत में मर्द को प्यारी लगती है। उसका बोलना चालना और देखना प्रभृति प्रत्येक काम पुरुष को बन्धन में बाँधताहै।

2. Gentle smile, emotionss, bashfulnes, timidity, the turning of face, the side-long casting of glances, speech, jealousy, quarrel and gesture (—these) are the various qualities by which the women become the chains for men,

●

भ्रूचातुर्यात्कुञ्चिताक्षाः कटाक्षाः
स्निग्धा वाचो लज्जिताश्चैव हासाः ।
लीलामन्दं च स्थितं प्रहसितं च
स्त्रीणामेतद् भूषणं चायुधं च ॥३॥

चतुराई से भौंहें फेरना, आधी आँख से कटाक्ष करना, मधु जैसी मीठी-मीठी बातें करना, लज्जा के साथ मुस्कराना, लीला से मन्द-मन्द चलना, और ठहर जाना प्रभृति भाव स्त्रियों के आभूषण और शस्त्र हैं ॥३॥

स्त्रियाँ कभी अपनी कमानी-सी भौंहों को टेढ़ी करती हैं, कभी आँखें चलाती हैं, कभी लज्जा का भाव दिखाती हुई मन्द-मन्द मुस्कराती हैं, कभी शरीर तोड़ती हैं, कभी अँगड़ाई लेती हैं, कभी ऊँगलियाँ चटखाती हैं, कभी उझक-उझक कर देखती हैं, और कभी मुँह फेर कर दूसरी ओर देखने लगतीहैं, जिससे पुरुष समझे कि यह मेरी ओर नहीं देखती। कभी घूँघट मार लेती हैं और कभी उसे खोल देती हैं। स्त्रियाँ ये सब क्यों करती हैं ? केवल अपना सौन्दर्य बढ़ाने और पुरुषों को अपने ऊपर फ़िदा करके, उनसे मनमाने नाच नचवाने के लिए। पुरुषों को अपने अधीन करने केलिए अबलाओं के पास तल

वार, बन्दूक या बाण नही होते । उनको ईश्वर ने ये ही अमोघ अस्त्र दिये हैं। बन्दूक, तलवार और मशीनगन जो काम नही कर सकतीं, वह काम ये अस्त्र करते हैं । किसी से भी पराजित न होने वाले और बडे बडे शूरवीर योद्धाओ को वात-की-वात मे धराशायी करने वाले वहादुर, स्त्रियो के शस्त्र की मार से, अपने होश-हवाश खोकर, उनके दास वन जाते है !

करत चातुरी भौंह, नयनहू नचत चितैवो ।
प्रगटत चित को चाव, चावसो मृदु मुसकैवो ।
दुरत मुरत सकुचात, गात अरसात जम्हावत ।
उझकत इत उत देख, चलत ठिठकत छवि छावत ।
ये आभूषण तियन के, अंग माहि शोभा धरन ।
अरु ये ही अस्त्र समान है, पुरुष-मन-मृग वस करन ॥३॥

सार—स्त्रियो के हाव-भाव, पुरुषो को मारने के लिए अस्त्र और उनका सौन्दर्य वढाने के लिए आभूषण हैं ।

3 The skifulness -- in turning the brows, the casting of oblique glances, sweet talk, smiling with shyness, walking slowly by gestures and stopping at intervals (these) are the ornaments as well as the weapons for women.

●

क्वचित्सुभ्रूभंगैः क्वचिदपि च लज्जापरिणतैः
क्वचिद्भीतित्रस्तैः क्वचिदपि च लीलाविलसितैः ।
नवोढानामेतैर्वदनकमलैर्नेत्रचलितैः
स्फुरन्नीलाब्जानां प्रकरपरिपूर्णा इव दिशः ॥४॥

कामी पुरुषो को, कभी सुन्दर भौंहो से कटाक्ष करने वाली, कभी शर्म से सिर नीचा करलेने वाली, कभी भय से भीत होने वाली, कभी लीलामय विलास करनेवाली, नवीन व्याही हुई कामिनियो के

मुखकमलों की खूबसूरती बढ़ाने वाले नील कमलों के समान चञ्चल नेत्रों से दशों दिशायें पूर्ण दीखती हैं ॥४॥

हाल की ब्याही हुई नववधुओं में कमान-सी भौंहों से कटाक्ष करना, कभी लाज के मारे सिर नीचा कर लेना, कभी भय से भीत होना, कभी अन्य प्रकार के नखरे करना—ये सब स्वभाव से ही होते हैं। प्रथम तो इस उम्र में सुन्दरता आप ही बढ़ जाती है, फिर उनके नखरे और नीलकमल-से चंचल नेत्र उनकी खूबसूरती को और बढ़ा देते हैं। कामी पुरुषों को, जिनके मन में इनके चंचल नेत्र अपना घर कर लेते हैं, हर ओर इनके चंचल नेत्र ही नेत्र दिखाई देते हैं; यानी उनका मन इनके नीलकमलवत् नेत्रों में ही जा बसता है। जिसमें जिसका दिल जा बसता है, उसे वही-वह दीखता है। चूँकि कामियों की आँखों में कमसिन अल्पवयस्का, नवविवाहिता कामिनियाँ समा जाती हैं,अतः उन्हें हर ओर,जहाँ तक उनकी दृष्टि जाती है, वही-वह दिखाई देती हैं।

किसी ऐसी ही उठती जवानी की कम-उम्र परी की खूबसूरती का चित्र महाकवि नजीर ने क्या ही कारीगरी से खींचा है :—

पलकों की झपक, पुतली की फिरत, सुरमे की लगावट वैसी ही।
ऐयार नजर, मक्कार अदा, त्योरी की चढ़ावट वैसी ही ॥१॥
वह अँखियाँ मस्त नशीली-सी कुछ काली-सी, कुछ पीली-सी।
चितवन की दगा, नजरों की कपट, सीनों की लगावट वैसी ही ॥२॥
वह रात अँधेरी बालों-सी, वह मांग चमकती बिजली-सी।
जुल्फों की खुलत, पट्टी की जमत, चोटी की गुँधावट वैसी ही ॥३॥
वह छोटी—छोटी सख्त कुचें, वह कच्चे-कच्चे सेव गजब।
अँगिया की भड़क, गोटों की चमक, बन्दों की कसावट वैसी ही ॥४॥
वह चञ्चल चाल जवानी की, ऊँची एँडी नीचे पञ्जे।
कफशों की खटक दामन की झटक, ठोकर की लगावट वैसी ही ॥५॥
कुछ हाथ हिलें, कुछ पाँव हिलें, फड़कें बाजू थिरके सब तन।
गाली वो बला, ताली वो सितम, उँगली की नचावट वैसी ही ॥६॥

चञ्चल अचपल, मटके-चटके सर खोले-ढाँके हँस—हँस के।
कह-कह की हँसावट और गजब, ठठ्ठों की उडावट वैसी ही ॥७॥
हर वक्त फबन, हर आन सजै, दम-दम मे बदलें साख सजे।
बाहों की झपट, घू घट की अदा, जीवन की दिखावट वैसी ही ॥८॥

पाठक! मनचले पाठक! आप ही विचारिये, इन आन-बान और खूबसूरतीवाली को कौन भूल सकता है? जो इन स्त्री-रत्नों की कद्र जाननेवाले हैं, उनकी नज़रो से इनके नीलकमल की आभा रखने वाले नीलम-से नेत्र कभी उतर ही नही सकते। उन्हें तो हर ओर नीलम या नीलकमल ही नीलकमल फूले दीखते हैं और वे मन-ही-मन उनकी अनुपम छटा को याद कर-करके प्रसन्न होते हैं।

कवहु भौंह को भग, कवहु लज्जायुत दरसत।
कवहुक ससकत संकि, कवहु लीलारस वरसत।
कबहुक मुख मृदुहास, कबहु हित वचन उचारत।
कवहुक लोचन फेर, चपल चहु ओर निहारत।
छिन-छिन सुचरित्र विचित्र करि, भरे कमल जिमि दशहु दिशि।
ऐसी अनूप नारी निरखि, हरषत रखिये दिवस—निशि ॥४॥

सार—जिस तरह ब्रह्मज्ञानियो को हर ओर ब्रह्म-ही-ब्रह्म दीखता है, उसी तरह कामियो को हर ओर नवबधुओ के नील-कमल के समान चञ्चल नेत्र-ही-नेत्र दीखते हैं। जिसकी आँखो मे जो समा जाता है, उसे वही-वह दीखता है।

4. What with the turning of her beautiful brows, what with her gentle bashfulness, what with her fearfulness and what with her playful gestures, the face of a young woman, having moving eyes with all the above qualifications, appears like a lotus (with black bees hovering on it).

वक्त्रं चन्द्रवि ासि पंकजपरीहासक्षमे लोचने
वर्णः स्वर्णमपाकरिष्णुरलिनीजिष्णुः कचानाञ्चयः।
वक्षोजाविभकुम्भसंभ्रमहरौ गुर्वी नितम्बस्थली
वाचो हारि च मार्द्दवं युवतिषु स्वाभाविकं मंडनम् ॥५॥

चन्द्रमा के समान प्रकाशमान मुख, कमल की मसखरी करने वाले दोनों नेत्र, सुवर्ण की दमक को फीकी करनेवाली शरीर की कान्ति, भौरों के पुन्ज को जीतनेवाले केश, गजराज के गण्डस्थल की शोभा का अपमान करनेवाली दोनों छातियाँ, विशाल नितम्व(चूतड़), मनोहर वाणी और कोमलता-नजाकत-ये सब स्त्रियों के स्वाभाविक भूषण हैं ॥५॥

खुलासा—चन्द्रमा के समान मुख, कमल को लजानेवाले नेत्र, कनक की आभा को मलीन करनेवाली देह की कान्ति, भौंरों की पंक्तियों को पराजित करनेवाली पलकें, गजराज के गण्डस्थलों को लजानेवाले स्तनद्वय, फूलों की कोमलता को मात करने वाली नजाकत, मृगमद को नीचा दिखाने वाली मुख की सुवास—ये सब स्त्रियों के स्वाभाविक आभूषण या कुदरती जेवर हैं। तात्पर्य यह है, कि स्त्रियाँ स्वभाव से ही वड़ी सुन्दर होती हैं। इनकी असाधारण सुन्दरता और अनूप रूप पर किसका मन लहालोट नहीं हो जाता? इनकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर ही लोग क्रीतदास हो जाते और दुःख-सुख की परवाह न कर, रात-दिन इनके लिए परिश्रम करते हैं।

करत चन्द्र इव विशद वदन, अद्भुत छवि छाजत।
क्मलन विहँसित नैन, रैन-दिन प्रफुलित राजत।
करत कनक द्युतिहीन, अंग आभा अति उमगत।
अलकन जीते भौंर, कुचन करि कुम्भ किये हत।
मृदुता मरोर मारे सुमन, मुख-सुवास मृगमद कदन।
ऐसी अनूप तिय-रूप लखि, छाँहधूप नहीं गिनत मन ॥५॥

सार—नाना प्रकार के हाव-भाव स्त्रियों के नाना प्रकार के

अस्त्र है। इनसे ही वे पुरुषो को अपने वश मे करती और उन्हे गुलाम बनाती हैं।

5. The natural ornaments of a women are her faces which puts to shame even the moon, her eyes which laugh at the lotuses, the colour of her body which dims even the lustre of gold, her hair which surpassess in beauty the swarm of bees, her breast that outstrips the beauty of the forehead of an elephant, the two big hips and the sweet voice which attracts the mind.

●

स्मितं किञ्चिद्वक्त्रे सरलतरलो दृष्टिविभवः
परिष्यन्दो वाचामभिनवविलासोक्तिसरसः ।
गतीनामारम्भः किसलयितलीलापरिकरः
स्पृशन्त्यास्तारुण्यं किमिह न हि रम्यं मृगदृशः ॥६॥

उठती जवानी की मृगनयनी सुन्दरियो के कौन काम मनोमुग्धकर नही होते ? उनका मन्द-मन्द मुस्कराना, स्वाभाविक चञ्चल कटाक्ष, नवीन भोग-विलास की उक्ति से रसीली बाते करना और नखरे के साथ मन्द-मन्द चलना—ये सभी हाव-भाव कामियो के मन को शीघ्र ही वश मे कर लेते हैं ॥६॥

जवानी में कदम रखने वाली, उठती जवानी की मृगनयनी सुन्दरियो का धीरे-धीरे हँसना, स्वभाव से चचल नेत्र चलना, मीठी-मीठी रसीली बातें करना और नखरे एवं अजीब नाजोअदा के साथ धीरे-धीरे कदम रखकर चलना ये हाव-भाव कामी पुरुषो के होश-हवास खता कर, उनको इनका गुलाम बना देते हैं, अर्थात् कामी पुरुष स्त्रियों के इन हाव-भाव और नाजो-अदाओ को देख-देखकर, अपनी सुध-बुध खो, पागल से हो जाते और इनकी इन अदाओ पर न्योछावर होकर, सदा को इसके क्रीत-दास हो जाते हैं।

मन्द हसन तीखे नयन, सरल बचन सविलास।
गजगमनी रमणी निरख, को न करे अभिलाष ॥६॥

सार—नवीना युवतियों के हृदयहारी हाव-भावों पर न मर मिटनेवाला पुरुष कोई विरली ही महतारी जनती है।

6. Is not everything charming in a lotus-eyed women just verging on her youth ? Say, the gentle smile on her face, the casting of her restless eyes, talking sweetly in different new charming modes, walking by gestures and with slow steps like that of new leaves.

●

द्रष्टव्येषु किमुत्तमं मृगदृशां प्रेयप्रसन्नं मुखम्
घ्रातव्येष्वपि किं तदास्यपवनः श्राव्येषु किं तद्वच ।
किं स्वाद्येषु तदोष्ठपल्लवरसः स्पृश्येषु किं तत्तनु-
र्ध्येयं किं नवयौवनं सहृदयैः सर्वत्र तद्विभ्रमः ॥७॥

रसिकों के देखने योग्य क्या है ? मृगनयनी कामिनियों का प्रेम पूर्ण प्रसन्न मुख। सूँघने योग्य क्या है ? उनके मुँह की भाप। सुनने योग्य क्या है ? उनके वचन। स्वादिष्ट पदार्थ क्या है ? उनके ओष्ठ-पल्लव का रस। छूने योग्य क्या है ? उनका कोमल शरीर। ध्यान करने योग्य क्या है ? उनका नवयौवन और विलास ॥७॥

मनुष्य के पाँच इन्द्रियाँ होती हैं :—(१) आँख, (२) नाक, (३) कान (४) जीभ और (५) त्वचा। आँख का काम देखना, नाक का सूँघना, कान का सुनना, जीभ का चखना और त्वचा का स्पर्श करना है। आँख रूप देखना चाहती है, नाक सुगन्धित पदार्थ सूँघना, कान रसीली बातें सुनना, जीभ सुस्वादु पदार्थ चखना और त्वचा कोमल वस्तु छूना चाहती है। कामी पुरुषों को पाँचों इन्द्रियों की सन्तुष्टि के लिए भगवान ने एक सुन्दर नारी ही पैदा कर

दी है। मतलब यह कि, रसिको की पाचो ज्ञानेन्द्रियों की सतुष्टि के समान एक कामिनी मे ही मोजूद हैं। मृगनयनियो के सुन्दर मुख आंखो के देखने के लिए हैं। उनके मुंह की सुगन्धित भाप नाक के सूंघने के लिये हैं। उनके मिश्री से मीठे और मधुर वचन कानो के सुनने के लिये हैं। उनके निचले होठ का अमृत-समान स्वादिष्ट रस जीभ के चखने के लिए है और चमड़े का छूकर सुखी होने के लिए उनका मखमल से भी कोमल शरीर या उनके पैरो के तलवे हैं तथा ध्यान करने के लिए उनकी जवानी और उनकी नाज़ोअदा हैं। साराश यह, कि सारे सुख एक सुन्दरी ही मे मौजूद हैं।

अगर कोई यह कहे कि नही जी, यह सब कवियो की लीला—उनके वढावे हैं, तो हम यही कहेंगे कि आप उनसे पूछिये, जिन्होने इन सबका आनन्द अनुभव किया या इनका मजा उठाया है। जिसने स्त्रियों का चन्द्रमा के समान प्रेमरस से पूर्ण मुख देखा है, वही कह सकता है कि उनका मुख देखने से रूप देखने की इच्छुक नेत्र-इन्द्रिय की तृप्ति होती है या नही। जिसने मृगमद—कस्तूरी को भी मात करने वाली उनके मुख की सुगन्ध का मजा लिया है, वही कह सकता है कि उस सुगन्ध से वढकर और भी कोई सुगन्ध नासिका की तृप्ति करने वाली है या नहीं। जिसने उनके मखमल की सी नरमी को मात करने वाले शरीर या पैरो के तलवो पर हाथ फेरे हैं, वही कह सकता है कि यह वात कहाँ तक सच है। जिसने उनकी मधुर और रसीली एव कानो में अमृत ढालने वाली वातें सुनी हैं, वही कह सकता है कि उनकी मीठी-मीठी वातो मे क्या मजा है। जिसने उनके रूप, यौवन और हाव-भाव तथा विलास का ध्यान किया है, वही कह सकता है कि उनके ध्यान मे कैसा आनन्द है। जिसने ब्रह्म का ध्यान किया है, वही कह सकता है कि ब्रह्म के ध्यान मे वह आनन्द है, जिसकी समता त्रिलोकी के और किसी आनन्द मे नहीं है। जिसने ब्रह्म का ध्यान ही नही किया, वह ब्रह्मानन्द के वर्णनातीत आनन्द की वात को क्या जाने ? जिसने अनुपम सुन्दरी मृगनयनी के होठों से होठ लगाकर आनन्द पिया है, वही कह सकता है कि सुन्दरी के निचले होठ मे अमृत है या नही

महाकवि नजीर कहते हैं और ठीक ही कहते हैं—

सागिर के लव से पूछिये इस लव की लज्जतें।
किस वास्ते, कि खूब समझता है लव की शव॥

उसके ओठों का स्वाद प्याले के ओठों से पूछिये; क्योंकि ओठों की बात ओठ ही समझता है।

कहा देखिये योग्य? प्रिया को अति प्रसन्न मुख।
कहा सूँघिये सोधि? श्वास सौगन्धि हरत दुख।
कहा दीजिये कान? प्राणप्यारी की बातन।
कहा लीजिये स्वाद? अधर के अमृत अधरतन।
परसिये कहा? ताको सुवपु, ध्यान कहा? जोवन सुछवि।
सब भाँति सकल सुख को सदन, जान, सुयश गावत सुकवि॥७॥

सार—एक सुन्दरी कामिनी में पुरुष की सारी इन्द्रियों की तृप्ति का मसाला है।

7. For lovers what is the best sight worth seeing? The lovely and beautiful face of a lotus-eyed woman. What is the best thing worth smelling? The vapour of her mouth. What is the best thing for hearing? Her sweet voice. What object has the best taste? The enjoyment of her leaf like lips. What is the best among the objects of touch? Her body. And what is the best thing for mediation? Her youth and the pleasure arising from it.

●

एताः स्खलद्वलयसंहतिमेखलोत्थ-
झङ्कारनपुरवाहत राजहंस्साः।

कुर्वन्ति कस्य न मनो विवश तरुण्यो
वित्रस्तमुग्धहरिणीसदृशैः कटाक्षैः ॥८॥

चञ्चल कङ्कन, ढीली कोंधनी और पायजेवो के घुँघरुओ की मधुर झंकार से राजहसो को शरमाने वाली नवयुवती सुन्दरियाँ, भयभीत हिरनी के समान कटाक्ष करके, किसके मन को विवश नही कर देती ॥८॥

कर्धनी और पायजेव प्रभृति अलकारों के मधुर-मधुर शब्दो से राजहसनियो का निरादर करने वाली नवयुवतियाँ, जब भडकी हुई भोली हिरनी की तरह अपनी तीखी नजर का तीर चलाती हैं, तब वडे-वडे वहादुर इनके वशीभूत होकर, उनकी गुलामी करने लगते हैं। मनुष्य तो कौन चीज है, देवता तक ऐसी कामिनियो के कटाक्ष-वाणो से पराजित हो जाते हैं। अब इनकी निगाह के तेज तीर से जो परास्त न हो, अपनी रक्षा कर ले, उसे हम क्या कहें, सो हमारी समझ मे नही आता। भोले-भाले पाठक! इनकी कटाक्षो की मार को मामूली मार न समझें। महाकवि दाग कहते हैं और ठीक ही कहते है—

तार तेरा मिजगाँ से वढकर नही।
कुछ खटकते हैं, इसी नश्तर से हम ॥

तेरी भौंहो में जो काट है, वह तेरे तीर में नहीं। इसीलिए मुझे तीर से तेरे भौह-रूप नश्तर का हर समय खटका लगा रहता है। मतलब यह कि तीर की मार का इलाज है; पर कामिनी के कटाक्ष-वाण का इलाज नही।

नूपुर ककन किंकिनी, बोलत अमृत-बैन।
काको मन नहिं वस करत मृगनैनिन के नैन ॥८॥

सार—नाजनियो के तीरे-निगाह से न घायल होने वाला करोडो मे कोई एक होता हो, तो होता हो!

8. Which mind is there that does not go out of control by the casting of the eyes like that of a frightened

hind of the young woman, the sounds of whose restless bracelets and the waist-chain and the tinklings of whose anklets defeat the sweet sound of swans even,

कुङ्कुमपङ्ककलङ्कितदेहा   गौरपयोधरकम्पितहारा
नूपुरहंसरणत्पदपद्मा कं न वशीकुरुते भुवि रामा ॥९॥

जिसकी देह पर केशर लगी है, जिसके गोरे-गोरे स्तनों पर हार झूल रहा है और नूपुररूपी हंस जिसके चरणकमलों में मधुर-मधुर शब्द कर रहे हैं—ऐसी सुन्दरी इस पृथ्वी पर किसके मन वश में नहीं कर लेती ॥९॥

खुलासा—जिसकी देह पर केसर लगी है, जिसके सघन पीन-पयोधरों पर मोतियों का हार धीरे-धीरे हिल रहा है, जिसके कमल जैसे चरणों से वाजे की मधुर-मधुर झंकार निकल रही है, वह सुन्दरी इस जगत में किसी को भी अपने अधीन किये बिना नहीं छोड़ती। जो उसकी नजरों तले आता है, वही उसका गुलाम हो जाता है। परन्तु जो पुरुष ऐसी मनमोहनी नारी के वश में नहीं होता, उसके रूप-लावण्य और नाजो-अदा पर नहीं मर मिटता, वह सच्चा शूरवीर और मोक्ष का अधिकारी है।

हार हलें कुच कनक लग, केसर-रंजित देह।
नूपूर-ध्वनि पदकमल की, केहि न करें वश येह ॥९॥

सार—जिनके गोरे-गोरे बदन पर केशर लगा है, जिनकी नारंगियों-सी सुगोल छातियों पर मोतियों के हार हिल रहे हैं और जिनके चरणकमलों की पायज़ेबों से छमा-छम की मीठी-मीठी मनोहारिणी आवाजें आती हैं, वे मृगनयनी किसे अपने वश में नहीं कर लेतीं ?

9. Whose minds are not overpowered on this earth by such beautiful woman, whose body is decorated by

जिसके गोरे-गोरे स्तनो पर मोतियो के हार झूल रहे है, नूपुर-रूपी हंस जिसके चरण-कमलो मे मधुर-मधुर शब्द कर रहे हैं—ऐसी मनोमोहिनी, काम-मद से मतवाली नारी किसका मन वश मे नही कर लेती।

saffron and sandal and on whose white breasts garlands are hung and in whose lotus-like feet anklets sound like swans ?

नूनं हि ते कविवरा विपरीतबोधा
ये नित्यमाहुरबला इति कामिनीनाम् ।
याभिर्विलोलतरतारकदृष्टिपातैः
शक्रादयोऽपि विजितास्त्वबलाः कथं ताः ॥१०॥

स्त्रियो को 'अबला' कहने वाले श्रेष्ठ कवियो की बुद्धि निश्चय ही उल्टी है। भला जो अपने नेत्रों के चंचल कटाक्षो से महाबली इन्द्रादिक देवताओ को भी मार लेती हैं, वे 'अबला' किस तरह हो सकती हैं ॥१०॥

जो कोमलाङ्गी कामिनियाँ, बिना किसी अस्त्र-शस्त्र के अपनी दृष्टिमात्र से, जगत-विजयी योद्धाओ की तो बात ही क्या है, त्रिलोकी का पलक मारते सहार कर डालने की शक्ति रखने वाले शकर महाबली और इन्द्रादिक देवताओं को भी अपने वश मे करके, मनमाने नाच नचाने की शक्ति रखती हैं, और उन्हे अपने इशारे पर नचाती हैं, उन्हे अबला कहने वाले कवि निश्चय ही पागल हैं—उनकी मति मारी गई है। सबलाओ को अबला कहने वाले यदि मूर्ख नहीं, तो क्या अक्लमन्द हैं ?

कामिनि को अबला कहत, ते नर मूढ अचेत ।
इन्द्रादिक जीते दृगन, सो अबला केहि हेत ॥१०॥

सार—स्त्रियाँ अपनी एक नज़र से भूतल के ज़बर्दस्त-से ज़बर्दस्त योद्धा को पराजित कर सकती है, इसलिए उन्हे 'अबला' कहना भूल है।

10. Those great poets who have called women powerless, have surely thought just in the opposite way. How

can they be said to be so whose casting of the moving eye-lids subdues even Indra and others ?

●

नूनमाज्ञाकरतस्याः सुभ्रुवो मकरध्वजः ।
यतस्तन्नेत्रसंचारसूचितेषु प्रवर्त्तते ॥११॥

कामदेव निश्चय ही सुन्दर भौंह वाली स्त्रियों की आज्ञा का पालन करने वाला चाकर है; क्योंकि जिन पर उनके कटाक्ष पड़ते हैं, उन्हीं को वह जा दबाता है।

खुलासा—निस्सन्देह, कामदेव सुन्दर भौंह वाली स्त्रियों की आज्ञा के वशवर्त्ती होकर चलने वाला सेवक है। वह उनके इशारों पर चलता है जिसकी ओर वेचैन कर देती हैं, वह उन्हीं को जा मारता है। अव्वल तो स्त्रियाँ स्वयं ही वलवती होतीं हैं। अपने ही कटाक्षों से बड़े-बड़े शूरवीर के छक्के छुड़ा सकती हैं; फिर कामदेव उनके हुक्म में है, यह और भी गजब की बात है। ऐसी स्त्रियों से कौन अपनी रक्षा कर सकता है ? केवल वही उनसे बच कर रह सकता है, जो उनके दृष्टिपथ में न आये। शायद इसीलिए, मोक्ष कामी पुरुष, मनुष्यों की वस्तियों को छोड़कर, निर्जन वनों में जाकर, आत्मोद्धार की चेष्टा करते हैं; क्योंकि वन में न कामिनी होंगी और न वे अपने सेवक कामदेव को पंचशर चलाकर अपना शिकार मारने का हुक्म देंगी। इस तरह, कामिनी की पहुंच से दूर निवास करने में ही वे कल्याण देखते हैं।

कामिनी हुक्मी काम यह, नैन सैन प्रगटात ।
तीन लोक जीत्यौ मदन, ताहि करत निज हात ॥११॥

सार—कामदेव स्त्रियों का सेवक है।

11. Surely Kamdev (Cupid) is the obedient servant of women, because he at once overpowers that man who is made

केशा संयमिनः श्रुतेरपि परं पारङ्गते लोचने
चान्तर्वक्त्रमपि स्वभावशुचिभिः कीर्णं द्विजानां गणैः।
मुक्तानां सतताधिवासरुचिरं वक्षोजकुम्भद्वयं
चेत्थं तन्विवपुः प्रशान्तमपि ते क्षोभं करोत्येव नः ॥१२॥

हे कृशाङ्गि ! ऐ नाजनी ! तेरे बाल साफ-सुथरे और सँवारे हुए है, तेरी आँखे बडी-बडी और कानो तक है, तेरा मुख स्वभाव से ही स्वच्छ और सफेद दन्तपक्ति से शोभायमान है, तेरे कुचो पर मोतियो के हार झूल रहे है, पर तेरा ऐसा शीतल और शान्तिमय शरीर भी मेरे मन में तो विकार ही उत्पन्न करता है, यह अचम्भे की बात है ॥१२॥

इस श्लोक मे जो "सयमिन, श्रुतिरेपि, द्विजाना और मुक्ताना" शब्द आये हैं, उनके दो-दो अर्थ हैं। उनके इस्तेमाल से कवि महोदय ने अपूर्व चमत्कार दिखाया है। इसी से इस श्लोक के दो अर्थ हो गये हैं। एक अर्थ ऊपर लिखा ही है और दूसरा नीचे लिखते हैं, पर पहले उन शब्दों के दो-दो अर्थ बता देना हम उचित समझते हैं . सयमिन—सँवारे हुए और जितेन्द्रिय। श्रुतेरपि-कानो तक पहुचे और वेद-शास्त्र-पारगत, काननचारी और वनचारी। द्विजानां-दाँत और ब्राह्मण। मुक्ताना—मोती और मुक्त पुरुष।

दूसरा अर्थ—हे कृशागि ! ऐ नाजनी ! तेरे बाल जितेन्द्रिय हैं; तेरे नेत्र वेद-शास्त्र-पारगत और काननचारी हैं, अर्थात् अपनी आँखो से तुमने श्रुतियो को खूब देखा है; तेरा मुख पवित्र है और उसमें ब्राह्मणों का निवास है, तेरी छातियो पर मुक्त पुरुषों का निवास है, इसलिये तेरा शरीर सतोगुण का धाम है, अत. उसे शीतल और शान्तिमय होना चाहिये; पर है उल्टी बात। तेरे सतोगुणी शरीर से मुझे शान्ति मिलनी चाहिये, पर उससे मेरे मन मे उल्टा अशान्ति या क्षोभ अथवा अनुराग उत्पन्न होता है, यह आश्चर्य की बात है।

संयम राखत केश, नयननहूँ काननचारी।
मुख माँहि पवित्र रहत, द्विजगन सुखकारी।

उर पर मुक्ताहार, रहत निशिदिन छवि छायो ।
आनन चन्द-उजास, रूप उज्ज्वल दरसायो ।
तव तन तरुनी ! मृदुल अति, चलत चाल धीरज-सहित ।
सब भाँति सतोगुण को सदन, तऊ करत अनुराग चित्त ॥१२॥

नोट—इस कविता से भी दूसरा अर्थ साफ समझ में आता है। तेरे बाल संयमी हैं, नेत्र काननचारी हैं, मुख में पवित्र सुखकारी ब्राह्मणों का निवास है, छातियों पर मुक्त पुरुषों का वास है, मुख चन्द्रमा के समान है, शरीर नाजुक है, तू धीमी धीमी चाल चलती है—इन सब लक्षणों से तेरा शरीर सतोगुण का घर है सतोगुणी शरीर से विकार या क्षोभ उत्पन्न हो नहीं सकता; फिर भी, तेरा शरीर अनुराग पैदा करता है, यह अचम्भे की ही बात है।

सार—स्त्री का शरीर, सब तरह से सतोगुणी, शीतल और शान्तिमय होने पर भी, पुरुष के मन में क्षोभ ही करता है।

12. O women, of slender constitution, (you) whose hair is well controlled, whose eyes are outstretched up to ears, whose mouth is filled with naturally clean teeth and on whose breasts pearls are always shining, though your this frame is full of calmness, yet it disturb us.*

●

*The references in this shloka have double meanings. Sanyami–means controlled as well as bound; Shruti–means Vedas as well as ears; Dwija–means Brahmans as also teeth; Mukta–means liberated souls as well as pearls. In the body of a beautiful girl we find the hairs well bound up–this is control, eyes stretched up to ears–and the other meaning is, it goes beyond the knowledge of Vedas; mouth full of beautiful teeth–the other meaning is that venerable Brahmans are

मुग्धे धानुष्कता केयमपूर्वा त्वयि दृश्यते।
यदा हरसि चेतासि गुणैरेव न सायकैः ॥१३॥

हे मुग्धे सुन्दरी ! धनुर्विद्या मे ऐसी असाधारण कुशलता तुझमें कहाँ से आई कि बाण छोड़े बिना, केवल गुण * से ही, तू पुरुष के हृदय को बेध देती है ॥१३॥

ऐ कमसिन भोली-भाली नाजनी ! तूने ऐसी गजब की तीरन्दाजी किससे सीखी, जो विना तीर चलाये ही, केवल कमान की डोरी छूकर ही, तू मर्द के दिल को छेद देती है ?

मौलाना 'हाली' कहते हैं—

था कुछ न कुछ, कि फाँस-सी इक दिल में चुभ गई।
माना कि उसके हाथ मे तीरो सनाँ न था॥

महाकवि 'गालिब' कहते हैं—

इस सादगी पै कौन न मर जाय ऐ खुदा।
लडते हैं और हाथ मे तलवार भी नही ॥

उस्ताद 'जौक' ने कहा है—

तुफुगा तीर तो जाहिर न था कुछ पास कातिल के।
इलाही फिर जो दिल पर ताक के मारा तो क्या मारा ?

---

connected with it, breast adorned by pearl-the other meaning is, even the liberated souls are connected with it Hence, taking one side of the meaning, we find that woman, whose body is thus full of calmness is also very attractive and disturbing to us.

* गुण=(१) चतुराई, (२) रस्सी, जिससे धनुष के दोनो कोटि बाँधे जाते हैं।

बड़ा आश्चर्य है, उसके पास न तीर था, न पिस्तौल। पर हे परमेश्वर उसने मेरे दिल पर फिर क्या चीज ताककर मारी, जो मैं लोट-पोट हो गया

अति अद्भुत कमनैत तिय, कर में बाण न लेत।
देखो यह विपरीत गति, गुण ते बेधे देत ॥१३॥

सार—स्त्रियों के पास कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं रहता; वे केवल अपनी चतुराई से ही पुरुषों को वश में कर लेती हैं, यह अचम्भे की बात है।

13. O beautiful girl how nice is your skilfulness in the use of the bow, because you do not pierce the heart of man by arrows, but by only bending the bow (in others words, by your charms only.)

✲

सति प्रदीपे सत्यग्नौ सत्सु तारारवीन्दुषु ॥
विना मे मृगशावक्ष्या तमोभूतमिदं जगत् ॥१४॥

यद्यपि दीपक, अग्नि तारे, सूर्य और चन्द्रमा सभी प्रकाशमान पदार्थ मौजूद हैं, पर मुझे तो एक मृगनयनी सुन्दरी बिना सारा जगत अन्धकारपूर्ण दीखता है ॥१४॥

खुलासा—यद्यपि दीपक—चिराग, आग, सितारे, सूरज और चाँद-जैसे सदा थे, वैसे ही अब भी हैं; ये जिस तरह पहले अन्धकार का नाश करके उजियाला करते थे, उसी तरह अब भी कर रहे हैं; परन्तु मुझे तो एक मृगनयनी प्यारी बिना सर्वत्र अँधेरा-ही-अँधेरा नजर आता है। तात्पर्य यह है कि घर में सब कुछ होने पर भी, एक स्त्री बिना घर शून्य वन-सा मालूम होता है

पण्डितेन्द्र जगन्नाथ अपने "भामिनी-विलास' में कहते हैं—

हरिणीप्रेक्षणे यत्र गृहिणी न विलोक्यते।
सेवितं सर्वसम्पद्भिरपि तद्भवनं वनम् ॥

जिस घर में मृगनयनी गृहणी नहीं दीखती, वह घर, सर्व सम्पत्ति-सम्पन्न होने पर भी, वन है।

सच है, घर मे चाहे पुत्र-वधुएँ हों, नौकर-चाकर और दास-दासी हों, हाथी-घोडे और रथ-पालकी प्रभृति ऐश्वर्य के सभी सामान हों, पर एक हिरनी के-से नेत्रों वाली प्यारी न हो, तो वह घर, सब सम्पदायें होने पर भी, निर्जन वन की तरह शून्य है। ससार में घर-गृहस्थी का सच्चा आनन्द सुन्दरी प्राण-प्यारी से ही है। महाकवि नजीर कहते हैं—

मैं भी है, मीना भी है, सागिर भी है, साकी नहो।
दिल मे आता है, लगादे आग मैखाने को हम ॥

इस समय कामोद्दीपन करने वाले ऐश-आराम के सारे सामान-सुरा-सुराही आदि मौजूद हैं, पर है क्या नही ? केवल वही, जिसके लिए इन सब वस्तुओं की आवश्यकता हुई। इससे अब होली ऐसी बुरी जान पडती है कि, जी चाहता है, इसमे आग लगा दूँ, अर्थात् सब कुछ मौजूद है पर एक नाजनी नही है; इससे सब बुरे लगते हैं। स्त्री विना सारे आनन्द फीके हैं।

जिन्होने स्त्री का सुख नही भोगा, जिन्हे स्त्री-रत्न की कीमत नही मालूम, जो नारी-रहस्य को नही जानते, जो स्त्री को पैर की जूती मात्र समझते हैं, वे हमारी इन बातो को पढकर हँसेगे—हमे स्त्री-दास या स्त्रैण अथवा जोरू का गुलाम कहेगे। जो जिसकी कीमत जानता है, वही उसकी कदर करता है। मोती बहुमूल्य होता है, पर भीलनी उसे पाकर फेंक देती और जौहरी उसे हृदय से लगा लेता है। जो जिसके रहस्य को जानता है, वही उसके सम्बन्ध मे कुछ कह सकता है। मौलाना हाली ठीक ही कहते हैं—

हकीकत महरमे असरार से पूछ।
मजा अंगूर का मैख्वार से पूछ॥
दिले महजूर से सुन लज्जते वस्ल।
निशाते आफियत बीमार से पूछ॥

जो सब तरह की बातें जानता है, तत्त्वज्ञ या रहस्यज्ञ है, उसी से तत्त्व की बात पूछनी चाहिए। अंगूर में क्या मजा है, यह अंगूरी शराब पीने वाले से पूछना चाहिए। वही उस विषय में कह सकता है।

जिस दिल ने माशूका से मिलने के लिए अनेक तरह की तकलीफें उठाई हैं, उसीसे वस्ल का मजा या मिलने के आनन्द की बात पूछनी चाहिए। जिस रोगी ने अनेक तरह के कष्ट उठाकर आरोग्य लाभ किया है, वही तन्दुरुस्ती की कीमत जानता है।

हमें भी स्त्रियों के सम्बन्ध में थोड़ा बहुत अनुभव है। हमने उनके संयोग और वियोग दोनों ही देखे हैं, उनकी सेवा-सुश्रुपाओं से सुखी और उनकी मन्त्रणाओं से लाभान्वित हुए हैं। अतः हम भी जोर के साथ कहते हैं कि निश्चय ही, स्त्री-बिना संसार के सुखैश्वर्य अलोने—फीके और बेमजा हैं। स्त्री, ईश्वर के संसार-रूपी बगीचे का सर्वोत्तम फूल है। उसी ईश्वर की सृष्टि की शोभा है। अगर स्त्री न होती, तो यह जगत अन्धकारपूर्ण, निर्जन और भयानक होता। जिस करोड़पति के घर में सती स्त्री नहीं है, उसका घर साक्षात् श्मशान है, और जिस दरिद्र के घर में पतिव्रता लज्जावती और मधुरभाषिणी स्त्री है, उसका घर नन्दन-कानन है। देखिये, संसार के प्राचीन और अर्वाचीन विद्वानों और महापुरुषों ने नारी जाति के सम्बन्ध में क्या कहा है।

स्त्री-महिमा

हे स्त्री! स्वर्ग में क्या है, जो तुझमें नहीं? अद्भुत ज्योति, सत्य, अनन्त सुख और अनादि प्रेम—सभी तुझमें है। —आट्वे

स्त्री इस संसार का रमणीक प्रदेश है। इस प्रदेश में विश्वास-तरु लहलहा रहे हैं। आनन्द के फूल खिल रहे हैं, हर्ष-विहग कलरव कर रहे हैं तथा निवृत्ति और विश्वास की नदियाँ बह रही हैं। यहाँ शोरगुल का नाम भी नहीं।

स्त्री पुरुष का श्रेष्ठ भाग है*। पुरुष जब तक शादी नही करता,अधूरा रहता है। स्त्री एक तरह का तीर्थ है। विधाता हमे उसकी यात्रा को भेजता है। स्त्री पुण्यात्मा के लिए स्वर्ग है और दुष्ट के लिए स्वर्ग-सोपान का पहला पद। स्त्री का एक खजाना है। जिस पुरुष के पास यह खजाना नही, वह अपने कर्ज को अदा कर नही सकता,यानी, अपने पितरो का ऋण चुका नही सकता।

—शर्ले

हे स्त्री! तू रात का तारा और प्रातःकाल का हीरा है। तू ओस का कतरा है, जिससे काँटे का मुँह भी मोतियो से भर जाता है। वह रात अँधेरी और वह दिन फीका मालूम होता है, जबकि तेरी आँखो की रोशनी दिल को ठंडा नही करती। हृदय का घाव बिना तेरे होठो के अच्छा नही हो सकता। विपत्ति मे तू सहायक होती है।

हे अबला! तेरे शरीर और आत्मा मे एक जादू है। जिधर हम जाते

---

*हमारे ऋषि मनु ने भी यही बात कही है। उन्होने कहा है कि—विधाता ब्रह्मा ने अपने शरीर को दो भाग कर, आधे अंश से पुरुष, और आधे से स्त्री को पैदा किया। अंग्रेजी मे स्त्री को 'बेटर हाफ'(Better half)श्रेष्ठार्द्ध भी कहते हैं।

पुरुष का नाम मनु और स्त्री का नाम शतरूपा हुआ। अँग्रेजों और मुसलमानो के यहाँ भी लिखा है कि पहले आदम पैदा हुआ और फिर हव्वा (Adam and Eve) मनु से 'मनुष्य' शब्द और आदम से 'आदमी' शब्द बना। संसार का पहला पुरुष मनु या आदम था और पहली स्त्री शतरूपा या हव्वा थी। इन्ही से जगत की उत्पत्ति हुई। जब तक आदम को हव्वा न मिली, तब तक उसे बागे अदन या नन्दन-कानन उजाड से भी बुरा मालूम होता था।

व्यास-संहिता मे लिखा है—जब तक विवाह नही होता, तब तक पुरुष 'अर्द्ध-देह' रहता है, विवाह होने के बाद पुरुष 'पूर्ण-देह' होता है।

पति नाराज हो जायगा, तो वह नाराज न होगी; उल्टे उसका हँसता हुआ चेहरा उसके शोक को हरेगा। वह जिन्दगी-भर उसकी खिदमत करेगी। अगर वह पहले मर जाय, तो वह उसके कुटुम्ब की खबर लेगी, उसके मान को स्थिर और इज्जत को कायम रखेगी। उसके चेहरे से बुद्धि बरसती है और उसकी जीभ से मिहरबानी टपकती है। —बिशप होरन

हे स्त्री तू धन्य है! तेरा करुणामय हाथ विपत्ति के भयानक वन में भी आनन्द के बाग लगाता है। जो नीच तुझे केवल क्षण-भर दिल खुश करने का खिलौना समझता है, उसका दिल मैला है—वह तेरे गुणों को नहीं जानता।
—ब्रैसफर्ड

संसार-वाटिका में स्त्री सबसे अच्छा फूल है। उसका लालित्य, उसकी सुगन्ध और मनोहरता विचित्र है। —थैकरे

समुद्र के भीतर का खजाना इतना महँगा नहीं, जितना कि वह आनन्द जो स्त्री से पुरुष को मिलता है। —मिल्टन

सुशील स्त्री परम स्नेही मित्र है। उसकी सचाई ईश्वरीय नियम की तरह अटल है। उसी पवित्रता दैवी प्रकाश की भाँति निर्दोष है। पति मौजूद रहे या नामौजूद रहे, उसे अपनी स्त्री पर पूरा भरोसा रहता है कि उसकी प्यारी चीजों को खासकर उसकी सबसे प्यारी चीज अपने ताईं, वह रक्षित रखेगी—जाने न देगी। वह अपने ऐसे विश्वासी मन्त्री के भरोसे बेफिक्र और निर्भर होकर काम पर जाता है। वह अपने शृङ्गार में फिजूल खर्ची नहीं करती—सभी कामों में किफायत से काम लेती है। पति को जिस चीज की जरूरत होती है, उसे ही लाकर हाजिर कर देती है। सदा उसका भला चाहती है। उसका रत्ती भर नुकसान न होने देती। अगर पति को शोक होता है तो उसे हर लेती है और अपना विश्वास बढ़ाती है। —बिशप होरन

संसार में कोई भी चीज नारी से अधिक सुन्दर, पवित्रात्मा, विनोदशीला और मनोहर नहीं। —हण्ट

हे मन ! उस कामिनी के पुष्ट-स्तनो, मनोहर जांघो और चन्द्रमुख को देखकर क्यो व्याकुल होते हो ? अगर तुम उसके कठोर कुचो और मनोहर जघाओ का आनन्द लेना चाहते हो तो परोपकार आदि पुण्य सञ्चय करो, अर्थात् सुन्दर मृगनयनी पुण्य-कर्म करने से मिलती है।

स्त्री की आँखो मे ईश्वर ने दीपक जला रखे हैं, ताकि भूले-भटके पुरुषो को, उन चिरागो की रोशनी मे, स्वर्ग की राह दीख जाय। —विल्लिस

मामूली नौजवानों को स्त्रियो मे कोई गुण न दीखता हो तो न दीखता हो, पर मेरी नजर मे तो वह देवी से कम नही। —वाशिंगटन आयर्विङ्ग

जब तक पुरुष पर आफत नही आती, तब तक उसे अपनी स्त्री के गुणो का पता नही लगता। विपत्ति आने पर उसे मालूम हो जाता है कि उसकी स्त्री सच्ची देवी है। —वेलवर

कण्टकपूर्ण शाखा को फूल सुन्दर बना देते हैं और गरीब से-गरीब घर को लज्जावती युवती स्वर्ग बना देती है। —गोल्डस्मिथ

प्रियदर्शनता, विनोदशीलता, प्रज्ञा और प्रभा मे पुरुष स्त्री की बराबरी नही कर सकता। वह विपत्ति मे पडे हुए पति की उदासी और थके हुए की थकान दूर करती और अपने मुस्कराते हुए मुँह से सारे घर मे आनन्द के फूल बरसाती है। —गिजबर्न

जब तक आदम की शादी नही हुई थी, स्वर्ग उसके लिए काँटो का घर था। देवताओ का गाना, पक्षियो का चहचहाना, फूलो का हँसना और सवेरे की सुहावनी हवा के झोके उसे बेमजे मालूम होते थे। वह उदास फिरा करता था। ज्यो ही हव्वा आई, उसका दु ख दूर हो गया और नन्दन-कानन आनन्द-भवन हो गया। — केम्वेल

अगर ससार मे स्त्री न हो, तो ससार उस तरह सूना और भयानक दीखने लगे जिस तरह वह मेला जिसमे न तो खरीद-फरोख्त-क्रय-विक्रय और लेन-देन होता है और न कोई दिल बहलाने का सामान ही होता है। स्त्री की मुस्कुराहट के बिना सृष्टि उसी तरह निष्फल और व्यर्थ हो जाय, जिस तरह जीव बिना देह, फल-फूल बिना वृक्ष, किलेदार बिना किला, नीव बिना महल और पतवार बिना नाव। अगर स्त्री नही, तो प्रेम नही और प्रेम नही तो आनन्द नही। ससार में जो सुख है, वह स्त्रियो के ही प्रताप से है। अगर ससार में कोई प्रकाश की रेखा है, तो वह इन्ही से है।

कुत्ता नमकहलाल होता है, स्त्री उससे भी ज्यादा नमकहलाल होती है। वह नाव की पतवार से ज्यादा पक्की और महल के सितून या खम्भे से भी अधिक मजबूत है। नाव के टूट जाने वालों को किनारा जैसा प्यारा होता है, पुरुष के लिये स्त्री वैसी ही प्यारी है। वह सन्तान से भी ज्यादा प्यारी और रात के बाद होने वाले प्रभात से भी अधिक प्रकाशमान है। रेगिस्तान या रेतीले जंगलों में सफर करने वाले प्यासों को पानी जैसा प्यारा और मीठा लगता है, पुरुष के लिए स्त्री उससे भी अधिक मीठी और आनन्ददायिनी है। —यंग

स्त्रियाँ संसार में देवताओं की तरह घूमती हैं। स्वार्थपरता या खुदमर्जी का तो उनमें नाम भी नहीं। प्रत्युपकार का उन्हें ध्यान भी नहीं। स्त्री पर चाहे जितना भार डालो, हैरान करो, अत्याचार करो, वह न बोलेगी। ऊँट तो ज्यादा बोझ होने से चीखता और बलबलाता है, पर स्त्री चूँ नहीं करती। हे ईश्वर! तूने स्त्री को पुरुष का योग्य साथी बनाया। सच पूछो तो ईश्वर की सृष्टि में स्त्री ही सर्वश्रेष्ठ है। उसके चेहरे से गौरव टपकता एवं सम्मान और स्नेह उसके शासन में चलते हैं। तूने अपनी अद्भुत शक्ति से उसे पुरुषों के दिल कोमल करने को बनाया, ताकि पुरुषों के दिल उसे देखकर तेरे भक्तिभाव से पूर्ण हो जायें। —मिस वैनट

विपत्ति की चोटों से जब हम बेबस हो जाते हैं और हमारे बन्धु-बान्धव हमें त्याग देते हैं, तब स्त्री ही हमारे दुःख का कारण खोजती है। उसकी मुस्कराहट से हृदय शीतल हो जाता है। उसकी मीठी आवाज हृदय के ताप को मिटा देती और सूखे हृदय को फिर से हरा-भरा और तरोताजा कर देती है। गैली नाइट

स्त्री की मर्यादा उसके अपरिचित रहने में उसकी प्रभा पति के सम्मान में और उसका सुख कुटुम्ब के मंगल या कल्याण में है। —रूसो

देखा गया है कि प्रकृति ने नारियों को स्वयं चिन्ता और क्लेश भोगने को पैदा नहीं किया। उसने उन्हें हमारी चिन्ताओं के कम करने को बनाया है। —गोल्डस्मिथ

स्त्रियाँ, जिन्होंने अपना विश्वास खो दिया है, उन फरिश्तो के समान हैं, जिन्होने अपने पख गँवा दिये हैं। डा० बाल्टनस्मिथ

ज्वाय नामक एक पाश्चात्य विद्वान कहते हैं :—"But for women, our life would be without help at the outset, without pleasure in its course and without consolation at the end." अगर स्त्रिया न हो, तो पुरुष को बाल्यावस्था असहाय और यौवन आनन्द विहीन हो जाय तथा बुढापे मे कोई-आश्वासन देने वाला न हो। मतलब यह है कि पुरुषो को हर अवस्था में स्त्री की जरूरत है। ठीक है, जिसके एक सती साध्वी नारी हो, वह परम सुखी है।

गेटे महोदय कहते हैं :—"A house of one's own and a good wife are worth gold and pearls" निज का घर और साध्वी स्त्री सोने और मोतियों के बराबर हैं।

बेकन महोदय भी कहते हैं :—Wives are young men's mistresses, companion for middle age, and old men's nurses" स्त्रियाँ युवावस्था मे पत्नियो का, मध्यावस्था मे सहचारिणियो का और बुढापे मे परिचारिकाओ या नर्सों का काम देती हैं।

स्पेन वालो मे एक कहावत है —To him, who has a good wife, no evil can come which he cannot bear." जिस पुरुष के घर मे भली स्त्री है, उस पर कोई ऐसी विपत्ति नहीं आ सकती जिसे वह सह न सके।

बहुत से अनजान कहेगे कि यूरोपिन लोग तो स्त्रियो के गुलाम होते ही हैं। उनकी गाई स्त्री-महिमा हमारे किस मसरफ की ? ऐसो के सन्तोष के लिए हम अपने हिन्दू-शास्त्रो से ही चन्द श्लोक उद्धृत करते हैं। वे आँखें खोल कर देखें, कि हमारे यहाँ भी नारी जाति की कैसी महिमा गाई गई है—

महाभारत के आदि पर्व मे लिखा है—

अर्द्धं भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा ।
भार्या मूलं त्रिवर्गस्य भार्या मूलं तरिष्यतः ॥
सखायः प्रविविक्तेषु भवन्त्येताः प्रियम्वदाः ।
पितरो धर्मकार्येषु भवन्त्यार्त्तस्य मातरः ॥
भार्यावन्तः क्रियावन्तः सभार्या गृहमेधिनः ।
भार्यावन्तः प्रमोदन्ते भार्यावन्तः श्रियान्विताः ॥
कान्तारेष्वपि विश्रामो जनस्याध्वनिकस्य वै ।
यः सदारः स विश्वास्यस्तस्माद्दाराः परागतिः ॥
संसरन्तमपि प्रेतं विषमेष्वेकपातिनं ।
भार्यैवान्वेति भर्त्तारं सततं या पतिव्रता ॥
प्रथमं संस्थिता भार्या पतिं प्रेत्य प्रतीक्षते ।
पूर्वं मृतं च भर्त्तारं पश्चात्साध्व्यनुगच्छति ॥
दह्यमाना मनोदुःखैर्व्याधिभिश्चातुरा नराः ।
आह्लादन्ते स्वेषु दारेषु धर्मार्त्तो सलिलेष्विव ।

स्त्री पुरुष की अर्द्धाङ्गिनी है। स्त्री पुरुष का सर्वोत्तम मित्र है। स्त्री र्म, अर्थ और काम की जड़ है। स्त्री भवसागर से पार होने वाले मुमुक्षुओं ो मूल है।

यह मधुरभाषिणी आफत की जगह मित्र, धर्म के कामों में पिता और ख आ पड़ने पर माँ बन जाती है।

जिसके स्त्री है वही क्रियावान है, जिसके स्त्री है वही गृहस्थ है, जिस- स्त्री है वही सुख पाता है और जिसके स्त्री है वही लक्ष्मीवान है।

वनभूमि में स्त्री विश्राम या आराम की जगह है। जिसके स्त्री है वही श्वास योग्य है; इसलिए स्त्री परम गति है।

चाहे पति आवागमन या जन्ममरण के चक्र में फँसा हो, चाहे मर या हो और चाहे किसी दुर्गम स्थान में पड़ा हो, स्त्री ही है जो उसके पीछे-पीछे लती है।

मानसिक क्लेशो से जलते हुए, रोग-पीडित पुरुष, अपनी स्त्रियो से तने ही सुखी होते हैं, जितना कि सूरज की किरणो से तपा हुआ आदमी पानी ने से आनन्दित होता है।

स्त्री पुरुष का आधा अङ्ग है, उसके बिना पुरुष अधूरा है। इस विषय 'मनु संहिता' मे लिखा है—

द्विधा कृत्वात्मनो देहं अर्द्धेन पुरुषोऽभवत्।
अर्द्धेन नारी तस्यांश विराजमसृजत् प्रभुः॥

ब्रह्मा ने अपने शरीर को दो हिस्से करके, आधे से पुरुष और आधे से ामी पैदा की।

'व्यास-संहिता' मे लिखा है—

पाटितोऽयं द्विधाः पूर्व एक देहः स्वयम्भुवा।
पतयोऽर्द्धेन चार्द्धेन पातन्योऽभुवान्निति श्रुतिः।
यावन्न विन्दते जाया तावदर्द्ध भवेत्पुमान्॥

ब्रह्मा ने एक देह के दो टुकड़े करके आधे भाग से पति और दूसरे आधे से पत्नियाँ पैदा की। इसका प्रमाण वेद मे है। जब तक विवाह नहीं होता, जब तक पुरुष 'अर्द्ध देह' रहता है। शादी होने के बाद पुरुष 'पूर्ण देह' होता है।

'मनुस्मृति' मे ही लिखा है—

न निष्क्रय विसर्गाभ्याम् भर्त्तुर्भार्य्या विमुच्यते।
एवं धर्म्म विजानीयः प्राक् प्रजापतिनिर्म्मितम्॥

पति-पत्नी का सम्बन्ध, दान, बिक्री या त्याग द्वारा भी नही टूट सकता। यह नियम पूर्वकाल से विधाता ने बनाया है।

यदि रामा यदि च रमा यदि तनयो विनयगुणोपेतः।
तनये तनयोत्पत्तिः सुखरनगरे किमधिकम्॥

अगर स्त्री है, अगर लक्ष्मी है, अगर शीलवान पुत्र है और पुत्र के पुत्र हो गया है, तो फिर स्वर्ग मे इससे अधिक क्या है?

नीतिकारों ने छह सुख प्रधान कहे हैं। उनमें से स्त्री का सुख भी एक है। किसी विद्वान ने कहा है—

अर्थगमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्य्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥

हे राजन्! धन की आमद, सदा आरोग्य रहना, प्यारी और प्रियवादिनी स्त्री, वश में रहने वाला पुत्र और फल देने वाली विद्या—ये छह संसार के सुख हैं।

स्त्री का काम पुरुष के बिना और पुरुष का काम स्त्री के बिना चल नहीं सकता। स्त्री और पुरुष एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। एक दूसरे के बिना अधूरे है। दोनों का उद्देश्य एक ही है, इसलिए लक्ष्य तक पहुंचने के लिए दोनों का मिलकर काम करना जरूरी है। ये दोनों एक दूसरे के विरोधी और प्रतिकूल नहीं, किन्तु अनुकूल और अनुगामी हैं। एक दूसरे के सुख-दुःख में हिस्सा बँटाने और संसार के कार-व्यवहार चलाने के लिए पैदा हुए हैं। स्त्री-पुरुष के विवाह-बन्धन में बँधने से ही गृहस्थी कहलाती है। गृहस्थी एक गाड़ी है। स्त्री और पुरुष उस गाड़ी के दो पहिये हैं। गाड़ी एक पहिये से नहीं चलती; इसीलिये विवाह किया जाता है। हिन्दू-विवाह का आधार उच्च, धार्मिक और गूढ़ वैज्ञानिक सत्य है। हिन्दू-विवाह किसी अभिप्राय या काम-वासना पूरा करने के लिए नहीं किया जाता। विवाह-सम्बन्ध धर्म अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए किया जाता है*! गार्हस्थ्य जीवन-बिना इहलोक और परलोक दोनों में ही सुख नहीं है। शास्त्र में लिखा है:—

स सन्धार्य्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।
सुखञ्चेहेच्छतानित्यं योऽधार्य्योदुर्बलेन्द्रियैः॥

जो मृत्यु के बाद सदा स्वर्ग में रहना चाहता है और जो इस समय में सुख भोगना चाहता है, उसे बड़ी होशियारी के साथ गार्हस्थ जीवन का निर्वाह

---

* इसका यह आशय है कि हिन्दू स्त्री, हिन्दू के लिए सुख भोगने की चीज नहीं—उसके घर में देवी है।

करना चाहिए। जिसकी इन्द्रियाँ वश मे नही हैं, जो अजितेन्द्रिय है, वह गृहस्थाश्रम के धर्म कार्य कर नही सकता।

'मनु' ने कहा है—

> देवदत्तां पतिर्भार्यां विन्दते नेच्छयात्मनः।
> तां साध्वीं बिभृयन्नित्यं देवानां प्रियमाचरन्॥
> प्रजननार्थं स्त्रियां सृष्टाः सन्तानार्थञ्च मानवाः।
> तस्मात् साधारणो धर्म श्रुतौ पत्न्या सहोदितः॥

परमात्मा से पत्नी मिलती है। पुरुष अपनी इच्छानुसार उसकी प्राप्ति नही कर सकता। इसलिए पति को अपनी साध्वी स्त्री का सदा भरण-पोषण करना चाहिये। उसके इस काम से देवता प्रसन्न होते है।

स्त्रियाँ सन्तान प्रसव करने के लिए और पुरुष उनका उत्पादन करने के लिए बनाये हैं, इसलिये भार्या के साथ रहना पुरुष का मुख्य धर्मकार्य है। पवित्र वेदो की ऐसी ही आज्ञा है।

हिन्दू के लिए विवाह धर्म का एक अंश या मुख्य भाग है। यह विशुद्ध वैध धर्म-कार्य है। यह स्वार्थसिद्धि, बखरादारी या शराकत (co-partnership) का काम नही है, इसीलिये गृहस्थाश्रम, शेष सभी आश्रमो से ऊँचा समझा जाता है। गृहस्थ—ब्रह्मचारी, वाणप्रस्थ या सन्यासी—इन तीनो से श्रेष्ठ समझा जाता है। गृहस्थ अग्नि मे हवन करता है, उससे मेह बरसता है, मेह से अनाज पैदा होता है और अनाज से प्राणियो की उत्पत्ति और पालन होता है, इस वास्ते गृहस्थ ही एक तरह से समस्त प्राणियो का पैदा करने वाला है। जिस तरह जगत के प्राणी श्वासकार्य से जीते हैं, उसी तरह ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासी, गृहस्थ की सहायता से जीवन धारण करते हैं। इसी से गृहस्थाश्रम सब आश्रमों से ऊँचा समझा जाता है। जिन्हें इस लोक और परलोक मे सुख भोगना हो, उन्हें गार्हस्थ्य जीवन-निर्वाह करना चाहिए। मगर यज्ञादि धर्मकार्य पुरुष स्त्री के बिना सम्पन्न नही कर सकता। अगर वह अकेला इन कर्मो को करता है, तो उसको इनका फल नहीं मिलता। यही वजह है कि

सीताजी के वन में रहने के समय, जब रामचन्द्रजी अश्वमेध यज्ञ करने लगे तब महर्षियों ने उन्हें सीताजी की सोने की प्रतिमा बगल में रख कर यज्ञ करने का आदेश किया। जिस समय अयोध्यापति महाराजा अज की रानी इन्दुमति जहरीली माला के कारण स्वर्ग को सिधार गईं, महाराजा के शोक का पारावार न रहा। यद्यपि उस समय एक इन्दुमती के सिवा महाराज के पास सब-कुछ था, ससागरा पृथ्वी का राज्य था, अतुल धन-सम्पत्ति थी, अप्सराओं का भी मानमर्दन करने वाली हजारों वीराङ्गनायें थीं, लाखों दास-दासी थे; तथापि महाराज को जरा भी सुख-सन्तोष न होता था। उन्हें यह जगत अन्धकारपूर्ण प्रतीत होता था। वे अपनी प्यारी रानी को याद कर-करके जार-जार रोते और कलपते थे।

असल बात यह है कि जो सुख पुरुष को अपनी पत्नी-द्वारा मिलता है, वह किसी से भी मिल नहीं सकता। इस जगत में स्त्री के समान उसका सच्चा और चतुर सलाहकार कोई नहीं। जिस समय वह किसी झंझट में फँसकर घबरा जाता है, उलझन को सुलझा नहीं सकता, उस समय उसकी सच्ची संगिनी उसकी प्यारी पत्नी, अपनी कुशाग्र-बुद्धि से, फौरन मुश्किल को हल कर देती है। अनेक बार दिल्लीश्वर शाहशाह अकबर प्रसिद्ध हाजिर-जवाब राजा बीरबल से अत्यन्त कठिन और टेढ़े सवाल कर बैठते थे। वह उनके सवालों का जवाब फौरन ही दे देते थे। लेकिन कभी-कभी गाड़ी रुक भी जाती थी। ऐसे मौके पर बीरबल घबरा कर औंधे मुँह पड़े रहते और शोक के मारे पागल-से हो जाते थे। उस वक्त उनकी पत्नी या पुत्री ही, उनकी मुश्किल को हल करके, उनके शोक-सन्तापों को दूर करती थीं। शारीरिक बल में स्त्रियाँ चाहे पुरुष की बराबरी न कर सकती हों, पर बुद्धि में वे पुरुषों से कम नहीं। किसी-किसी बात में तो उनकी सूझ पुरुषों की अपेक्षा गहरी होती है। अनेक पुरुष कहते हैं कि स्त्री की बुद्धि प्रलयंकारी होती है, पर यह कहावत सभी हालतों में ठीक नहीं। हमने स्वयं देखा है कि बाज-बाज औकात हम कारोबार-सम्बन्धी उलझन में ऐसे उलझ जाते हैं, कि दिन-भर

सोचने पर भी उसका कोई कूल-किनारा नहीं होता। शाम को घर आकर हम उदास मन बैठ जाते है। हमारी घरवाली हमारे चेहरे का रग-ढग देख कर फौरन ही ताड जाती है कि आज कुछ दाल मे काला है। वह हमसे हमारी उस उदासी का कारण पूछती है और हमे कारण बताना ही पडता है। वह कहती है—"बडे कारोबार वालो के पीछे हजारो झझट लगे ही रहते हैं। आप इस तरह बात-बात मे रज कीजियेगा, तो आपका स्वास्थ्य नष्ट हो जायगा। हानि की पूर्ति सहज मे हो जायगी, पर शरीर बडी मुश्किल से सुधरेगा। पहले आप खाना खाइये और आराम कीजिये। मैं भी, अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार, आपको सलाह दूँगी। अगर आप मेरी तुच्छ सम्मति को ठीक समझें, तो तदनुसार काम कीजियेगा।" आखिरकार जब सब खा-पी लेते हैं, नौकर चले जाते हैं और बच्चे सो जाते हैं, वह हमारी उलझनो को चन्द मिनटो में ही सुलझा देती है—हमारी मुश्किल को हल कर देती है। हम उसकी बुद्धि की तीव्रता देखकर दग रह जाते और मन-ही-मन सराहना करते हैं। अगर कहा जाये कि सभी स्त्रियाँ चतुर नही होती, तो मानना पडेगा कि मर्द भी सब चतुर, चालाक और होशियार नहीं होते। हमारी राय मे, अगर अपनी घरवाली निरी मूर्खा न हो, तो उससे सलाह अवश्य लेनी चाहिये। किसी अंग्रेज विद्वान ने कहा है:—Woman's counsel is not worth much, yet he, that despises it, is no wiser than he should be" स्त्री की सम्मति अधिक मूल्यवान नही होती, तो भी जो उसकी सलाह को घृणा की दृष्टि से देखता है, वह बुद्धिमानी नही करता।

गोस्वामी जी ने बहुत ही ठीक कहा है—'धीरज, धर्म मित्र अरु नारी, आपत-काल परखिये चारी।" अर्थात् धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री की परीक्षा विपत्ति मे करनी चाहिए, क्योंकि उसी समय उसका खरा-खोटापन मालूम होता है। जब तक पुरुष पर आफत नही आती, उसे अपनी स्त्री के गुणो का पता नही लगता। जिस समय पुरुष पर चारो ओर से विपत्ति की घनघोर घटायें छा जाती हैं, माता पिता, भाई-बन्धु, मित्र और पुराने सेवक तक उससे आँख

फेर लेते है, कोई उसकी वात नहीं पूछता; तव उस घोर दुःख में एक मात्र स्त्री ही उसकी शरणदाता और आनन्द का स्थान होती है, वहीं उसे शान्ति मिलती है। वही उसे ढाढ़स वँधाती और उसके शोक को हरती है। वही उसके दुःख के कारणों को खोजती और वही उसकी औषधि सोचती है। वही अपनी मुस्कराहट से उसके हृदय की जलन को शान्त करती, अपने मधुर स्वर से दिल की मुरझाई हुई कली को खिलाती और शुष्क हृदय को फिर से तरोताजा करती है। विपत्ति में सभी नातेदार किनारा कर जाते हैं, पर वह अपने प्यारे को नहीं त्यागती। सच तो यह है, संसार में, घोर विपत्ति के समय, एकमात्र जगदीश और अपनी साध्वी स्त्री ही पुरुष की खवर लेते हैं। हम इस वात की परीक्षा कर चुके हैं। हमने जीवन में जितनी विपदायें देखी हैं, वहुत कम लोगों ने उतनी देखी होंगी। सच तो यह है, हमारा जीवन ही विपत्तिमय है। ईश्वर ने हमें दुःख पाने के लिए ही पैदा किया है।

सन् १९१९ में, जव हम घोर विपत्ति में फँस गये, रक्षा की जरा भी आशा न रही, भाई-वन्धु आँख फेर गये, साथी हमारी कमाई हुई दौलत को हड़पने की युक्तियाँ विचारने लगे, कई सेवक, जिन्हें हमने वड़ी-वड़ी सहायतायें दी थीं, हमारी विपत्ति की आग में घृताहुति छोड़ने लगे; हमारे दुश्मनों से मिलकर षड्यन्त्र-पर षड्यन्त्र रचने लगे, उन्हें हमारे छिद्र वताने लगे—उस समय हमें चारों ओर अन्धकार-ही-अन्धकार दीखता था। उस समय हमारा सर्वस्व नष्ट होने में कसर नहीं थी यहाँ तक कि जीवन रहने की भी आशा नहीं। अमीरों की तरह सुख-चैन से पले हुए छोटे-छोटे वच्चों और हमारी घरवाली को गलियों में भीख माँगने तक की नौवत आ गई थी। जो हमारे अपने थे, जिनसे हमें कुछ आशा थी, उनकी तरफ हमने आँखों में आँसू भर कर देखा; पर किसी का भी हृदय न पसीजा—सभी पत्थर-दिल हो गये। उस समय हम गहरे-गम्भीर चिन्ता-सागर में गोते खाते लगे। कहीं भी किनारा न दिखाई दिया। ऐसे समय में हमें ईश्वर की याद आई। उससे हमने अपने अन्तर्हृदय से पुकार मचाई। उस दयासिन्धु को हम पर दया आई। उसने

हमारी मदद को अपना गुप्त हाथ बढाया। इधर हमारी घरवाली के हृदय मे बल आया। उसने हमसे कहा—'यह घोर विपत्ति है। अगर घबराओगे, तो डूबने मे सशय नहीं। घबराहट छोडो और हाथ-पैर मारो, शायद किनारा मिल जाय। मेरे पास जो कुछ है, उस सबको फूंक दो और अपनी प्राण रक्षा करो। अगर आप होंगे, तो धन फिर हो जायगा। फिक्र मत करो, जब तक मेरे पास एक कानी कौडी भी रहेगी, जेल मे भी आपको सुख पहुचाऊँगी, कुछ भी न रहेगी तो चरखा कात कर, मिहनत-मजदूरी करके बच्चो को पालूंगी और आपके लिए भी जेल मे जरूरी चीजें भेजूंगी।" उस देवी के इन शब्दो ने हम पर जादू का-सा असर किया। हमारा सूखा हृदय हरा हो गया। फिर उसने हमे भूतपूर्व वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड की शरण मे जाने की सलाह दी। हमने वैसा ही किया। प्रसिद्ध सगदिल (?) लार्ड चेम्सफोर्ड का सख्त दिल भी हमारे लिए मोम हो गया। उस दयालु वायसराय ने (हम तो उन्हें दयालुओ का भी सिरताज कहेंगे) हमारी सहायता के लिए आनरेब्रिल मिस्टर गोखले एम० ए० सी० आई० ई०, आई० सी० एस० को नियत किया। बहुत क्या कहें, चन्द दिनो मे विपत्ति के बादल उड गये। बुरे दिन गये भले दिन आये। दुश्मन हाथ मलते रह गये। उस विपत्ति मे अगर हमारी घरवाली देवी हमे त्याग देती और अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय न देती, तो आज हम इस ग्रन्थ को न लिखते होते, बल्कि जेल की असह्य यन्त्रणायें न सह सकने की वजह से, इस नापायेदार दुनियाँ से ही कूच कर जाते। अगर हम इस कहानी को पूर्ण रूप से लिखें, तो आधी पुस्तक इसी कहानी से भर जाय, पर हमारे पास स्थानाभाव है, और इस राम कहानी का यहाँ लिखा जाना मुनासिब भी नही, अत अपनी बीती हम अपनी जीवनी मे विस्तार से लिखेंगे। शेष मे, हम यह कहने को बाध्य हैं कि, पुरुष के लिए स्त्री बिना ससार मे सर्वत्र अँधेरा-ही अँधेरा है।

इतना सब लिखने का साराश या सार मर्म यही है, कि नारी पुरुष की अर्द्धाङ्गिनी, सहधर्मिणी और उसकी अन्तरात्मा की छाया या प्रतिमा है। वही

कालिदास की तरह पुरुष को उत्थान का मार्ग दिखाने वाली और तुलसीदास जैसों की मोक्ष-पथ-प्रदर्शिका है। वही पुरुष के शोक-सन्तप्त हृदय को अपने सुधावारि से सींचकर तरोताजा रखने वाली और अपने 'शोकहरा' नाम को सार्थक करने वाली है। पुरुष के घोर विपत्ति-काल में वही एक मात्र सच्चे मित्र का-सो बर्त्ताव करने वाली, उसके दुःख शोक में हिस्सा बँटाने-वाली, उसके दुःख को अपना ही दुःख समझने वाली, उसके सुख के लिए अपना सारा सुख-आनन्द त्याग देने वाली और उसके दुःख-नाश की औषधि खोजने वाली है। घोर मुसीबत में जब पुरुष के सारे नातेदार—माता-पिता, भाई-बहिन और दिली दोस्ती का दम भरने वाले मित्र किनारा कर जाते हैं, पास नहीं आते, बातें करने में भी आनाकानी करते हैं; तब वही है जो उसका साथ नहीं छोड़ती, उसकी विपत्ति को अपनी ही विपत्ति समझती है और तन-मन-धन से उसकी सहायता करती है। वही है, जो धर्मकार्य में उसके साथ पिता का-सा व्यवहार करती, खिलाने-पिलाने में माता का-सा वर्त्ताव करती, सलाहसूत देने और धीरज बँधाने में मित्र का-सा काम करती और रति-समय वेश्यावत् व्यवहार करती हैं। वही है जो उसके रोग-पीड़ित और निर्धन होने पर भी उसका अनादर नहीं करती। उसके घर को झाड़-बुहार कर साफ रखती, हरेक चीज को यथास्थान सजाकर रखती, सुस्वादु भोजन बनाकर रखती, घर में चिराग जलाती और उसके घर में घुसते ही, मुस्कराते हुए चेहरे से उसका स्वागत करती है। उसे दुःखी देखकर आप आनन्द के फूलों की वर्षा करती और तुतलाते हुए नन्हें बच्चे को उसके आगे कर देती है। वह इन मनोहर दृश्यों को देख कर अपने शोक भूल जाता और प्रसन्न होकर खाना खाता है। स्त्री बिना पुरुष की यह खातिर कौन कर सकता है? इसीसे कहते हैं कि नारी गृह की लक्ष्मी और घर का कल्याण है। वह घर की श्रीवृद्धि, ऐश्वर्य और सुख सभी का आधार है। वही पुरुष की सर्वस्व और उसकी अन्तरात्मा है। उसकी जीवन-ज्योति उसीसे प्रज्वलित होती और प्रकाश पाती है। उस शक्ति-रूपिणि से ही उसे शक्ति मिलती है। बिना गृहणी के घर निर्जन या भयंकर श्मशान

है। उसके विना संसार सूना और जीवन वृथा है। वह पुरुष के लिये ईश्वरदत्त अनमोल हीरा है। उस कोहेनूर से बेशकीमती हीरे के विना, उसका घर घर नही है। इस दशा मे, उसे वन मे जाकर भगवद्भजन करना उचित है। स्त्री रत्न के सच्चे कदरदाँ पण्डित जगन्नाथ महाराज अपने 'भामिनी-विलास' मे यही बात कहते हैं—

इदं लताभिः स्तनकानताभिर्मनोहरं हन्त वनान्तरालम्।
सदैव सेव्यं स्तनभारवत्यो न चेद्युवत्यो हृदयं हरेयुः॥

यदि स्तन भारवती युवती चित्त को न हरे, तो भार से झुकी हुई लतिकाओ से सुशोभित कानन—गुफा का मध्य भाग सेवन करना उचित है; यानी जगल मे जाकर किसी गुफा में रहना मुनासिब है।

इसी को स्पष्ट शब्दो मे यो कह सकते है—यदि भारी स्तनो के बोझ से झुकी जाने वाली नाजनी—कोमलागी पुरुष के चित्त को अपने नाज नखरो या हाव-भाव प्रभृति से प्रसन्न न करे, तो पत्र-पल्लवो के भारी बोझ से झुकी हुई लताओ से शोभायमान गुफा या वन के मध्य भाग मे रह कर प्रभु की आराधना करनी चाहिए। जब कभी पीनपयोधरा सुन्दरी की याद आयेगी, तभी पत्र-पल्लवो के भार से नम्र हुई लताओ को देख, मन मे सन्तोष हो जायगा।

अनल दीप रवि शशि नखत, यद्यपि करत उज्यार।
मृगनैनी बिन मोहि यह, लगत जगत अँध्यार ॥१४॥

सार—गृहस्थाश्रम मे एक स्त्री-विना इन्द्रतुल्य सम्पत्ति भी तुच्छ है।

14, Though there are lamp, light, fire, stars, sun and moon, yet to me the whole world is enveloped in darkness without a woman with eyes like that of a dear

उद्वृत्तः स्तनभार एष तरले नेत्रे चले भ्रूलते
रागाधिष्ठितमोष्ठपल्लवमिदं कुर्वन्तु नाम व्यथाम्।
सौभाग्याक्षरपंक्तिरेव लिखिता पुष्पायुधेन स्वयं
मध्यस्थाऽपि करोति तापमधिकं रोमावली केन सा ॥१५॥

हे कामिनी ! तेरे गोल-गोले उठे हुए भारी कुच, चञ्चल नेत्र, चपल भ्रूलता और रागपूर्ण नवीन पत्तों, सदृश लाल होंठ—अगर रसिकों के शरीर में वेदना करें तो कर सकते हैं; पर यह समझ में नहीं आता कि कामदेव के निज हाथों से लिखी—सौभाग्य की पंक्ति-सी—रोमावली, मध्यस्थ होने पर भी, क्यों चित्त को सन्तप्त करती है ॥१५॥

खुलासा—सुन्दरी के गोल-गोल पुष्ट और उठे हुए कुचों; चंचल नेत्रों, चपल भौंहों और सुर्ख होठों से कामियों को जो सन्ताप होता है, उसका होना तो स्वाभाविक ही है; उसकी हमें कुछ शिकायत नहीं। शिकायत है हमें उस रोमावली की—बालों की कतार की, जो सुन्दरी के पेडू पर, नाभि के जरा ऊपर, मध्यस्थ की तरह, बीच में सुशोभित है और जो स्वयं पुष्पायुध कामदेव के करकमलों द्वारा, सौभाग्य के विशेष चिह्न की तरह, लिखी गई है। शिकायत क्यों है ? शिकायत इसलिये है, कि वह मध्यस्थ होकर भी चित्त को सन्ताप देती है। यह प्रसिद्ध बात है कि मध्यस्थ सन्ताप का कारण नहीं होता।

अरुण अधर कुच कठिन दृग, भौंह चपल दुख देत।
सुथिर रूप रोमावली, ताप करत किहि हेत ॥१६॥

सार—स्त्रियों का अङ्ग-प्रत्यङ्ग, यहाँ तक कि एक-एक बाल, पुरुष के मन में सन्ताप पैदा करता है। विशेष क्या, 'स्त्री' नाम ही सन्तापकारक है।

15. If a woman's high breasts, restless eyes, moving brows and the two lips like new leaves give pain to a lustful man, they are justified in doing so. But it is incomprehensible,

why that line of hair which passes through the middle of the women's belly (as if Kamdev, the god of love, has written the "Good fortune" in his own hands) aggravates the pain which, as an arbitrator, it should abate

गुरुणा स्तनभारेण मुखचन्द्रेण भास्वता।
शनश्चराध्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव सा ॥१६॥

वह स्त्री, गुरु स्तनो के भार से, भास्कर के समान प्रकाशमान मुखचन्द्र से और शनैश्चर के सदृश मन्दगामी दोनो चरणो से ग्रहमयी सी मालूम होती* ॥१६॥

खुलासा—वह स्त्री अपने पूर्णोन्नत वृहस्पति के समान दोनो कुचो से, सूर्य के समान प्रकाशमान मुखचन्द्र से और मन्दगामी शनैश्चर के समान धीरे-धीरे चलने वाले दोनो चरणकमलो से ग्रहपुञ्ज या गैशन मजमा-उल—नजूम-सी जान पड़ती है।

वृहस्पति, चन्द्रमा, सूरज और शनैश्चर—इन तेजस्वी ग्रहो के चिन्ह स्त्री मे पाये जाते हैं। इसीसे कवि महोदय कहते हैं कि वह कामिनी ग्रहमयी-सी शोभित होती है। उसके स्तनद्वय गुरु—भारी हैं मुख सूरज और चांद सा प्रकाशमान है और चरण मन्दगामी शनैश्चर की तरह मन्दगामी है। स्पष्ट है कि उसके शरीर मे सभी तेजस्वी ग्रहो का निवास है अथवा नवग्रह उसके सेवक हैं, अतएव स्त्री के होते नवग्रहो के पूजन की जरूरत नही, क्योकि एकमात्र उसकी पूजा-आराधना से सभी फलो की प्राप्ति हो सकती है।

श्रीहारग्रेव नामक एक पाश्चात्य विद्वान भी स्त्रियो को आकाश के सितारो की तरह पृथ्वी के सितारे कहते हैं। आप लिखते हैं :—

---

*गुरु, भास्वान् प्रभृति शब्दो क दो-दो अर्थ हैं। जैसे, गुरु—भारी और वृहस्पति। चन्द्रमा—चन्द्रवत् और चन्द्रमा। भास्वान्–प्रकाशमान और सूरज। शनैश्चर—मन्दगामी और शनैश्चर। सनीचर मन्दगामी प्रसिद्ध है।

दुनियाँ में आकर, स्त्रियों के नितम्ब सेवन करने चाहिए या पर्वतों के नितम्ब*, अर्थात् उन्हें संसार में आकर पर्वत-गुहा में वास करना चाहिए अथवा मोटी-मोटी जाँघों, कठोर कुचों और स्थूल नितम्बों वाली स्त्रियों के साथ भोग विलास करना चाहिए।

स्त्री-भोग और हरि-भजन—ये दोनों ही काम निस्सन्देह उत्तम हैं। संसारियों के लिए पहला और संसार से उदासीनियों के लिये दूसरा अच्छा है। जिन्हें नवयुवती स्त्रियों का भोग-विलास पसन्द हो, वे धनार्ज्जन करें; और उन्हें भोगें; पर साथ ही पुण्य-संचय भी करें; ताकि उन्हें इस सफर के बाद, अगले मुकाम पर भी, यानी आगे होने वाले जन्म में भी, फिर मृगनयनी स्त्रियाँ और अन्यान्य सम्पदायें मिलें। पर इस भोग-विलास में बारम्बार मरने और जन्म लेने का घोर कष्ट है। अतः जो जन्ममरण के कष्टों से बचना चाहें, अनन्त काल स्थायी सुख भोगना चाहें, वे सुन्दरी-से-सुन्दरी स्त्री को पापों की खान, दुःखों की मूल और नरक की नसैनी समझ, निर्जन गहन वन में जा, किसी पर्वत की गुफा में बस, सर्व मनोरथदाता पद्मपलाशलोचन हरि का एकाग्र चित्त से ध्यान करें।

नीच वचन सुन अनख तज, करहु काज लहि भेव।
कै तो सेवो गिरिवरन, कै भामिनि-कुच सेव ।१८।

सार—संसारियों के लिए नवयुवतियों को भोगना और विरक्तों के लिए पर्वत-गुहाओं में हरि-भजन करना उचित है। जो इन दोनों में से एक भी काम नहीं करते, उनका जन्म लेना वृथा है।

19. O learned men, tell us without any jealousy and with fair consideration whether it is desirable to dwell on an d enjoy the middle part of a mountain or to enjoy the hips

*नितम्ब के दो अर्थ हैं—(१) पर्वत का बीच का भाग। (२) कमर का पिछला हिस्सा यानी चूतड़।
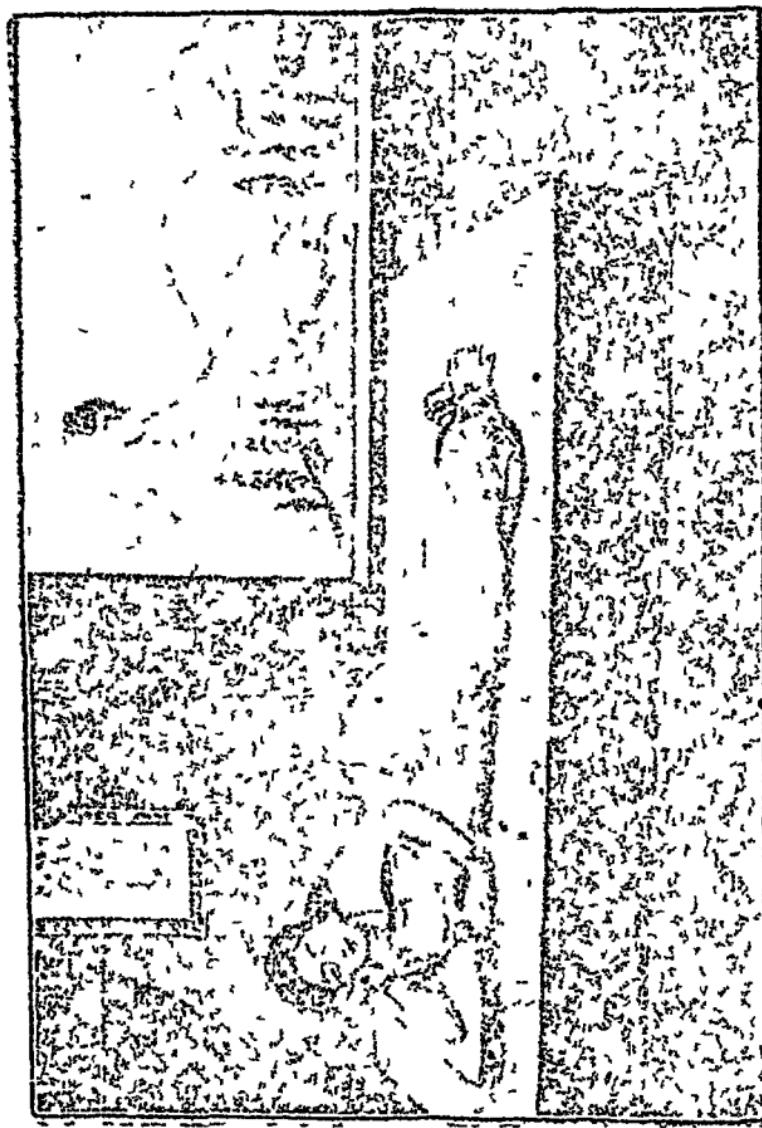
इस लोक में जन्म लेकर पुरुषों को पर्वतों के नितम्ब सेवन करने चाहिए अथवा कामदेव की उमङ्ग में मुस्कराती हुई विलासवती तरुणी स्त्रियों के नितम्ब ।

वन के वृक्षों की छाया में वारम्बार विश्राम करती हुई, वह विरहिणी स्त्री, अपने कोमल शरीर की रक्षा के लिए, अपना आँचल हाथ में उठा, उससे चन्द्रमा की किरणों को रोकती हुई घूम रही है ॥२२॥

खुलासा—वह विरहिणी स्त्री इतनी नाजुक है, कि सूरज तो सूरज, चन्द्रमा की शीतल किरणों की रोशनी को भी वर्दाश्त नहीं कर सकती। चन्द्र-किरणों से उसके नाजुक और सुकुमार शरीर को कष्ट न हो, इसीलिए उसने अपना आँचल मुँह के सामने कर रखा है। नजाकत के मारे ही वह जरा चलती है और फिर वृक्षों की छाया में सुस्ताने लगती है। इस नजाकत का क्या ठिकाना है !

कवियों की महिमा अपार है। लोग जिस किसी की तारीफ करने लगते हैं, उसे चरम को पहुंचा देते हैं। महाकवि मीर किसी नाजनी की नजाकत पर क्या खूब कहते हैं—

लपेटे जो चोटी पै फूलों के हार।
नजाकत से दुहरी कमर हो गई॥

वह नाजनी इतनी नाजुक थी कि उसने अपनी चोटी पर जो फूलों के हार लपेटे, तो मारे बोझ के उसकी कमर बल खा गई।

महाराजा भर्तृहरि की विरहिणी नायिका तो चन्द्रमा की शीतल किरणों को सह नहीं सकती और, महाकवि मीर की नायिका की कमर, चोटी पर फूलों के हार लपेटने से ही दुहरी हो गई। गजब की शायरी है। नजाकत और सुकुमारता की हद हो गई।

पण्डितेन्द्र जगन्नाथ को तो अपनी नायिका की नजाकत की तारीफ करने के लिए कोई उपमा नहीं मिलती। आप कहते हैं—

नितरां परुषा] सरोजमाला न मृणालानि विचारपेशलानि।
यदि कोमलता तवाङ्गकानामथ का नाम कथापि पल्लवानाम्॥
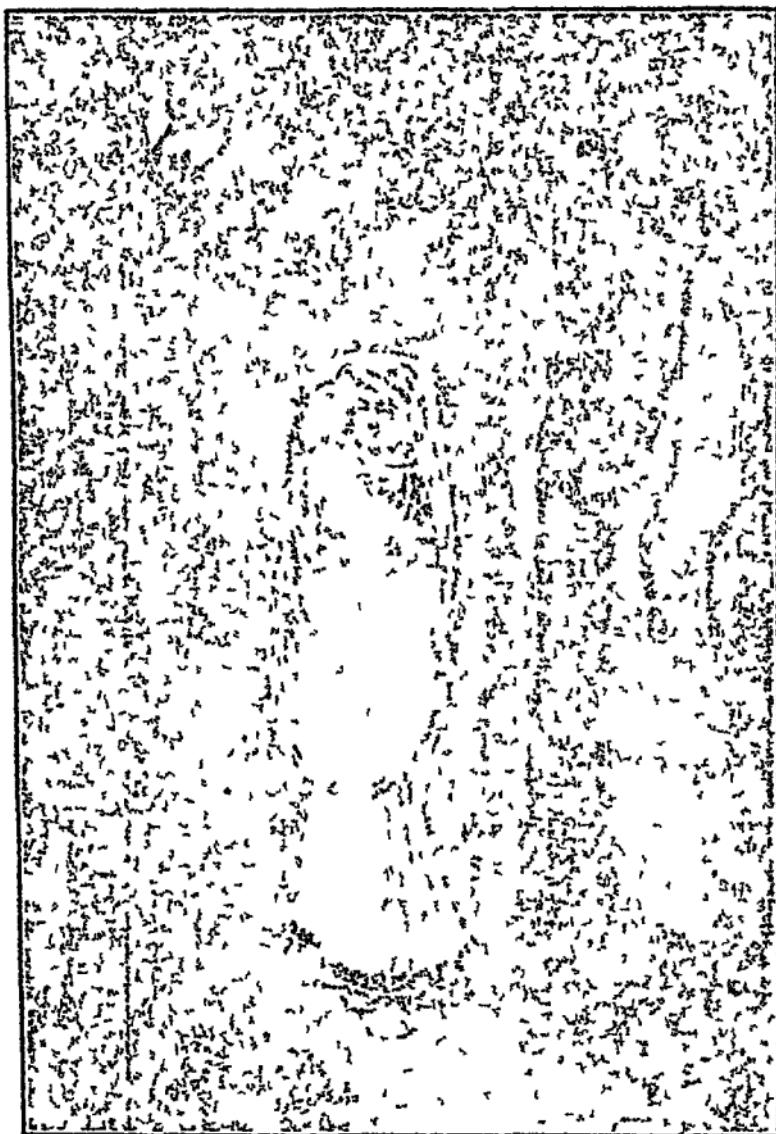
वन के वृक्षो की छाया मे विश्राम करती हुई विरहिणी स्त्री, अपने नाजुक शरीर की रक्षा के लिये, आँचल हाथ मे उठा, उससे चन्द्रमा की किरणो को रोकती हुई, वन मे जा रही है।

में प्रीति ही क्यों हो। जब विषयों से प्रीति ही न होगी, तब कोई भी अनर्थ हो न सकेगा।

स्त्री को एक बार देख लेने पर, उसे बार-बार देखने को मन चाहता है। बस, यहीं से सिर पर भूत सवार हो जाता है। इसलिए, जिनको जन्म मरण के जंजाल से बचना हो, जिनको दुर्लभ मोक्ष-पद लाभ करना हो, जिनको अक्षय सुख भोगना हो, वे ऐसे निर्जन वन में जाकर रहें जहाँ इन ललित ललनाओं के दर्शन ही न हों। जब ये मोहिनी दीखेगी ही नहीं, तो मन कैसे चलेगा? न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

बिन देखे मन होय, वाय कैसे कर देखैं।
देखे तें चित्त होय, अङ्ग आलिङ्गन सेषैं॥
आलिङ्गन तें होत याहि तनमय कर राखैं।
जैसे जल अरु, दूध, एकरस-त्यों अभिलाषैं॥
मिल रहे तऊ मिलवो चहत, कहा नाम या विरह को।
बरन्यो न जात अद्भुत चरित, प्रेम-पाठ की विरह को॥२३

सार—नवयुवती कामिनी के बगल में आने पर, उसे कोई भी कामी पुरुष, क्षणभर को भी छोड़ना नहीं चाहता; अथवा एक बार स्त्रियों का चन्द्रानन देख लेने पर, उनके फन्दे में न फँसना असम्भव है।

22. So long as I do not see her, I desire to see her; but having seen her, I long to embrace her and after having embraced her, I desire that there may not be seperation from her, whose eyes become extended at the time of embraced union.

●

मालतीझिरसि गृम्भणोन्मुखी चन्दनं वपुषि कुंकुमान्वितम्।
वक्षसि प्रियतमा मनोहरा स्वर्ग एष परिशिष्ट आगतः॥२४॥

मालती के अधखिले सुगन्धित फूलो की माला गले में पडी हो, केसर-मिला चन्दन शरीर मे लगा हो और हृदयहारिणी प्राणप्यारी छाती से चिपटी हो, तो समझ लो कि स्वर्ग का शेष सुख यही मिल गया ॥२४॥

खुलासा—गले में ही, खिलने वाले मालती के फूलो की माला पहनना, केसर और चन्दन शरीर मे लगाना और मनोहर प्यारी को छाती से लगाना—स्वर्ग सुख है। जिन्हें इस पाप-ताप पूर्ण ससार मे यह सुख प्राप्त हो, उनके लिये यही इस पृथ्वी पर ही स्वर्ग है। स्वर्ग मे इससे अधिक और कुछ नहीं है।

पण्डितराज जगन्नाथ महोदय कहते हैं—

विधाय सा मद्वदनानुकूलं कपोलमूलं हृदये शयाना।
तन्वी तदानीमतुलां बलारेः साम्राज्यलक्ष्मीमधरीचकार ॥

मेरी छाती पर सोने वाली सुन्दरी ने जब अपनी चिबुक-ठोडी मेरे मुँह पर, जहाँ वह रखी जानी चाहिये थी वही रखी, तब महेन्द्र की अतुल राजलक्ष्मी का सुख भी मुझे तुच्छ प्रतीत होने लगा।

किसी ने खूब और सच कहा है—

संसारे तु धरा सारं धराया नगरं मतम् ।
आगारं नगरे तत्र सारं सारङ्गलोचना ॥
सारङ्गलोचनायाञ्च सुरते सार मुच्यते ।
नातः परतरं सारं विद्यते सुखदं नृणाम् ॥
सारभूतन्तु सर्वेषां परमानन्दसोदरम् ।
सुरतं ये न सेवन्ते तेषां जन्मैव निष्फलम् ॥

ससार मे पृथ्वी सार है, पृथ्वी पर नगर सार है। नगरो मे घर सार है और घर मे मृगनयनी कामिनी सार है। मृगनयनी में सुरत*—सम्भोग सार

---

*सुरत—स्त्री-पुरुष का सम्भोग, रतिकर्म, मैथुन। इसे अँगरेजी मे Copulation या Coitus कह सकते हैं, क्योंकि सुरत के समय स्त्री-पुरुष एक हो जाते या एक दूसरे मे मिल जाते हैं।

यह समय और अवस्था ही काम-क्रीड़ा के लिए उचित है। कामोन्मत्ता नारी को जो चतुर भोगता और सन्तुष्ट करता है, वह भाग्यवान है और स्त्री भी ऐसे पुरुष की दासी हो जाती है। अगर स्त्री अपने-आप ऐसी कामोन्मत्ता नहीं होती, तो कोक-कलाविद चतुर रसिक पुरुष चुम्बन-मर्दन आदि तरकीबों से उसे काम-मद से मतवाली कर लेते हैं।

मृगनैनी आलस भरी, सुरत सेज सुख साज।
पूजहिं दम्पति काम मिलि, करहिं सुमंगल काज ॥२७॥

27. The pleasure arising out of sexual intercourse with a lady with her eyes partly closed is known to both man and woman as the result of mutual intercourse and is their duty.

★

इदमनुचितमक्रमश्च ...... पुंसां
यदिह जरास्वपि मान्मथा विकाराः।
यदपि च न कृतं नितम्बिनीनां
स्तनपतनावधि जीवितं रतं वा ॥२७॥

विधाता ने दो बातें बड़ी अनुचित की हैं:—(१) पुरुषों में, अत्यन्त बुढ़ापा होने पर भी, काम-विकार का होना; (२) स्त्रियों का स्तन गिर जाने पर भी ज़ीवित रहना और काम-चेष्टा करना ॥२८॥

खुलासा—ब्रह्मा को उचित था कि वह बूढ़ों में काम विकार न प्रकट होने देता और स्त्रियों को तभी तक जीवित रखता, जब तक कि उनके कुच युगल सुन्दर, सघन और कठोर रहते। बुढ़ापे में काम-विकार का प्रगट होना और स्तनों को सुकड़ जाने, गिर जाने अथवा थैलों की तरह लटक जाने पर भी स्त्रियों का जिन्दा रहना और काम-चेष्टा करना, दोनों ही विड़म्बना मात्र हैं। जवानी जाते ही पुरुष की और स्तन गिरते ही स्त्री की काम-चेष्टा रसिकों के मन में खटकती है।

जब तक स्त्री के कुच छोटी-छोटी नारंङ्गियों, अथवा अनारों या कच्चे-कच्चे सेबो की तरह रहते हैं, तभी तक स्त्री-भोग मे आनन्द है, स्तन गिर जाने पर मजा नही। किसी ने इन कई बातो के लिए ब्रह्मा को दोषी ठहराया है।

कहा है :—

शशिनि खलु कलङ्क कण्टक पद्मनाले
युवतिकुचनिपातः पक्वता केशजाले।
जलधिजलमपेय पण्डिते निर्धनत्व
वयसि धनविवेको निर्विवेको विधाता ॥

चन्द्रमा मे कलङ्क, पद्मनाल में कांटे, युवतियो के स्तनो का गिरना और बालो का पकना, समुद्र का जल का खारा होना, पण्डितो का निर्धन होना और बुढापे मे धन की चिन्ता—ये सब ब्रह्मा की मतिहीनता के परिचायक है।

विधिना द्वै अनुचित करी, वृद्ध नरन तन काम।
कुच ढरकतहु जगत मे, जीवित राखी वाम ॥२८॥

सार—स्त्री-सम्भोग का आनन्द पुरुष की जवानी मे और स्त्री के कुचो के कठोर और सघन बने रहने तक ही है।

28, It is very improper and contradictory that males are subject to passions in old age and it is very improper and contradictory that females were not made to live and to have sexual intercourse only up to the time when their breasts are protuberant

एतत्कामफलं लोके यद्द्वयोरेकचित्तता।
अन्यचित्तकृते कामे शवयोरिव सङ्गमः ॥२९॥

समागम के समय स्त्री-पुरुष का एकचित्त हो जाना ही काम का फल है। यदि समागम मे दोनो का चित्त एक न हो, तो वह समागम समागम नही, वह तो मृतको का-सा समागम है ॥२९॥

किसी ने कहा है—

सुरते च समाधौ च मनो यत्र न लीयते ।
ध्यानेनापि हि किं तेन किं तेन सुरतेन वा ॥

सुरत के समय सुरत में और समाधि के समय समाधि में यदि मन लीन न हो जाय चित्त उन्हीं कामों में गर्क न हो जाय, तो उस सुरत और समाधि से कोई लाभ नहीं। स्त्री-पुरुष के समागम के समय, दोनों का एक दिल हो जाना परमावश्यक है। दोनों का दिल एक हुए बिना कुछ आनन्द नहीं। यदि एक का दिल कहीं, और दूसरे का कहीं हो और संगम किया जाय, तो उस संगम को स्त्री-पुरुष का संगम नहीं, बल्कि दो लाशों का संगम कह सकते हैं।

समागम के समय दोनों में से किसी का भी चित्त समागम के लिए उत्कण्ठित न हो, तो समागम न करना चाहिये। वैसे समागम से आनन्द नहीं आता और वृथा बल क्षीण होता है। अगर एक का दिल हो और दूसरे का न हो तो जिसका दिल हो उसे दूसरे का काम जगाना उचित है। जब दोनों ही कामोन्मत्त होंगे तब अवश्य दोनों ही के दिल एक हो जायँगे। अगर चित्त उद्विग्न हो; मन मलीन हो, और उद्विग्नता दूर न हो सकती हो, तो समागम न करना ही अच्छा है।

बोसा या चूमा वह शै है, जिसमें चूमने वाले और चूमे जाने वाले दोनों को ही आनन्द आता है। ऐसा हो नहीं सकता कि एक को आनन्द आये और दूसरे को न आये।

कवि ने कहा है—

मुँह पै मुँह रखके लिपट जाय तुम्हारे सिदके।
बोसा वह शै है जो दोनों को मजा देता है॥

निश्चय ही, चुम्बन से दोनों को आनन्द आता है, लेकिन अगर एक का दिल हो और दूसरे का दिल न हो, एक की इच्छा न हो और दूसरा जबर्दस्ती करे तो किसी को भी आनन्द नहीं आने का। पुँश्चली या पर-पुरुषरता स्त्रियाँ अपने पतियों को नहीं चाहतीं; पर उनके पति काम-शास्त्र के पण्डित न होने की

वजह से, उनको नही पहचानते, उन्हें अपने से विरक्ता और पर-पुरुषरता नही समझते। इसलिए, जब वे उन्हें चूमते हैं, तब, वे मन न होने पर भी इन्कार तो नही करती, पर तुरन्त ही गाल को पोछ डालती हैं। इस तरह पुरुष और स्त्री किसी को भी चुम्बन का आनन्द नही आता।

महाकवि 'अकबर' कहते है—

खैर चुप रहिये, मजा ही न मिला वोसे का।
मैं भी बेजुल्फ हुआ आपके झुँझलाने से॥

आपके झुँझलाने से, आपके वे-मन होने से, चुम्वन का मजा न मुझे आया न आपको*। अब खामोश रहिये, और झुँझलाने से क्या फायदा? आपने झुँझलाकर, एक दिल न होकर, चुम्वन का सारा मजा मिट्टी कर दिया।

सारांश—जिस तरह चुम्वन के समय एक दिल न होने से चुम्वन का आनन्द नही आता, उसी तरह एक दिल हुए विना समागम करने से समागम

---

*नाभिपश्यति भर्त्तारं नोत्तरं सम्प्रतीच्छति।
वियोगे सुखमाप्नोति संयोगे चाति सीदति॥
शय्यामुपगता शेते वदनं मार्ष्टि चुम्बने।
तन्मित्रं द्वेष्टि मानंच विरक्ता नाभिवाछति॥

जो स्त्री अपने पति के सामने नही देखती, उसमे आँखें नही मिलाती, उसकी पूछी हुई वात का जवाव नही देती, पति जव तक घर मे रहता है, दुखी रहती और भुनभुनाती फिरती है, जव पति घर से वाहर चला जाता है, तव खुश होकर उछलती-कूदती फिरती है, अव्वल तो पति के साथ एक पलँग पर नही सोती, अगर मजवूरी से सो भी जाती है, तो करवट ले जाती है और पति के चूमने पर गाल को पोंछ डालती है, पति के मित्र से द्वेप रखती है और पति के दिल से चाहने पर भी उससे नाराज ही रहती है—उसे 'पतिध्रुक या पति-द्रुहा' कहते हैं। ये पति को न चाहने वाली, उससे वैर-विरोध रखने वाली स्त्रियो के लक्षण है।

का कुछ भी आनन्द नहीं आता। वैसा समागम तो समागम नहीं—दो लाशों का मिलना है।

समागम के समय दोनों के दिलों का एक होना वहुत जरूरी है; इसी गरज से रतिशास्त्र के ज्ञाताओं ने स्त्री-पुरुषों के परस्पर काम जगाने को अनेक तरकीवें लिखी हैं, क्योंकि विना परस्पर काम जगाये कोई लाभ नहीं। स्त्री के किस अंग में किस दिन काम रहता है, अथवा स्त्री काममद से किस वक्त या किस ऋतु में मतवाली होती है और वह काम किस तरह जगाया जाता है—ये वातें चतुर पुरुषों को जाननी चाहियें। काम जगाने की सवसे अच्छी विधि चुम्वन करना अथवा स्तनों के अगले भागों—वीठनियों, काली-काली घुण्डियों को धीरे-धीरे मलना है। चुम्वन करते ही और वीठनियों को धीरे-धीरे मलते ही स्त्री के नेत्र लाल हो जाते हैं, साँस गरम होकर वड़े जोर से चलने लगती है और स्त्री सिसकियाँ भरने लगती है। जव स्त्री सिसकियाँ भरने लगे और शर्म छोड़कर पुरुष से छेड़-छाड़ करे, तव समझना चाहिये कि काम-चैतन्य हो गया। वही समय सुरत या मैथुन के लिये उत्तम है और वैसे समय में ही गर्भ रह सकता है। जो पुरुष इस तरह काम चैतन्य करके काम-क्रीड़ा करता है, स्त्री उसकी क्रीत-दासी या जरखरीद गुलाम हो जाती है। देखते हैं, वैल, ऊँट, घोड़े और गधे प्रभृति पशु भी पहले चाट-चूमकर सम्भोग करते हैं, तव मनुष्य में तो उनसे कुछ विशेषता होनी ही चाहिये। परमात्मा ने उन्हें वुद्धि दी है और अनुभवी पुरुषों ने इस विषय पर "अनङ्ग-रङ्ग", "पञ्चशायक", "कोकशास्त्र" "लज्जतुल-निशा" प्रभृति अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। सन्तरे को वन्दर विना छीले खाता है और चतुर मनुष्य उसे छीलकर और उसका जीरा निकालकर खाता है। प्रत्येक काम के करने की कुछ खास-खास तरकीवें हैं। तरकीवों के साथ जो आनन्द आता, वह विना तरकीवों के नहीं आता*

हमें फिर कहना पड़ता है कि विना तरकीव जाने जो भी काम कि

---

*ये सव कोक-सम्वन्धी विषय अगर देखने का शौक है, तो आप हमारे लिखी "स्वास्थ्य रक्षा" देखें। मूल्य १८) रु०

जाते हैं, उनमें सफलता नही होती। चतुर और फूहड़ दोनो ही तरह की स्त्रियाँ खाना पका लेती हैं, पर चतुर का वनाया हुआ खाना जैसा स्वादु और मजेदार होता है, वैसा फूहड़ का नही होता। हाँ, पेट दोनों ही तरह के भोजनो से भर जाता है। चतुर के वनाये भोजन से तवीयत जैसी खुश होती है; गँवारी के वनाये हुए से वैसी नही होती। काम-शास्त्र का अभ्यासी जिस तरह सम्भोग करता है, गँवार उस तरह कर नही सकता। हाँ, सन्तान दोनो के ही हो जाती हैं। चतुरा के वनाये हुए भोजन खाने से रस ठीक बनता है और किसी तरह का रोग नही होता; क्योंकि वह आसानी से पच जाता है, पर गँवारी की मोटी-मोटी कच्ची या जली हुई रोटियो से अजीर्ण होता, पेट मे पीडा होती और पाक ठीक न होने से रस भी ठीक तौर से नही वनता। इसलिये, वल वढने के वजाय उल्टा घटता है। कामशास्त्र का अभ्यासी जो सम्भोग करता है, उससे स्त्री-पुरुष दोनो को परमानन्द की प्राप्ति होती है, वल घटने नहीं पाता और रोग पास फटकने की हिम्मत नहीं करते। सन्तान भी सुन्दर, रूपवान, वलवान, और विद्वान् तथा वुद्धिमान होती है। किन्तु गँवार, अनजान होने की वजह से सम्भोग मे ऐसे काम कर वैठता है, कि जिनसे उसका वल क्षीण होता, प्रमेह, सोजाक, नपुंसकता और उपदंश आदि रोग पैदा हो जाते; तथा जो औलाद पैदा होती है, वह भी गँवार, मूर्ख, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाली, कुरूप और असमय मे ही मर जाने वाली पैदा होती है। इसलिये, विना कामशास्त्र का अभ्यास किये स्त्री-भोग करना, अपने जीवन को खराव करना और मृत्यु को न्यौता देकर वुलाना है।

किसी कवि ने कहा है—

दाम्पत्यसुखसिद्ध्यर्थं कामशास्त्रं समभ्यसेत्।
तदभ्यासादनिर्वाच्यममन्दानन्दमश्नुते ॥
कामशास्त्रविहीनानां रतिः पाशविकी मता।
तदभ्यासान्न सौख्यं स्यात् केवलं दुःखमाप्नुयात् ॥

अर्थात् स्त्री-पुरुष का सुख-भोगने के लिए कामशास्त्र का अभ्यास करना

जरूरी है। कामशास्त्र के अभ्यास से ही अनिर्वचनीय उत्तम आनन्द मिलता है। कामशास्त्र के बिना जाने-पढ़े जो भोग किया जाता है, वह तो पशुओं का-सा सम्भोग है। वैसे सम्भोग से सुख के बजाय दुःख ही होता है; यानी सुख नहीं होता, केवल दुःख होता है।

और भी कहा है—

रतिशास्त्रपरिज्ञानविमूढा ये नराधमाः।
रतिं स्वरतिहीनायां विधित्सन्ति गतायुषः॥
अवश्यं मरणं तेषां भवेदिति विनिश्चितम्।
अतोऽपि रतिशास्त्रस्य ज्ञानमावश्यकं मतम्॥

जो गतायु नीच नराधम, कामशास्त्र न जानने की वजह से, अपने तईं न चाहने वाली स्त्री से सम्भोग करते या करना चाहते हैं, उनकी उम्र कम हो जाती है, यानी वे निश्चय ही असमय में इस दुनिया से कूच कर जाते हैं, मर जाते हैं! इसलिए रतिशास्त्र का ज्ञान आवश्यक है।

कामशास्त्र से किन-किन बातों का ज्ञान होता है?

किं दाम्पत्यसुखं लोके कानि तत्साधनानि च।
कुमारी परिणीता तु कीदृशी सुखदा भवेत्॥
के च विस्रम्भणोपायास्तासामिह सुखावहाः।
प्रमदानां कथञ्चापि मदविद्रावणं भवेत्॥
कथं नष्टोऽनुरागश्च प्रत्यानेयो मनीषिभिः।
बन्ध्यायां मृतवत्सायामात्मजाप्तिः कथं भवेत्॥
सतीनां वनितानाञ्च लक्षणानीह कानि च।
पुंश्चलीनान्तु नारीणां परिज्ञानं कथं भवेत्॥
तासां विचेष्टितेभ्यश्च ह्यात्मानं रक्षयेत् कथम्।
कथं शरीरं सुरतायासितन्तु विलासिनाम्॥
नवयौवनकालीनसुरतक्षमतां व्रजेत्।
प्रेक्षावद्भिर्भिषग्वर्यैः प्रत्यहं सुपरीक्षिताः॥

गर्भसन्धारणोपाया के भवेयुः सुखप्रदाः ।
इत्येवमादयोऽवश्यं ज्ञातव्या विषयाश्च ये ।
तानविज्ञाय मूढात्मा कथं रतिसुखं लभेत् ॥

रतिशास्त्र से नीचे लिखी हुई बातो का ज्ञान होता है—

(१) स्त्री-पुरुष का सुख कैसा होता है, और उस सुख के भोगने के क्या-क्या उपाय या तरीके है ?

(२) कैसी कन्या से शादी करनी चाहिये, जिससे सच्चा दाम्पत्य-सुख मिल सके ?

(३) विवाह करके लाई हुई स्त्री मे कैसे विश्वास उत्पादन करना चाहिये, ताकि ससार मे सुख मिले ?

(४) स्त्रियो का मद कैसे उतारा जाता है अथवा उनका मदभञ्जन करने के क्या उपाय हैं ? वे कैसे द्रवित की जा सकती हैं ?

(५) रूठी हुई स्त्री किस तरह मनानी चाहिये, यानी मानिनी के मानमोचन के क्या तरीके हैं ?

(६) जिसके सन्तान नही होती या हो-होकर मर जाती है, उसके औलाद कैसे हो सकती है ?

(७) सती या पतिव्रता स्त्रियो के क्या लक्षण हैं, अर्थात् पतिव्रताओ की क्या पहचान है ?

(८) पुंश्चली या व्यभिचारिणी स्त्रियो के क्या लक्षण है, और उन दुष्टाओ की कुचेष्टाओं से पुरुष अपनी रक्षा कैसे कर सकता है ?

(९) अति सम्भोग प्रभृति से बलहीन हुआ शरीर फिर कैसे बलवान हो सकता है, फिर से नयी जवानी कैसे आ सकती है, वगैरा वगैरा ।

(१०) गर्भ धारण करने के क्या उपाय हैं और सुवैद्य गर्भ न रहने के कारणो को कैसे जान सकते हैं, इत्यादि ।

जो पुरुष इन अवश्यमेव जानने योग्य विषयो को नही जानते, उन्हे स्त्री-सम्भोग का सुख कैसे मिल सकता है ।

सारे कामशास्त्र का निचोड़ नीचे के दो श्लोकों में है और उसी एक बात के लिए "कामशास्त्र" जैसा बड़ा ग्रन्थ रचा गया है—

यद्यप्यष्टगुणाधिको निगदितः कामोऽङ्गनानां सदा ।
नो याति द्रवतां तथापि झटिति व्यायामिनां सङ्गमे ॥
प्रागेव पुंसः सुरते न यावन्नारी द्रवेद्भोगफलं न तावत् ।
अतो बुधः कामकलाप्रवीणैः कार्यः प्रयत्नो वनिताद्रवत्वे ॥

अर्थात्—यद्यपि स्त्री में पुरुष की अपेक्षा सदा आठ गुना काम कहा गया है, तो भी वह पुरुष-संगम से जल्दी स्खलित नहीं होती । सम्भोग करने से अगर स्त्री पहले स्खलित न हो; तो सम्भोग करना वेकार हुआ, उसका कोई फल न हुआ । इसलिये, कामकला जानने वाले चतुर पुरुष को, स्त्री के द्रवित*करने की चेष्टा में कोई उपाय उठा न रखना चाहिये ।

---

* द्रवित और स्खलित शब्द ऐसे हैं, जिनके कहने और लिखने में, आजकल, संस्कृत का अधिक प्रचार न होने से, लज्जा नहीं मालूम होती, अश्लीलता का उतना दोष नहीं आता । यद्यपि एटिकेट (etiquette) यानी अदव-आदाव या सौजन्य-शिष्टाचार हमें इतने से भी रोकता है, पर हमने अल्प शिक्षित भाइयों की खातिर से २५, २६, २७, और २९ संख्या के श्लोकों की टीका-टिप्पणी में एटिकेट का उतना ध्यान नहीं रखा है; जहाँ तक हमसे वना है, वहाँ तक हरेक वात खोलकर लिखी है और अपने को कानूनी पेचों से भी वचाया है ।

कामशास्त्र का विषय वहुत वड़ा है । उस पर अनेक वड़े-वड़े ग्रन्थ अँग्रेजी और संस्कृत प्रभृति भाषाओं में लिखे हुए हैं । हमने भी कामशास्त्र की जानने योग्य सभी वातें अपनी वनाई चिकित्सा-पुस्तक, 'स्वास्थ्यरक्षा' और 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' चौथे तथा पाँचवे भागों में लिखी हैं । हमने काम-शास्त्र पढ़ने की जरूरत यहाँ समझा दी है । जो लोग कामशास्त्र और वैद्यकशास्त्र नहीं पढ़ते, उनका इस दुनिया में आना और मनुष्य-चोला धारण करना वृथा है । कामशास्त्र और वैद्यकशास्त्र में कुछ नहीं । सच पूछो तो कामशास्त्र

नारि-समागम-कामफल, दुहु नहिं चित इक होय ।
जो कदु होय विभिन्नता, शव-संगम-सम जोय ॥२९॥

सार—सम्भोग-काल में, स्त्री-पुरुष के एक दिल होने में ही आनन्द है ।

29. *It is only when both the man and the woman are of the same mind that the sexual pleasures are the greatest If their minds are diverted, then the intercourse is like that of inanimate bodies.*

●

प्रणयमधुराः प्रेमोद्गाढा रसादलसास्तथा ।
भणितिमधुरा मुग्धप्रायाः प्रकाशितसम्मदाः ।
प्रकृतिसुभगा विश्रम्भार्हाः स्मरोदयदायिनो
रहसि किमपि स्वैरालापा हरन्ति मृगीदृशाम् ॥३०॥

मृगनयनी कामनियो के प्रणय-प्रीति से मधुर, प्रेम-रस से पगे, काम की अधिकता से मन्द, सुनने मे आनन्द-प्रद, प्राय. अस्पष्ठ और समझ मे न आने योग्य, सहज-सुन्दर, विश्वास-योग्य और कामोद्दीपन करने वाले वचन, यदि स्वच्छतापूर्वक एकान्त मे कहे जायँ, तो निश्चय ही सुनने वाले के मन को हर लेते हैं ॥३०॥

वैद्यक शास्त्र का ही अङ्ग है । लोग पहले शिकायत किया करते थे कि काम-शास्त्र और वैद्यकशास्त्र सरल सुवोध हिन्दी मे नहीं—इसलिए पढें तो क्या पढें । उन्ही की शिकायत रफा करने के लिए हमने समस्त आयुर्वेद-ग्रन्थो का नवनीत एक ग्रन्थ मे इकट्ठा किया है और उस ग्रन्थ का नाम रखा गया है 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' । इस ग्रन्थ के सात भाग हैं । हमारी राय में ये सातों ही भाग हर मनुष्य को आद्योपान्त पढ लेने चाहिये । जिस दिन भारत का प्रत्येक स्त्री-पुरुष उन सातो भागो को पढ-पढ कर गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करेगा, उस दिन का भारत और ही भारत होगा ।

खुलासा—कुरंग-नयनी तरुणियों को प्रेम-रस से पगी हुई मधुर-मधुर बातें रसिक पुरुषों के कानों में अमृत-सा ढालती हैं। मुझाये हुए पुष्प-रूपी प्राणों को खिलाती हैं, सारी इन्द्रियों को प्रसन्न करतीं और मन में रसायन का काम करतीं हैं। लेकिन जब वे एकान्तस्थल में स्वच्छन्दतापूर्वक कही जाती हैं, तब तो और भी गजब करती हैं। जिनसे ये कही जाती हैं; वे बात कहने वालियों के क्रीत-दास ही हो जाते हैं।

कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका की मीठी-मीठी बातें सुन कर महाकवि 'अकबर' के शब्दों में कहता है :—

बनोगे खुसरवे इकली में दिल शीरीजबाँ होकर।
जहाँगीरी करेगी यह अदा नूरेजहाँ होकर ॥

मीठी-मीठी बातें करने से तुम संसार के सभी लोगों के दिलों की रानी हो जाओगी। तुम्हारा यह गुण—मधुर भाषण, नूरजहाँ की तरह सारे संसार को फतह करेगा।

प्रणय-मधुर आलस भरे, सरस सनेह समेत।
मृगनैनिन के ये वचन, हरत चित्त कों लेत ॥३०॥

सार—सुनयनाओं की मधुर-मधुर बातों में जादू की-सी शक्ति होती है। उनकी अमृत भरी बातों पर कामी पुरुष लट्टू हो जाते हैं।

30. Ladies with beautiful eyes always attract the mind by their unrestrained conversation which is sweet because of softness, full of love, very pleasing to the ear on account of delicacy, gives rise to joy, is naturally soothing and confiding and which arouses passions.

●

आवासः क्रियतां गाङ्गे पापाहारिणि वारिणी।
स्तनमध्ये तरुण्या वा मनोहारिणि हारिणि ॥३१॥

या तो पाप-ताप-नाशिनी गंगा के किनारो पर ही बसना चाहिये, या मनोहर हार पहने हुई तरुणी स्त्रियो के मध्य मे ही बसना चाहिये।

खुलासा—दो मे से एक काम करना चाहिये—या तो पापहारिणी गगा के किनारे बैठकर शकर का भजन करना चाहिए, या मोतियो के हार धारण करने वाली हृदय हारिणी कामिनियो के कठोर कुच का सेवन करना चाहिए।

इस जगत मे, कामी पुरुषो के लिए नवयुवतियो के कठोर कुच-युगल और सघन स्थूल जघाओ से बढ कर सुखदायी और दूसरा पदार्थ नही है; इस लिये वे उन्ही का सेवन कर अपना मनुष्य-जन्म सफल करें। पर जिन्हें इस ससार की असारता और चचलता का ज्ञान हो गया है, जिन्हे रूप-यौवन की अनित्यता का हाल मालूम हो गया और इसलिये कामनियो से घृणा हो गई है, उन्हें सब द्विविधा त्याग, कही निर्जन और रमणीक स्थान मे, गगा के तट पर पर्णकुटी बना, शिव-शिव रटना चाहिए। कामनियो के भोगने से यहाँ अपूर्व सुख की प्राप्ति होगी, पर परलोक मे दुःखो का सामना करना पडेगा। मगर सबको तज, गगा किनारे जा, हरि भजन करने से यहाँ भी सुख-शान्ति मिलेगी और वहाँ भी। पाठको के समक्ष दोनो राहें हैं। अब उन्हे जौन-सी राह पसन्द हो उसे ही चुन लें। त्रिशकु की तरह बीच मे लटकना और 'इधर के रहे न उधर के रहे न खुदा ही मिला न बिसाले सनम' वाली कहावत चरितार्थ करना भला नही।

वास कीजिये गंग तट, पाप निवारत वारि।
कै कामिनी कुच जुगल को, सेवन करहु विचारि ॥३२॥

सार—गङ्गा तट पर बसना और कामनियो के कठोर कुचो का सेवन करना—ये दो ही काम जगत मे मुख्य है। विचारवान विचारकर, इनमे से किसी एक को चुन लें।

31 Let one take rest either on the bank of the river

Ganga whose water clears away the sin; or between the breasts of a woman which are very attracting and where the breast-chain is lying.

⊙

प्रियपुरतो युवतीनां तावत्पदमातनोतु हृदि मानः।
भवति न यावच्चन्दनतरुसुरभिर्मधुसुनिर्मलः पवनः ॥३२॥

मानिनी-कामिनियों के हृदयों में अपने प्यारों के प्रति मान तभी तक ठहरता है, जब तक चन्दन के वृक्षों की सुगन्धि से पूर्ण मलयाचल की वायु नहीं चलती ॥३२॥

खुलासा—मानिनियों के मन में उसी समय तक मान रहता है, और उसी समय तक उनकी भृकुटियाँ टेढ़ी रहती हैं, जब तक कि चन्दन के वृक्षों की सुगन्धि से मिली हुई वायु उनके कोमल शरीरों में नहीं लगती।

आम की मनोहर मंजरियाँ, सुनिर्मल चन्द्रमा, कोकिल, भौंरे और मलय-पवन तथा वसन्त—ये सब कामदेव के साथी और उसके अस्त्र-शस्त्र हैं। वह इन्हीं से त्रिलोकी को वश में करता है।

मानिनी कैसी ही कठोर क्यों न हो, किसी तरह मनाये न मानती हो; तो भी, वह कोयल के कुहुकने, मलय-पवन के चलने या घटाओं के छा जाने से शीघ्र ही मान छोड़, अपने प्रीतम की गोद में आ जाती है। जो कामिनी पुरुष की अनेक तरह की खुशामदों से भी राजी न होती हो, वह मलय-पवन प्रभृति की मदद से सहज ही में राजी हो जाती है। कवि ने ठीक ही कहा है कि मानिनी का मान तभी तक है, जब तक मलयाचल की हवा नहीं चलती। उसके चलते ही मानिनी आप खुशामद करने लगती है; क्योंकि वसन्त में मलयाचल की ओर की हवा चलती है और वह स्त्रियों के दिलों में बड़ी गुदगुदी पैदा करती है। इसी से आयुर्वेद के आचार्यों ने वसन्त में रात-दिन स्त्री

पुरुषो के अङ्ग मे कामदेव का रहना लिखा है। इस मौसम मे, मनहूस का भी काम जाग उठता है और रूठी हुई *स्त्रियाँ सहज मे मान जाती हैं।

तब ही लो मन मान यह, तब ही लो भ्रू भग।
जौ लो चन्दन सो मिल्यो, पवन न परसत अङ्ग ॥ ३२

सार—मलय पवन के चलते ही मानिनी स्त्रियाँ आप ही सीधी हो जाती है।

52 The pride of a woman before her lover remains only so long as the pure spring air bearing the sweet smell of sandal, does not touch her body.

---

*कामशास्त्र मे स्त्री के नाराज या उदासीन के सम्बन्ध मे लिखा है—

कार्पण्यादतिमानरोगविरहोद्योगादिपारुष्यतो
मालिन्यासममज्ञताद्विभयतः शोकाद्दरिद्रादपि
भर्तृणाँ तनुतादिभिश्च वपुषः काठिन्यतः शकुना
दोषाणाञ्च वृथा प्रयाति वनितावैराग्यमुच्चैः सदा ॥

पति की अत्यन्त कजूसी, पनि का ज्यादा प्यार करके सिर पर चढा लेना, पति का सदा रोगी बना रहना, पति का निखट्टू या पुरुषार्थ-हीन होना, पति का उम्र, यौवन, विद्या बुद्धि और कुल-शील आदि मे पत्नी के समान न होना, पति की मूर्खता, पति और सास-ससुर आदि का अत्यन्त भय, शोक, दरिद्रता पति के शरीर की सख्ती और कठोरता, पति का अधिक शकायुक्त रहना और व्यभिचार या छिनाले की झूठी तहमत लगाना—प्रभृति कारणो से स्त्रियाँ अपने पतियो से अक्सर विरक्त, उदासीन, नाराज या असन्तुष्ट रहती हैं। जिन पुरुषों को स्त्री सुख की जरूरत हो, उन्हें उपर्युक्त कारण यथासाध्य दूर करने की चेष्टा करनी चाहिये। ऐसा करने से ही स्त्री चाहने लगेगी।

ऋतु-वर्णन

वसन्त-महिमा

परिमलभृतो वाताः शाखा नवांकुरकोटयो
मधुरविरुतोत्कण्ठा वाचाः प्रियाः पिकपक्षिणाम् !
विरलसुरतस्वेदोद्गारा वधूवदनेन्दवः
प्रसरति मधौ रात्र्यां जातो न कस्य गुणोदयः ।।३३।।

जबकि सुगन्धियुक्त पवन चला करता है, वृक्षों की शाखाओं में नये-नये अंकुर निकलते हैं, कोकिला मदमत्त या उत्कण्ठित होकर मधुर कलरव करती है, स्त्रियों के मुखचन्द्र पर मैथुन के परिश्रम से निकले हुए पसीनों की हल्की-हल्की धारें मजा देने लगती हैं, उस वसन्त की रात में, काम किसे पीड़ित नहीं करता ।।३३।।

खुलासा—वसन्त कामदेव का साथी और ऋतुओं का राजा है । इस ऋतु में सुगन्ध-मिश्रित पवन चलने लगते हैं । शाखा-प्रशाखाओं में नवीन पत्रांकुर शोभा देने लगते हैं । चारों ओर फूल खिलते हैं । कोकिल मधुर कलरव करता है । साँझ सुहावनी और दिन रमणीय होने लगते हैं । स्त्रियाँ अनुरागिनी होने लगती हैं । बहुत क्या—इस ऋतु में सभी पदार्थों में मनोहरता आ जाती है ।

हम अपने पाठकों के मनोरंजनार्थ महाकवि कालिदास-विरचित 'ऋतु-संहार' से चन्द सुन्दर-सुन्दर पद्य उद्धृत करते हैं ।

आकम्पितानि हृदयानि मनस्विनीनां
वातैः प्रफुल्लसहकारकृताधिवासैः ।
सम्बाधितस्परभृतस्य मदाकुलस्य
श्रोत्रप्रियैर्मधुकरस्य च गीतनादैः ।।

इस ऋतु में बौरे आम के वृक्षों की सुगन्ध से सुगन्धित वायु ने धीरज धरनेवाली कामनियों के हृदयों में भी खलबली मचा दी है । मदोन्मत्त

कोकिलो की कुहुक और भौंरो के गुञ्जार से चारो दिशाएँ भर गयी हैं। और भी :—

पुंस्कोकिलश्चूतरसेन मत्तः प्रियामुखं चुम्बति सादरोऽयम् ।
गुञ्जद्द्विरेफोऽप्ययमम्बुजस्थः प्रियं प्रियायाः प्रकरोति चाटुम् ॥

आम के रस से मतवाला हुआ कोकिल, सादर, अपनी प्यारी का मुख चूम रहा है। गूँजता हुआ भौंरा भी कमल पर बैठकर अपनी प्यारी की खुशामद कर रहा है।

और भी :—

तानूनि पाण्डूनि मदालसानि मुहुर्मुहुर्जृम्भणतत्पराणि ।
अङ्गान्यनङ्ग. प्रमदाजनस्य करोति लावण्यरसोत्सुकानि ॥

इस ऋतु में मीनकेतन—कामदेव, स्त्रियो के नाजुक, गोरे, मतवाले और बारम्बार जम्हाइयाँ लेते हुए अगो को शृङ्गार-रस मे मग्न कर देता है।

बहुत लिखने को हमारे पास स्थान का अभाव है, इसलिये इतना ही यथेष्ट होगा। बसन्त मे नामर्द भी मर्द हो जाता है। स्त्रियो को तो इतना मद छा जाता है कि वे सीना उभार कर और अकड कर चलती हैं। रसीले और छैल-छबीले पतियो के पास रहने पर भी वे नही दबती, बल्कि उत्कण्ठित ही रहा करती हैं।

चले सुगन्धित पवन, फूल चहुं दिशि मे फूले।
बोलत पिक मृदु वचन, काम-शर उर मे शूले ॥
मुकुलित मञ्जरि आम, करै उत्कण्ठा भारी।
रतिश्रम स्वेदित वदन, चन्द्रसम अद्भुत नारी ॥
यह केहि पदार्थ के गुणन को, उदय करत नहिं जगत महँ।
शुठि ऋतु वसन्त की है निशा, मगलदायक सकल कहँ ॥३३॥

सार—वसन्त मे सभी की उत्कण्ठा और कामवासना बढ जाती है।

33 What object do not assume their qualities in the

dead of night of the spring season when the scented breeze blows, new sprouts of leaves come out on the branches of trees, the sweet sound of cuckoo and other birds appear very pleasing and the stray drops of perspiration shine on the moon-like face of women after the exertion of sexual intercourse.

मधुरयं मधुरैरपि कोकिला कलकलैर्मलयस्य च वायुभिः।
विरहिणःप्रणिहन्ति शरीरिणो विपदि हन्त सुधाऽपि विषायते ॥३४॥

ऋतुराज वसन्त कोकिल के मधुर-मधुर शब्दों और मलयपवन से विरही स्त्री-पुरुषों के प्राणनाश करता है। बड़े ही दुःख का विषय है कि प्राणियों के लिये विपद्काल में अमृत भी विष हो जाता है ॥३४॥

खुलासा—कोकिला का मधुर कलरव और मलयाचल की सुगन्धिपूर्ण हवा प्राणिमात्र में नवजीवन का सचार करते हैं। इनसे शोकार्त्त और मनहूसों के दिलों में भी गुदगुदी होने लगती है। सभी के चेहरों पर प्रसन्नता छा जाती है। पर कर्मों के फेर या दुर्दिन के कारण से, यही दोनों, विरही स्त्री-पुरुषों को मछली की तरह तड़पाते हैं। सच है, विपत्तिकाल में सोना भी मिट्टी हो जाता हैं और अमृत विष हो जाता है। पण्डितराज जगन्नाथ अपने 'भामिनी-विलास' में कहते हैं :—

मलयानिलमनलीयति मणिभवनं काननीयति क्षणतः।
विरहेण विकलहृदया निर्जलमीनायते महिला॥

विरह वेदना में विकल कामिनी, मलयाचल के पवन को आग और मणिमय भवन को वन समझ कर, मछली का-सा आचरण करती है, यानी जलहीन मछली की तरह तड़पती है।

और भी :—

पाटीरद्रुभुजङ्गपुङ्गवमुखायाता इवातापिनो
वाता वान्ति दहन्ति लोचममी ताम्रा रसालद्रुमा.।
एते हन्त किरन्ति कूजितमय हालाहल कोकिला
बाला बालमृणालकोमलतनुः प्राणान् कथं रक्षतु ॥

चन्दन के वृक्षो मे बसनेवाले साँपो के मुख से निकली हुई हवा के समान सन्तप्त—गरम हवा चलती है, लाल-लाल पत्तो वाले आम के वृक्ष नेत्रो को जलाते हैं, कोयल की वाणी विष-सा बरसाती है। इस दशा मे, नवीन कमल की डण्डी के समान कोमलाँगी बाला किस तरह अपनी प्राण-रक्षा करेगी ?

पाठक ! देख लिया, वसन्त मे विरही-जनो की कैसी दुर्दशा होती है ? विरही स्त्री-पुरुप सभी शीतल और शान्तिमय पदार्थों को अग्निवत् समझते है। विरह-व्याकुल काले काली अगर और चन्दन के रस को हलाहल विप और नील कमलो की माला को साँपो की कतार समझने लगते हैं।

एक विरहिणी, वसन्त मे अपने प्रीतम के घर न आने पर स्वपति, कोकिला, कामदेव और चन्द्रमा पर कैसी कुपित हो रही है और उनसे बदला लेने की ठान रही है, हम इस मनोहर उक्ति को महाकवि कालिदास कृत 'शृगार-तिलक' से उद्धृत करते है। लीजिये पाठक ! इसका भी रसास्वादन कीजिये—

आयाता मधुयामिनी यदि पुनर्नायात एव प्रभुः
प्राणाः यान विभावसौ यदि पुनर्जन्मग्रह प्रार्थये॥
व्याध कोकिलबन्धने हिमकरध्वसे च राहुग्रहः
कन्दर्पे हरनेत्रदीधितिरहं प्राणेश्वरे मन्मथ ॥

वसन्त की रात आ गई, पर मेरे स्वामी न आये। इसलिये मेरे प्राण आग मे नष्ट हो। अगर मरने के बाद फिर जन्म होता हो, तो मैं परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि कोकिल की बन्धन के लिये मैं व्याध होऊँ, चन्द्रमा का नाश करने के लिए राहु होऊँ, कामदेव का संहार करने के लिये शिवजी के

नेत्र की किरण बनूँ और अपने प्राण-प्यारे के लिए कामदेव बनूँ; अर्थात् वसन्त में सब मुझे जिस तरह सता रहे हैं, परकाल में भी इन्हें सताऊँ और अपना बदल लूँ।

ऋतु वसन्त कोकिल कुहुक, त्योंहीं पवन अनूप।
विरह विपत के परत ही, सुधा होय विषरूप ॥३४॥

सार—विरही स्त्री-पुरुषों के लिये वसन्त ऋतु मौत के समान है।

34, This season of Spring kills (as it were) those who are suffering from the pangs of separation, by the sweet sound of cuckoo and by the air of Malyachal mountain. Alas! even nectar becomes poison in adversity. (Sweet sound of the cuckoo and the gentle breeze in the spring season please every one; but those, whose beloved ones are away, feel their absence all the more by these messengers of spring.)

●

आवासः क्लिल किञ्चिदेव दयितापार्श्वे विलासालसः
कर्णे कोकिलकाकलीकलरवः स्मेरो लतामण्डपः।
गोष्ठी सत्कविभिः समं कतिपयैः सेव्या सितांशो कराः
केषांचित्सुखयन्ति नेत्रहृदये चैत्रे विचित्राः क्षपाः ॥३५॥

भोगविलास से शिथिल होकर कुछ समय तक अपनी प्यारी के पास आराम करना, कोकिलाओं के मधुर शब्द सुनना, प्रफुल्लित लतामण्डप के नीचे टहलना, सुन्दर कवियों से बातचीत करना और चन्द्रमा की शीतल चाँदनी की बहार देखना—ऐसी सामग्री से चैत्र मास की विचित्र रात्रियाँ किसी-किसी ही भाग्यवान के नेत्र और हृदयों को सुखी करती हैं ॥३५॥

खुलासा—कोयल कुहुकती हो, लतायें फूल रही हों, चांदनी छिटक रही

ऋतुराज वसन्त कोकिल की मधुर-मधुर पुकार और मलय पवन से विरही स्त्री-पुरुषों के प्राण नाश करता है। इस कामिनी का पति घर में नहीं है, उधर से वसन्त की अवाई हो गई है, अत विरह-वेदना से व्याकुल यह, मन मलीन किये बैठी है।
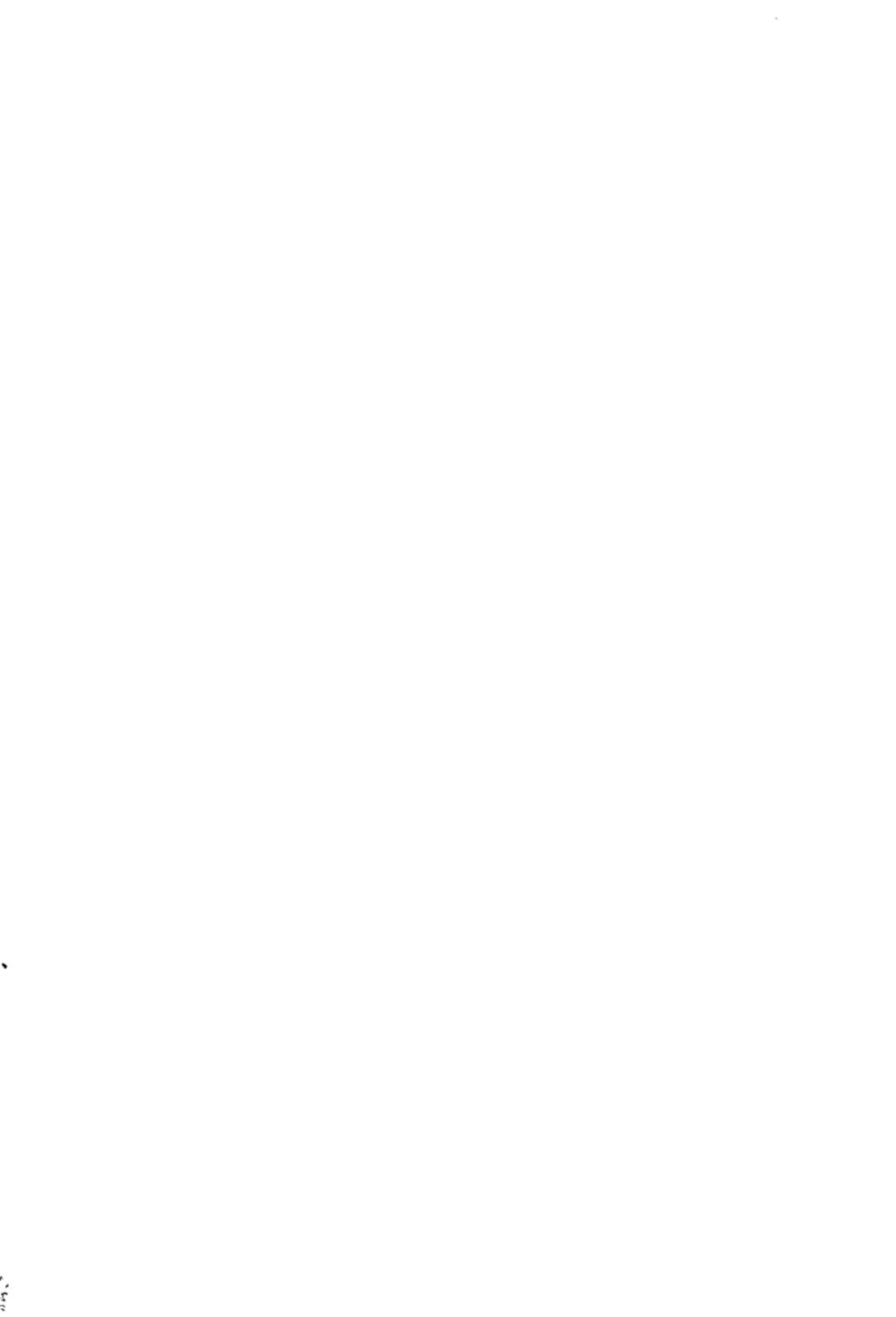
हो, श्रेष्ठ कवि अपनी रसीली-रसीली कवितायें सुनाते हो, और भोग-विलास से थक कर अपनी प्राण-प्यारी के पास आराम कर रहे हों—चैत के महीने की रातो मे जिन्हें ये सब मयस्सर हो, वे निश्चय ही बडे भाग्यवान है। जिन्होने पूर्वजन्म मे पुण्य सचय किये हैं, उन्हे ही ये सुख मिलते हैं, सब किसी को नही।

कोकिल-रव फूली लता, चैत, चाँदनी, रैन।
प्रिया सहित निज महल मे, सुकृति करत सुचैन ॥३५॥

सार—चैत की चाँदनी रात मे, विरले पुण्यात्मा ही अपने महल की छत पर, अपनी प्राणप्यारी के साथ आनन्द करते है।

35 These wonderful nights of the month of Chaitra give pleasure to the mind and eyes of a man, being tired with pleasurable copulation, enjoys the sweet company of his beloved wife, hears the sweet songs of the cuckoo and takes delight in bright moonlight, and passes his time in company with birds But to others, whose beloved ones are away, these nights give pain.

●

पान्थस्त्रीविरहानलाहुतिकथामातन्वती मञ्जरी
माकन्देषु पिकाङ्गनाभिरधुना सोत्कण्ठमालोक्यते।
अप्येते नवपाटलापरिमलप्राग्भारपाटच्चरा
वान्तिक्लान्तिवितानतानवकृताः श्रीखण्डशैलानिलाः ॥३६॥

इस वसन्त में, जगह-जगह बटोहियो की विरहव्याकुल स्त्रियो की विरहाग्नि में आहुति काम करने वाली आम की मञ्जरिया खिल रही हैं। आम्रवृक्ष पर बैठी कोकिला उन्हे बडी अभिलाषा या उत्कण्ठा से देख रही है। नये पलाश के फूलो की सुगन्धि को चुराने

वाली और राह की थकान को मिटाने वाली श्रीखण्डशैल*से आने वाली मलय-वायु चल रही है ॥३६॥

यहाँ ऋतुराज की स्वाभाविक महिमा का चित्र खींचा गया है। हम भी अपने मनचले पाठकों के मनोरंजनार्थ, महाकवि कालिदास के 'ऋतुसंहार' से एक श्लोक नीचे उद्धृत करते हैं—

समदमधुकराणां कोकिलानाञ्च नादैः
कुसुमितसहकारैः कर्णिकारैश्च रम्यैः ।
इषुभिरिव सुतीक्ष्णैर्मानसं मानिनीनां
तुदति कुसुममासो मन्मथोद्दीपनाय ॥

यह कुसुम मास मतवाले भौरों, कोकिलों के शब्दों, बौरे हुए आम के वृक्षों और मनोहर कनेर के वृक्षों के द्वारा कामोद्दीपन करने के लिए, रागिनी स्त्रियों के मनों को अत्यन्त तेज तीरों के समान विद्ध कर रहा है।

विरहीजन-मन ताप करन, वन अम्वा मौरे।
पिकहू पञ्चम हेर टेर, विरही किये वौरे ॥
भौंर रहे भन्नाय; पुहुप पाटल के महकत।
प्रफुलित भये पलास, दशों दिशि दीसी दहकत ॥
मलयागिरिवासी पवनहु, काम अग्नि प्रज्वलित करत।
विन कन्त वसन्त असन्त ज्यों, घेर रह्यो यह नहिं टरत॥३६॥

सार—आम की मञ्जरियों का खिलना, कोकिला का उन्हें

---

*श्रीखण्डशैल मलयाचल पर्वत का ही दूसरा नाम है। मलयाचल भारत की सात मुख्य पर्वत-श्रेणियों में से एक है। सम्भवतः यह घाटों का दक्षिणीय भाग है, जो मैसूर के दक्खिन से शुरू होकर ट्रावनकोर की पूर्वी सीमा बनाता है। कोलडार्न साहब कहते हैं, मलयाचल उस पर्वत-श्रेणी का नाम है जो भारतीय प्रायद्वीप के पश्चिमीय तट पर है, और जहाँ चन्दन के वृक्ष बहुतायत से उगते हैं।
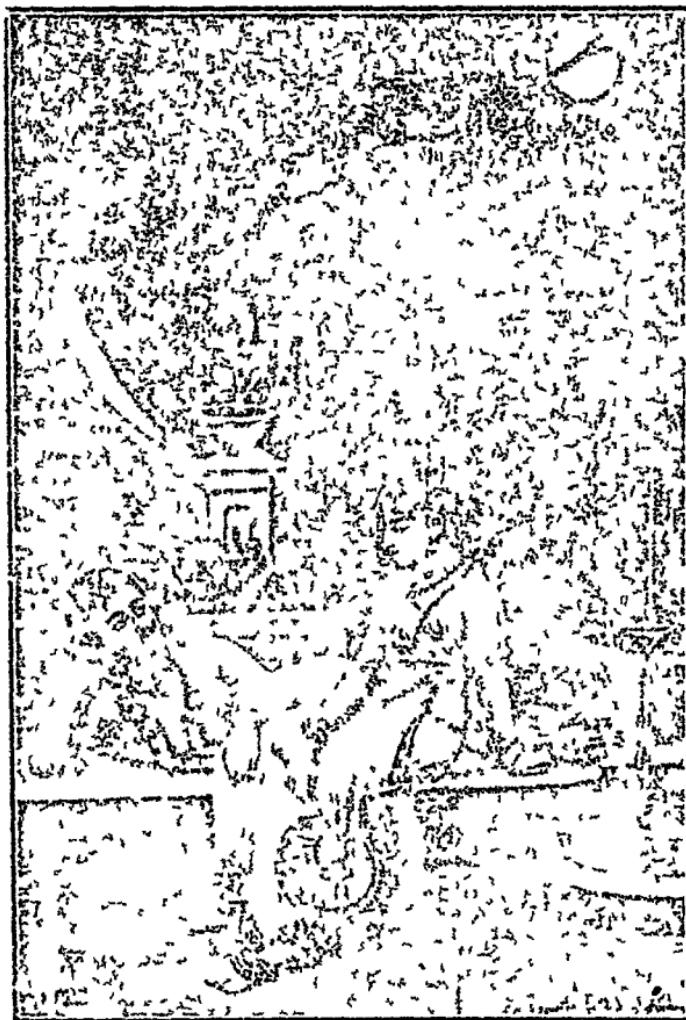
मनोहर सुगन्धित माला, पखे की हवा, चन्द्रमा की किरणे फव्वारेदार घर, महल की छत और मृगनयनी कामिनी—ये सब, मौसम गरमी मे, मद और मदन दोनो को ही बढाने है।

उत्कण्ठा से देखना और मलय-पवन का चलना—ये ऋतुराज—वसंत की स्वाभाविक महिमा है।

36 In the spring season, the peahen eagerlv looks at the mango blossoms which adds to the flame of separation of a traveller's wife and the air from Malayachala blows stealing the smell of Patal flowers and renewing her grief.

✲

सहकारकुसुमकेसरनिकरभरामोदमूर्छितदिगन्ते।
मधुरमधुविधुरमधुपे मधौ भवेत्कस्य नोत्कण्ठा।३७॥

आम के वौरो की केसर की गहरी सुगन्ध से दसो दिशायें व्याप्त हो रही है, मधुर मधु मकरन्द को पी-पी कर भौरे उन्मत्त हो रहे हैं—ऐसे ऋतुराज बसन्त मे किसके मन मे कामवासना का उदय नही होता ॥३७॥

खुलासा—जिस समय वसन्त मे आमो के फूलो की सुगन्ध से दिशायें महकने लगती हैं, मधु के लोभी भौंरे मधु पी-पी कर उन्मत्त हो जाते हैं, उस समय प्राय सभी प्राणियो की विषय-वासना प्रवल हो उठती है। पुरुप स्त्रियो से और स्त्रियाँ पुरुषो से मिलने को तडपने लगती हैं। वडी-वडी मानिनी स्त्रियो का गर्व खर्व हो जाता है। जो दम्पत्ति एकत्र होते हैं, वे इस ऋतु मे आनन्द करते हैं, परन्तु जो दूर-दूर होते हैं वे विरह की आग मे बुरी तरह जलते हैं।

फूले चहुँ दिश आम, भई सुगन्धित ठौर सव।
मधु मधु पी अलिग्राम, मत्त भये झूमत फिरे ॥३७॥

सार—वसन्त मे प्रायः सभी प्राणियो को कामदेव सताता है।

37 Who does not feel buoyant in the spring season when all the quarters are filled with smell issuing forth from the bunch of mango-blossoms and when the bees are busy in the collection of sweet honey from flowers ?

पदार्थों का, गरमी की तेजी से विकल हुए, कोई-कोई भाग्यवान पुरुष ही मजा ले सकता है ॥३९॥

खुलासा—गरमी की ऋतु में फूलों की माला पंखे की हवा, चारु चाँदनी और कमलनेत्री कामिनी प्रभृति शीतल और शान्तिमय पदार्थों का भोग कोई-कोई पुण्यवान ही कर सकते है। सबके लिए ये स्वर्गीय आनन्द के देनेवाले सामान मयस्सर हो नहीं सकते। जिन्होंने पूर्व जन्म में पुण्य किया है, जिनके उपर विष्णुप्रिया लक्ष्मी की कृपा है, वे ही इनका सुख लूट सकते हैं।

पुष्पमाल पंखा-पवन, चन्दन चन्द सुनारि।
बैठ चाँदनी जल लहर, जेठमास पट धारि ॥३९॥

3. In summer season, it is only the fortunate people who derive pleasure by the enjoyment of the following—sweet smelling garlands, air of fans, moonlight, pollens of flowers, tanks, sandal-dust, pure wine, white terrace of big palaces, fine clothes and the lotus-eyed beautiful maiden.

✲

सुधाशुभ्रं धाम स्फुरदमलरश्मिः शशधरः
प्रियावक्त्राम्भोजं मलयजरजश्चातिसुरभिः।
स्नजो हृद्यामोदातदिदमखिलं रागिणि जने
करोत्यन्तः क्षोभं न तु विषयसंसर्गविमुखे ॥४०॥

लिपा-पुता साफ महल, निर्मल किरणों वाला चन्द्रमा, प्यारी का मुखकमल, चन्दन की रज और मनोहर फूलमाला—ये सब चीजें कामी पुरुषों के मन में अत्यन्त क्षोभ उत्पन्न करती हैं, किन्तु विषय वासना से विमुख पुरुषों के हृदयों में किसी प्रकार का क्षोभ उत्पन्न नहीं करतीं ॥४०॥

खुलासा—जो व्यक्ति अनुरागी हैं—कामी हैं, उनके दिलों में स्वच्छ महल, निर्मल सुधाकर की रश्मियाँ, पुष्पमाला, खस के पखे की हवा, फव्वारों

का चलना, चन्दन की रज, वीणा का मधुर स्वर, सुरीले कण्ठो का मनोहर गान प्रभृति शीतल पर कामोत्तेजक पदार्थ एक प्रकार की हलचल-सी मचा देते हैं। उनकी काम-वासना—भोग-विलास की इच्छा और भी प्रवल हो जाती है। परन्तु जो ससार से उदासीन हैं, जिन्हें विरक्ति हो गई है, जिन्हे संसार की असारता और चंञ्चलता का ज्ञान हो गया है, उनके दिलो मे इन सब कामोत्तेजक पदार्थों से कुछ भी हलचल नही मचती। उनके लिए तो स्वच्छ महल और श्मशान, चादनी रात और घोर अँधेरी रात, पुष्पमाला और सर्पमाला, चन्दन की रज और श्मशान की राख तथा कामिनियो की जुल्फें और भयंकर काल-सर्प प्रभृति सब बराबर हैं।

शशिवदनी अरु शरद शशि, चन्दन-पुष्प-सुगन्ध।
ये रसिकन के चित हरत, सन्तन के चित बन्ध ॥४०॥

सार—चारु चाँदनी, चन्द्रमुखी प्रिया एव अन्यान्य कामोत्तेजक पदार्थों से कामियो की ही कामवासना तेज होती है, विरक्त या उदासीनो की नही।

40, Snow-white palaces, clear moon-light, the lotus—like face of the beloved lady, fragrant sandal, the sweet smelling garlands of flowers—(these things) disturb the mind of a sensual man, but those who are averse to the enjoyment of worldly pleasures, are not affected in the least by these objects

वर्षा की महिमा

(प्रावृट् और वर्षा)

तरुणी चैषा दीपितकामा विकसितजातीपुष्पसुगन्धिः।
उन्नतपीनपयोधरभारा प्रावृट् कुरुते कस्य न हर्षम् ॥४१॥

कामदेव को उदय करने वाली, प्रफुल्लित मालती की लता वाली, उत्तम सुगन्धि धारण करने वाली, उन्नत पीन पयोधरा वर्षा ऋतु, तरुणी स्त्री की तरह, किसके मन में हर्ष उत्पन्न नहीं करती ॥४१॥

खुलासा—जिस भाँति सुन्दरी कमल-नयनी तरुणी, पुरुष के मन में हर्ष उत्पन्न करती है, उसी तरह वर्षा ऋतु भी पुरुष के मन में हर्ष उत्पन्न करती है; क्योंकि जिस तरह तरुणी स्त्री के चिकने मनोहर बाल होते हैं, उसी तरह वर्षा-रूपिणी तरुणी के लम्बे बालों की जगह मालती की लतायें होती हैं। जिस तरह तरुणी के शरीर से सुगन्धित तेल और इत्र वगैरा की खुशबू उड़ा करती है, उसी तरह वर्षा-ऋतु-रूपिणी तरुणी के शरीर से भी नाना प्रकार के फूलों की सुगन्धि आया करती है। जिस तरह तरुणी स्त्री के सघन पीन पयोधर होते हैं, उसी तरह वर्षा-ऋतु-रूपिणी तरुणी के भी सघन—पीन पयोधर होते हैं! जिस तरह तरुणी स्त्री पुरुष के मन में उत्कण्ठा—विषय-वासना उत्पन्न करती है उसी तरह वर्षा उत्कण्ठा उत्पन्न करती है। मतलब यह, कि तरुणी नारी और वर्षा में कोई भेद नहीं; दोनों हर तरह समान हैं। कवि ने ठीक ही कहा है कि वर्षा-रूपिणी के दर्शनों से कौन हर्षित नहीं होता, जो पूर्ण विकसित जाती पुष्पों की सुगन्ध और सघन मेघों के उत्थान से मनुष्य के मन में काम उत्पन्न करती है।

'भामिनी-विलास' में लिखा है—

प्रादुर्भवति पयोदे कज्जलमलिनं बभूव नभः।
रक्तं च पथिकहृदयं कपोलपाली मृगीदृशः पाण्डुः॥

बादलों के आकाश में छाने से आकाश काजल के समान मलिन हो गया, पथिक का हृदय अनुराग से भर उठा और मृगनयनी के गालों पर जर्दी छा गयी।

सारांश यही है वर्षा-ऋतु के आते ही स्त्री-पुरुषों का चित्त प्रसन्न हो जाता है और विषय-भोग भोगने की उन दोनों की ही इच्छा प्रबल हो उठती

है। इस ऋतु मे केवल उन्ही का चित्त हर्षित और उत्कण्ठित नही हो सकता, जो ससार से उदासीन या पु सत्व-विहीन हैं।

पीन पयोधर को धरत, प्रगट धरत है काम।
पावस अरु प्यारी निरखि, हर्षित होत तमाम ॥४१॥

41 Who does not feel pleasure in the rainy season which has all the qualities of young woman, gives rise to amorous desires, bears the smell of blossmed jessamine flowers and has swollen heavy clouds over it ?

वियदुपचितमेघं भूमयः कन्दलिन्यो
नवकुटजकदम्बामोदिनो गन्धवाहाः।
शिखिकुलकलकेकारवरम्या वनान्ताः
सुखिनमसुखिनं वा सर्वमुत्कण्ठयन्ति ॥४२॥

मेघो से आच्छादित आकाश, नवीन-नवीन अकुरो से पूर्ण पृथ्वी, नवीन कुटज और कदम्ब के फूलो से सुगन्धित वायु और मोरो के झुण्ड की मनोहर वाणी से रमणीय वनप्रान्त, वर्षा मे, सुखी और दुःखी दोनो तरह के पुरुषो को उत्कण्ठित करते हैं ॥४१॥

खुलासा—हर शख्स का मन, चाहे वह सुखी हो चाहे दुखी, घनघोर घटाओ, नये-नये अकुरो से छायी, पृथ्वी एवं कुटज और कदम्ब के फूलो की सुगन्धि से सुवासित पवन और मोरो की मधुर वाणी से पूर्ण मनोहर वनो को देखकर उत्कण्ठित होता है।

वर्षा की—नेत्र को प्रसन्न करने वाली, मन और आत्मा को तृप्त करने वाली, शीतलता और शान्ति का सचार करने वाली—छवि पर कोई विरला ही मनहूस न मोहित होता होगा। इस ऋतु मे बडे-बडे मानी पुरुषो और मानिनी स्त्रियो के मान-मर्दन हो जाते हैं। दोनो ही मान-त्याग कर, एक दूसरे

की खुशामद करने लगते हैं। भारी-से-भारी अपराध के अपराधी पतियों को मृगनयनी स्त्रियाँ सहज में क्षमा कर देती हैं।

देखिये महाकवि कालिदास अपने 'ऋतु-संहार' में कहते हैं—

पयोधरैर्भीमगम्भीरोनः स्वनैस्तडिद्भिरुद्वेजितचेतसो भृशम्।
कृतापराधानपि योषितः प्रियान् परिष्वजन्ते शयने निरन्तरम्॥

वर्षा में स्त्रियाँ, भयंकर और गम्भीर गर्जना करने वाले मेघों और चमाचम चमकती हुई बिजलियों से डर-डर कर अपराधी पतियों को भी शय्या पर, बारम्बार आलिङ्गन करने लगती हैं, अर्थात् भयभीत होकर पतियों के शरीर से चिपटने लगती हैं।

कालागुरुप्रचुरचन्दनचर्चितांग्यः
पुष्पावतंससुरभीकृतकेशपाशाः।
श्रुत्वा ध्वनिं जलमुचां त्वरितम्प्रदोषे
शय्यागृहं गुरुगृहात्प्रविशन्ति नार्य्यः॥

वर्षा की रातों में, बादलों की घोर गर्जना सुन-सुन कर; स्त्रियाँ अपने शरीरों में अगर और चन्दन का लेप कर, फूलों के गहनों से चोटियों को सजा और सुगन्धित कर; घर के काम धन्धे जल्दी-जल्दी निपटा, सास के घर से अपने सोने के कमरे में शीघ्र ही चली जाती हैं।

पण्डितराज जगन्नाथ एक मानिनी के सम्बन्ध में क्या खूब कहते हैं—

मुञ्चसि नाद्यापि रुषं भामिनि मुदिरालिरुदियाय॥
इति सुदृशः प्रियवचनैरपायि नयनाब्ज कोणशोणरुचिः॥

हे मानिनि! आकाश में मेघमाला छा गई हैं, किन्तु तू अब तक अपना रोष नहीं त्यागती। कमलनयनी के नयन-कमल के कोनों में जो ललाई आ गई थी, वह प्रियतम के इन वचनों से दूर हो गई, अर्थात् वह अपने प्यारे से राजी हो गई।

अम्बर घन अवनी रहित, कुटुज कदम्ब सुगन्धि।
मोर शोर रमणीक वन, सबको सुख सम्बन्ध॥४२॥

सार—वर्षा मे दुखिया और सुखिया सभी के मन मे काम-वासना का उदय हो आना है।

42. The sky overcast with clouds, the earth full of new sprouts, the air fragrant with the smell of newly blossomed Kutaja and Kadamba flowers and the forest pleasant on account of the charming voice of peacocks—all these give rise to amorous feelings in the hearts of happy and unhappy men alike.

❖

उपरि घनं घनपटलं तिर्यग्गिरयोऽपि नर्त्तितमयूराः।
वसुधा कन्दलधवल तुष्टि पथिकः क्व यातु सन्त्रस्तः ॥४३॥

सिर के ऊपर घनघोर घटाये छा रही हैं, दाहिने-बायें दोनो तरफ के पहाडो पर मोर नाच रहे हैं, पैर के नीचे की जमीन अकुर से हरी हो रही है—ऐसे समय मे, जब कि चारो ओर कामोद्दीपन करने वाले सामान नजर आते हैं, विरह-व्याकुल पथिक को कैसे सन्तोष हो सकता है ॥४३॥

खुलासा—सिर पर मेघो का शामियाना, पैरो के नीचे हरी-रही दूव की कालीन और अगल-वगल मे मदमत्त मोरो का नाचना देखकर, बटोही के मन मे प्यारी से मिलने की उत्कट अभिलाषा हुए बिना नही रहती। वह वहुत कुछ धीरज धरता है, पर जव चारों ओर कामोद्दीपक पदार्थों को देखता है, तव फिर अधीर हो जाता है। वहुत लिखने से क्या—वर्षा मे विरही जनो को वडा क्लेश होता है।

देखिये, महाकवि कालिदास कहते हैं—

बलाहकाश्चाशनिशब्दमर्दलाः सुरेन्द्रचाप दधतस्तडिद्गुणम्।
सुतीक्ष्णधारापतनोग्रसायकास्तुदन्ति चेतः प्रसभं प्रवासिनाम्॥

इन दिनो, वज्र के शब्द रूपी नगाडे वाले, बिजली की डोरी से युक्त

इदं सौदामिन्याः कनककमनीयं विलसितं
मुदं च ग्लानिं च प्रथयति पथिष्वेव सुदृशाम् ॥४५॥

सावन की घोर अँधेरी रात में—जब कि हाथ-को-हाथ नहीं सूझता—मेघ की भयंकर गर्जना, पत्थर-सहित जल की वृष्टि होना और सोने के समान बिजली का चमकना—सुन्दरी सुनयनाओं के लिए, राह में ही सुख और दुःख दोनों का कारण होता है ॥४५॥

खुलासा—सावन के महीने में सब दिनों से अधिक वर्षा होती है। रात ऐसी अँधियारी होती है कि हाथ-को-हाथ नहीं सूझता। बादल बड़े जोरों से गरजते हैं, बिजली चमाचम चमकती है और ऊपर से पत्थर मिली जलवृष्टि होती है। उस समय राह की पगडण्डियाँ दिखाई नहीं देतीं। उस वक्त जो स्त्री अकेली अपने पति या प्यारे के पास जाती है, उसे निश्चय ही भयानक कष्ट और भय होता है। इस घोर कष्ट के समय भी जब उसे बिजली की सहायता से कभी-कभी पगडण्डी दीख जाती है, तब प्रियतम से शीघ्र ही मिलने की आशा से वह प्रसन्न भी होती है।

स्त्री-जाति बड़ी ही साहसी होती है। डरती हैं तब तो एक चूहे की खड़खड़ाहट से डरकर पति की छाती से चिपट जाती हैं; और जब उसे अपने पति या प्रेमी के पास जाना होता है, तब सब विघ्न बाधाओं और आफतों को तुच्छ समझकर, घोर अँधेरी रात में, भयंकर श्मशान में भी पहुँचती है। किसी पाश्चात्य विद्वान ने ठीक ही कहा है—A woman when she either loves or hates, will dare anything. स्त्री जब प्रेम या घृणा—दो में से एक पर तुल जाती है तब वह सब कुछ कर सकती है।

महाकवि कालिदास कहते हैं—

अभीक्ष्णमुच्चैर्ध्वनता पयोमुचा घनान्धकारीकृतशर्वरीष्वपि ।
तडित्प्रभादर्शितमार्गभूमयः प्रयान्ति रागादभिसारिकाः स्त्रियः ॥

वर्षा में, घोर गर्जन करने वाले मेघों से रात के अत्यन्त अँधेरी होने पर
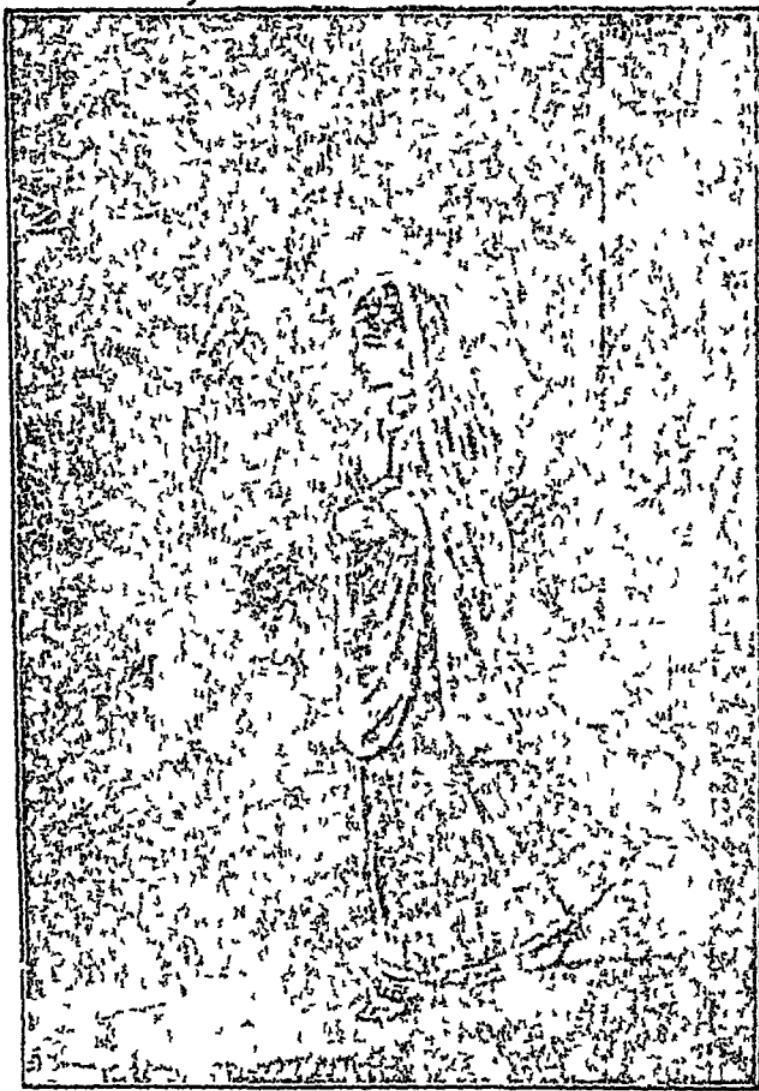
सावन भादों की अँधेरी रात में—मेघों का भयङ्कर गरजना जल की घोर वृष्टि होना और बिजली चमकना—सुन्दरी सुनयनाओं के लिये राह में सुख और दुख दोनों का कारण होते हैं। डरावनी रात में सुन्दरी अपने प्रिय से मिलने जा रही है। जब मिलने का खयाल करती है, तब सुखी होती है, वर्षा और अन्धकार में दुखी।

भी अभिसारिका स्त्रियाँ, अपनी राह की जमीन को बिजली के प्रकाश से देखती हुई, बड़े चाव से, अपने प्रेमियों के पास जा रही हैं।

महा अन्ध तम नभ जलद, दामिनि दमक दुरात।
हर्ष-शोक दोऊ करत, तिय को पिय ढिग जात ॥४५॥

सार—वर्षा की घोर अँधेरी रात मे पूर्व निर्धारित समय पर, अपने प्रेमी के पास जाने वाली अभिसारिका नारियों को दुःख और सुख दोनो ही होते हैं।

45 In the pitch darkness of the month of Shravana, the loud roaring of the clouds in the sky, falling of rains with hail-stones and the golden flash of lightening give pain and pleasure to a woman who is travelling on the way to meet her lover.

६

आसारेण न हर्म्यतः प्रियतमैर्यातुं बहिश्शक्यते
शीतोत्कम्पनिमित्तमायतदृशा गाढं समालिंग्यते।
जाताः शीतलशीकराश्च मरुतो वान्त्यन्तखेदच्छिदो
धन्यानां वत दुर्दिनं सुदिनता याति प्रियासङ्गमे ॥४६॥

वर्षा की झड़ी मे प्रियतम घर से बाहर निकल नहीं सकते। जाड़े के मारे कांपती हुई विशाल नेत्रों वाली प्राणप्यारी स्त्री उनका आलिङ्गन करती है और शीतल जल के कणो सहित वायु, मैथुन के अन्त मे होने वाले श्रम को मिटा देती है। इस तरह वर्षा के दुर्दिन भी भाग्यवानो के लिये सुदिन हो जाते है ॥४६॥

खुलासा—वर्षाकाल मे बाज-बाज वक्त ऐसी झड़ी लग जाती है कि हफ्तों सूर्य के दर्शन नही होते। वैसे दिनो मे, भाग्यवान लोग, दिन निकल आने पर भी, घर से बाहर नहीं जाते—अपने पलँगों पर ही पड़े रहते हैं। उनकी मृगनयनी स्त्रियाँ जाड़े के बहाने कांपती हुई, उन्हे छातियो से लगा लेती हैं

और मेह की फुहारों से मिली हुई शीतल हवा, उनकी मैथुन की थकान को मिटा देती है। जिन्होंने पूर्वजन्म में पुण्य किया है, उनको वर्षा के बुरे दिन भी इस तरह सुखदाई हो जाते हैं। पुण्यवानों को दुःख में सुख और जङ्गल में मङ्गल होता है।

प्रावृट् बरसत मेह, चढ्यो दिन शीत अधिकतर।
वाहर नहिं कढि सकत, नेह सों परा कोउ नर॥
कम्प होत जब गात, तबहि प्यारी सँग सोवत।
उठत अनङ्ग-तरङ्ग, अङ्ग में अङ्ग समोवत॥
रति खेद स्वेद छेदन करत, जालरन्ध्र आवत पवन।
इह विधि दुर्दिवस हू मोहप्रद, होवहिं तिय संग बसि भवन॥४६॥

सार—पुण्यगानों को वर्षा के दुर्दिन भी, अपनी प्राणप्यारियों की सुहबत में, सुदिन हो जाते हैं।

46. On a rainy day, the lover cannot come out of his house and the long-eyed lady, shivering with cold, embraces fast her husband, the cold wind blows carrying with it small particles of water that takes away the fatigue arising from copulation. Surely, even the evil days of a fortunate man become good in the company of his beloved wife.

*

शरद्-महिमा

अर्द्धं नीत्वा निशायाः सरभससुरतायासखिन्नश्लथाङ्गः
प्रोद्भूतासह्यतृष्णो मधुमदनिरतो हर्म्यपृष्ठे विविक्ते।
सम्भोगक्लान्तकान्ताशिथिल भुजलतावर्जितं कर्करीतो
ज्योत्स्नाभिन्नाच्छधारं पिबति न सलिलं शारदं मन्दभाग्यः॥४७॥

वर्षा की झडी मे प्रियतम घर से बाहर जा नही सकते । जाडे के मारे काँपती हुई स्त्री उन्हे आलिङ्गन करती है । इस तरह, वर्षा के दुर्दिन भी, भाग्यवानो को सुदिन हो जाते है ।

आधी रात बीतने पर, जल्दी-जल्दी मैथुन करके थक जाने पर, और उसी की वजह से असह्य प्यास लगने पर, मदिरा के नशे की हालत मे, महल की स्वच्छ छत पर, बैठा हुआ पुरुष, यदि मैथुन के कारण थकी हुई भुजाओ वाली प्यारी के हाथो से लाई हुई झारी का निर्मल जल शरद् की चाँदनी मे नही पीता, तो वह निश्चय ही अभागा है ॥४७॥

छके मदन की छाक, मुदित मदिरा के छाके।
करत सुरत रण रङ्ग, जङ्ग कर कछु-इक थाके ॥
पौढ रहे लिपटाय, अङ्ग अङ्गन मे उरझे।
बहुत लगी जब प्यास, तबहिं चित चाहत मुरझे ॥
उठ पियत रात आधी गये, शीतल जल या शरद् को।
नर पुण्यवन्त फल लेत है, निज सुकृतहि की फरद को ॥४७॥

सार—शरद् की चाँदनी रात मे मैथुन से थकी हुई कामिनी के हाथो का लाया हुआ जल भाग्यवान ही पीते है।

47 He is surely unfortunate who, after the midnight being quite exhausted by speedy copulation, feeling very thirsty and being intoxicated with wine does not drink the cool and pure autumn water clear as moonlight on the lonely roof of the house, brought by the weak hands of his wife (from the brazen pot) who is also tired on account of copulation.

●

हेमन्त-महिमा

हेमन्ते दधिदुग्धसर्पिरशना माञ्जिष्ठवासोभृतः
काश्मीरद्रवसान्द्रदिग्धवपुषः खिन्ना विचित्रै रतैः

पीनोरुस्तनकामिनीजनकृताश्लेषा गृहाभ्यन्तरे
ताम्बूलीदलपूगपूरितमुखा धन्याः सुखं शेरते ॥४८॥

हेमन्त ऋतु में जो दही, दूध और घी खाते हैं; मँजीठ के रँग में रँगे हुए वस्त्र पहनते हैं; शरीर में केसर का गाढ़ा-गाढ़ा लेप करते हैं; आसन-भेद से अनेक प्रकार मैथुन करके सुखी होते हैं, पुष्ट जांघों और कठोर कुचों वाली स्त्रियों का प्रगाढ़ आलिङ्गन करते हैं और मसालेदार पान का बीड़ा चबाते हुए, मकान के भीतरी कमरे में सुख से सोते हैं, वे निश्चय ही भाग्यवान हैं ॥४८॥

महाकवि कालिदास रचित भी एक श्लोक पढ़िये—

पुष्पासवामोदसुगन्धवक्त्रो निःश्वासवातैः सुरभीकृताङ्गः।
परस्पराङ्गव्यतिषङ्गशायी शेते जनः कामशरानुविद्धः॥

हे प्यारी ! इस हेमन्त ऋतु में, कामार्त्त स्त्री-पुरुष फूलों की शराब की गन्ध से मुँह को और अपनी श्वास-वायु से अंगों को सुगन्धित किये, परस्पर लिपटे हुए सोते रहते हैं।

दही दूध घृत पान, वसन मजीठहि रङ्ग के।
आलिङ्गन रतिदान, केसर चर्चि हिमन्त में ॥४८॥

Blessed is the man who, in winter, eats the food rich with milk, curd and ghee, wears clothes, coloured in scarlet red Manjistha, besmears his body thickly withpaste of saffron and musk, is embraced by a woman with swollen breasts after being exhausted by various kinds of sexual intercourse and with his mouth full of betels, sleeps happily in his house.

शिशिर-महिमा

चुम्बन्तो गण्डभित्तीवलकवति मुखे सीत्कृतान्यादधाना
वक्षःसूत्कञ्चुकेषु स्तनभरपुलकोद्भेदमापादयन्तः ।
ऊरूनाकम्पयन्तः पृथुलघनतटात्स्रंसयन्तोऽशुकानि
व्यक्तं कान्ताजनाना विटचरितकृतः शैशिरा वान्ति वाताः ॥४३॥

स्त्रियो के केशयुक्त गालो को चूमता हुआ, जोर के जाडे के मारे उनके मुँह से 'सी-सी' ध्वनि कराता हुआ, आंगीरहित खुले हुए स्तनो को रोमाचित करता हुआ, पेडुओ को कँपाता हुआ और पुष्ट जाँघो से कपडा हटाता हुआ शिशिर का पवन जार पुरुषो का-सा आचरण करता हुआ वह रहा है ॥४९॥

खुलासा—पति स्त्री के साथ जो जो काम करता है, शिशिर का पवन भी वही काम करता है। पति गालो को चूमता है, शिशिर का पवन भी बालो को इधर-उधर करता हुआ गालो को चूमता है। पति स्त्री को मैथुन के आनन्द मे मग्न करके उसके मुँह से 'सी-सी' कराता है, उसी तरह शिशिर का पवन भी जाडे की अधिकता के मारे स्त्रियो के मुखो से 'सी-सी' कराता है। पुरुष स्तनो को रोमाचित करता है, शिशिर-पवन भी वही करता है। पुरुष स्त्री की जाघो से कपडा हटाता है, शिशिर-वायु भी जाँघो से वस्त्र हटाता है। बहुत क्या-शिशिर का पवन हर तरह, स्त्रियो के साथ जार पतियो का-सा आचरण करता है।

चुम्बन करत कपोल, मुखहिं सीत्कार करावत ।
हृदय-माँहि धँसि जात, कुचन पर रोम बरावत ॥
जघन को थहरात, बसन हू दूर करत झुक ।
लग्यो रहत सग माहि, द्वार को रोक रह्यो ढुक ॥
यह शिशिर पवन विटरूप धरि, गलिन-गलिन भटकत फिरत ।
मिल रहे नारि-नर घरन में, याको भरभेट न भिरत ॥४९॥

सार—शिशिर ऋतु का पवन, पराई स्त्रियों के साथ, जारों का-सा काम करता है।

49. The wind in the winter season blows behaving itself like a lustful man at the time of copulation. It causes the hair of the breast, which is without any jacket, to stand on end. it kisses the face with flowing hairs and with shivering sounds in the mouth just as one hears at the time of copulation, shaking the thighs and making the clothes of hips and loins to fly about.

केशानाकलयन्दृशो मुकुलयन्वासो बलादाक्षिप-
न्नातन्वन्पुलकोद्गमं प्रकटयन्नालिंग्य कम्पञ्छदै।
बारम्बारमुदारसीत्कृतकृतोदन्तच्छदान्पीडयन्
प्रायः शैशिर एष सम्प्रति मरुकान्तासु कान्तायते ॥५०॥

बालों को बिखेरता, आंखों को कुछ-कुछ मूँदता, साड़ी को जोर से उड़ाता, देह को रोमाञ्चित करता, शरीर में सनसनी पैदा करता, कांपते हुए शरीर का आलिंगन करता, बार-बार सी-सी कराकर होठों का चूमता हुआ, शिशिर का पवन, पतियों का-सा आचरण करता है ॥५०॥

सार—शिशिर-पवन स्त्रियों के साथ वेहया, मस्त अथवा शहवतपरस्त पतियों का-सा काम करता है।

विलुलित करत सुकेश, नयन हू छिन-छिन मूँदत।
वसनन ऐंचे लेत, देह रोमाञ्चित रुँदत॥
करत हृदय को कम्प, कढ़त मुखहू सों सी-सी।
पीड़ित करतहि होठ बयारहु मार सिरी-सी॥

यह शीतकाल में जानिये, अद्भुत गति धारन पवन ।
निशि द्यौस दुरे दुबके रहो, निज नारी-सग निज भवन ॥५०॥

50 The air in the winter season acts like a husbaud in the case of woman by scattering their hairs, shutting their eyes, forcibiy removing their upper garments, causing the hair stand on end, slowly shaking the body by touch and giving pain to the lips by their coutinuous shivering sounds.

⊙

असाराः सन्त्वेते विरतिविरसायासविषया
जुगुप्सन्तां यद्वा ननु सकलदोषास्पदमिति ।
तथाऽप्यन्तस्तत्त्वे प्रणिहितधियामप्यतिबल-
स्तदीयोऽनाख्येयः स्फुरति हृदये कोऽपि महिमा ॥५१॥

सांसारिक विषय-भोग असार, विरति मे विघ्न करने वाले और सब दोषो की खान है, इत्यादि निन्दा लोग भले ही करे, फिर भी इनकी महिमा अपार है और इनके शक्तिशाली होने मे कोई सदेह नही, क्योकि ब्रह्मविचार मे लीन तत्ववेत्ताओ के हृदय मे भी ये प्रकाशित होते है ॥५१॥

खुलासा—यद्यपि ससारी विषय-भोग असार और थोथे हैं, हमारे वैराग्य या ससार-त्याग मे बाधक है, सभी दोषो के मूल कारण हैं, जीव का सब तरह से अनहित करते हैं, मनुष्य को निर्लज्ज और मतिहीन करते एव ज्ञान को धो बहाते हैं, इतने दोष होने पर भी, कहना पडता है कि ये बडे ही शक्तिशाली और अपार महिमावान है । इनकी शक्ति और सामर्थ्य का वर्णन करना अत्यन्त कठिन है, क्योकि जिन्होने ससार त्याग दिया है, जो दिवारात्रि मूल कारण की खोज मे लगे रहते हैं, उन तत्ववेत्ता ब्रह्मज्ञानियो के हृदय मे भी कामाग्नि-सन्दीपन कर देते है ।

यदपि भोग निस्सार, विराति में विघ्न करैं नित।
सब दोषन की खानि, जीव को साधैं अनहित ॥
करैं निलज मतिहीन, ज्ञान को धोय वनावैं।
सर्वस देहि नसाय, वुरो जग-बीच कहावैं ॥
यदि निन्दा याकी करै कोऊ, तद्यपि है महिमा वहुत।
हित वसत ब्रह्मज्ञानोहुंके, पामर की गिनतीहि कुत ॥५१॥

सार—संसारी विषय-भोग अत्यन्त वलवान हैं। और की तो क्या चलाई, ये सँसार-त्यागी ब्रह्मज्ञानियों के हृदयों में भी कामाग्नि प्रज्जवलित कर देते हैं।

51. If these objects of pleasure be unsubstantial or such as may take us far from abandoning the world and if the people blame them thinking them to be the seat of all vices, yet great and indescribable is their power in as much as they conquer even those who have attained high spiritual knowledge.

●

भवन्तो वेदान्तप्रणिहितधियामाप्तगुरवो
विचित्रालापानां वयमपि कवीनामनुचराः।
तथाऽप्येतद्भूमौ न हि परिहितात्पुण्यमधिकं
न चास्मिन्संसारे कुवलयदृशो रम्यपरम् ॥५२॥

आप वेदान्तवेत्ताओं के माननीय गुरु हों और हम उत्तम काव्यरचयिता कवियों के सेवक हैं; तो भी हमें यह वात कहनी ही पड़ती है कि परोपकार से बढ़कर पुण्य नहीं और कमल-नयनी सुन्दरी स्त्रियों से वढ़कर और सुन्दर पदार्थ नहीं ॥५३॥

खुलासा—आप वेदान्त-पारङ्गत पण्डितों के मान्य गुरु हैं—आपमें अपार विद्या-बुद्धि है। हम कुछ पढ़े-लिखे विद्वान नहीं, केवल काव्यशास्त्र

विनोदी कवीश्वरो के अनुचर हैं तो भी हमे अपनी समझ के अनुसार कहना पड़ता है कि इस जगत मे 'परोपकार' से उत्तम पुण्य नहीं है और 'मृगनयनी' कामिनियो से बढकर दूसरी सुन्दर वस्तु नही है। इसलिए बुद्धिमानो को धन-उपार्जन करके तन-मन-धन से परोपकार-पुण्य सचय करना और सुलोचना कामिनियो के साथ भोग-विलास करना चाहिये। ससार मे रहने वालो के लिए ये दोनो ही परमोत्तम कर्म हैं। हाँ, जिनका दिल इस नापायेदार दुनिया या जहान फानी से उदास या खट्टा हो गया है, उनकी बात दूसरी है।

पढे वेद वेदान्त, भये विद्योदधि पारा।
तिनहूँ के तुम गुरू, बुद्धिवल पाय अपारा॥
हम कछु जानत नाहिं, पढे नहिं विद्या भारी।
रहे कविन के दास, कहै ये बात विचारी॥

यहि जग बिच्च पर-उपकार-सम, अपर कछू है पुण्य नहिं।
अरु पकजनयनी त्रियन सो, वस्तु अधिक नहिं सुखद कहि॥५२॥

सार—परोपकार से बढकर पुण्य नहीं और स्त्री-भोग से बढ़कर सुख नही है।

52. If you are the respected preceptor of Vedantists, I am also the follower of poets who take delight in beautiful epic poems Nevertheless, know it for certain that in this world, there is no higher virtue than doing good to others and nothing more beautiful than a lotus-eyed woman

किमिह बहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यैः प्रलापै-
र्द्वयमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवनीयम्।
अभिनवमदलीलालालसं सुन्दरीणा
स्तनभरपरिखिन्नं यौवन वा वनं वा॥५३॥

का ही सदा भला होता है; चंचल-बुद्धि का सर्वनाश होता है। बुद्धि को स्थिर करके किसी एक बात पर जम जाना चाहिए। चाहे भोग ही भोगे जायँ, अथवा योग ही साधा जाय।

रसिक सुनहु तुम कान दे, सब ग्रन्थन को सार।
योग भोग में इक विना, यह संसार असार॥
सुनो औरहू बात पै, मुख्य बात ये दोय।
कै तिय-जीवन में रमै, कै वनवासी होय॥५३॥

सार—मनुष्यों को या तो नवीनायें भोगनी चाहिये अथवा संसार के झगड़े छोड़, वन में जा, तप करना चाहिये।

53 What is the use of so much unreasonable wild talks? There are only two things wh'ch a person should always desire enjoyment of viz. (i) the youth of a beautiful lady who is desirous of new amorous enjoyments and is bent down under the load of her breasts or; (ii) the forest,

✲

सत्यं जना वच्मि न पक्षपाताल्लोकेषु सर्वेषु च तथ्यमेतत्।
नान्यन्मनोहारि नितम्बिनीभ्यो दुःखैकहेतुर्न च कश्चिदन्यः॥५४॥

हे मनुष्यों! हम पक्षपात त्यागकर सच कहते हैं कि इस संसार में स्त्रियों से बढ़कर न कोई मन को हरने वाली वस्तु है और न कोई दुःखदायी वस्तु है॥५४॥

खुलासा—इस जगत में, सुख और दुःख दोनों ही का कारण एकमात्र मनोहर नितम्बों वाली स्त्री है। और भी स्पष्ट शब्दों में यों कह सकते हैं कि स्त्री ही सुख देने वाली और स्त्री ही दुःख देने वाली है; यानी सुख और दुःख दोनों का हेतु एकमात्र स्त्री ही है। एक कहावत है कि स्त्री, सम्पत्ति और सुरा—इन तीनों में दुःख और सुख दोनों ही हैं।

निस्सन्देह, इस जगत मे, पुरुष के लिये स्त्री से बढ कर सुखदायी और मनोहर दूसरी वस्तु नही। स्त्री अपने मधुर वचनो, सुन्दर हाव-भाव और उत्तम सेवा से पुरुष के शारीरिक और मानसिक क्लेशो को शीघ्र ही हर लेती है। स्त्री विपत्ति मे सच्चे मित्र की तरह परामर्श देती है और धैर्य धारण कराती है। विपत्ति मे और सब पुरुष को त्याग देते हैं पर यह अपने पति को नही त्यागती। भोजन के समय, जिस हित और प्रेम से यह खिलाती-पिलाती है, उस तरह सिवा जननी के, और कोई भी नही खिलाता-पिलाता। सम्भोगकाल मे, यह वेश्या की तरह अपने पति का सब तरह से मनोरजन करती है। इतना ही नहीं, उसके वश की वृद्धि भी करती है, यानी स्त्री से ही पुत्र-पौत्रादि होते है। मनुष्य कैसा ही दुखित क्यो न हो, घर मे आते ही स्त्री उसके सारे खेद और श्रम को हर लेती तथा उसे नरक से बचाती और स्वर्ग मे ले जाती है। स्त्री से ही—राम, कृष्ण, भगीरथ, ध्रुव, प्रह्लाद, अर्जुन, बुद्ध, शङ्कराचार्य, दयानन्द और गाँधी जैसे महापुरुष पैदा हुए और होते हैं, अतः यह स्पष्ट है कि स्त्री के समान सुखदायी इस जगत मे दूसरी चीज नही। मनोहर यह इतनी होती है कि अपनी एक मुस्कान में ही पुरुष का मन हर लेती है। पर वे सब सुख तभी मिलते हैं, जब कि स्त्री सती-साध्वी और पतिव्रता होती है। यही स्त्री अगर कुलटा-व्यभिचारिणी अथवा कर्कशा होती है, तो पुरुष के लिये यही—इसी लोक में—साक्षात् नरक हो जाता है। पर सच्ची पतिव्रता किसी विरले ही पुण्यवान को मिलती है।

जिसे पतिव्रता स्त्री मिलती है, उसे दुख-दैन्य, आफत-मुसीबत और शोक-चिन्ता प्रभृति सता नहीं सकते, क्योकि पतिव्रता नरक को स्वर्ग मे, दुख को सुख मे, विपद् को सम्पद् मे और शोक को हर्ष मे परिणत कर देने की क्षमता रखती है। वह घर के काम-काज करती, पुत्र-कन्याओ को पालती, उन्हें सुशिक्षा देती और कुपथगामी पति को सुपथगामी बना देती है। पुरुष की कडी कमाई का पैसा बडी ही किफायत से खर्च करती और उसे नष्ट होने से बचाती तथा पति का शोक हर लेती है। स्त्रियो के सम्बन्ध मे गोल्डस्मिथ ने, जो

इङ्गलैण्ड के एक नामी विद्वान ने, खूब कहा है। हम अपने पाठकों के ज्ञानवर्द्धनार्थ आपके अनमोल वचन नीचे देते हैं—"Woman it has been observed, are not naturally formed for great cares for themselves, but to soften ours." यह देखा गया है, कि स्त्रियाँ महत् चिन्ताओं का स्वयं सहने के लिए नहीं, वरन् हमारी चिन्ताओं को घटाने के लिये बनाई गई हैं। आपने एक जगह लिखा है—"She, who makes her husband and her children happy, who reclaims the one from vice and trains up the other to virtue, is a much greater character than ladies described in romance, whose whole occupation is to murder mankind with shaft from their quiver of their eyes," जो अपने पति और बच्चों को सुखी कर सकती है, जो अपने पति को कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर चला सकती है, जो अपने बालकों को सद्गुणों की शिक्षा दे सकती है, वह कल्पित कथाओं या उपन्यासों में वर्णित उन स्त्रियों से अच्छी है, जो अपने तरकश या नेत्रों के बाणों द्वारा मानवजाति का वध करना ही अपना कर्त्तव्य समझती हैं।

संसार में रूप का आदर है। रूप प्राणिमात्र को अपनी ओर खींचता है, पर रूप से गुण की पूजा अधिक होती है। रूप नेत्रेन्द्रिय को प्रसन्न करता है; पर गुण आत्मा पर अधिकार जमाता है। पोप महाशय कहते हैं—Beauties in vain their pretty eyes may roll, Charms strike the sight, but merit with the soul." सुन्दरियाँ वृथा ही अपने सु-नेत्रदरों को इधर-उधर चलाती हैं। सौन्दर्य का प्रभाव नेत्रों पर पड़ता है, किन्तु गुण आत्मा को जीत लेता है। मतलब यह कि, रूपवती से गुणवती रमणी कहीं भली होती है; पर जिसे ईश्वर ने ऐसी नारी दी है, जिसमें रूप के साथ सुन्दर गुणों का भी समावेश है, वह निश्चय ही पूर्व जन्म का तपस्वी और पुण्यात्मा है। उसे इसी पृथ्वी पर ही स्वर्ग है। लेकिन जिसकी स्त्री फूहड़ और कर्कशा है, घर को मैला रखती है, बच्चों को सूगले रखती है, खाना बनाना भी नहीं जानती, मन में

आये जैसी कच्ची-पकी, जली-अधजली रोटियाँ खिलाती है, हर घडी मुँह फुलाये रहती है, घर मे देवासुर-सग्राम का तमाशा दिखाया करती है, उस पुरुष के लिए यही नरक है।

किसी कवि ने खूब कहा है—

भात को माँड करै नहिं राँड, औ सौगुनो साभर साग मे डारै।
भूल कै खाँड लै डारत दाल मे, हीग फुलाय के खीर बघारै॥
चाक ते रोटी हु मोटी करै, औ काची ही राखै कि जार ही डारै।
भूत-सी भौन मे ठाढी रहै परमेश्वर ऐसी सो पालौ न पारै॥

अर्थात् जो स्त्री भात का माँड नही पसाती, साग मे सौगुना नामक डालती है, भूल कर दाल मे चीनी मिला देती है, खीर मे हीग का छौक देती है, कुम्हार के चाक जैसी मोटी रोटियाँ करती है, उन्हें कच्ची रखती या जला डालती है, और भूतनी-सी घर मे खडी रहती है, परमेश्वर ऐसी स्त्री से पाला न पटके। जिन पर ईश्वर का कोप होता है या किसी का शाप होता है, उन्हे ही ऐसी फूहड स्त्री मिलती है।

कहा है—

जानो दारुण शापफल, मिलहि दुष्ट जिहि नारि।

यद्यपि पतिव्रता नारी सुखो का भण्डार है, तो भी स्त्री सती हो चाहे असती, पतिव्रता हो चाहे व्यभिचारिणी, स्त्री के कारण पुरुष को नाना प्रकार के कष्ट उठाने ही पडते हैं। स्त्री के लिए ही वह, स्वास्थ्य और जीवन का खयाल न रखकर भी रात-दिन अविरत परिश्रम करता है। स्त्री के लिये ही पुरुष दुर्जनो के कुवचन सहता, उनको हाथ जोडता और न करने योग्य कर्म करता है। बहुत कहाँ तक कहें, स्त्री के लिये पुरुष नीच-से-नीच कर्म करता, जेल जाता और फाँसी चढता है। अगर इस जगत मे चन्द्रानना कमलनयनी कामिनियाँ न होती तो कौन बुद्धिमान राजाओ और अमीरो की सेवा मे अनेक प्रकार के कष्ट उठाकर अधीर चित्त होता ?

यह सब तो स्त्री की मोह-माया में फँसा पुरुष स्वयं करता और स्वयं दुःख भोगता है। पर यदि दुर्भाग्य से स्त्री कुलटा होती है, तब तो घर में ही नाना प्रकार के कष्ट और यन्त्रणायें भुगाती है। कुलटा कामिनी का शरीर यदि पुष्पवत् कोमल भी होता है, तो उसका हृदय वज्रवत् कठोर होता है। उसके दिल में दया, माया और स्नेह नाम को भी नहीं होते। वह सच्ची पिशाचनी होती है। शम्बरासुर और विचित्ति की माया को समझना सहज है, पर कुलटा की माया को समझना कठिन है। वह अबला दीखने पर भी सबला और गौ होने पर भी बाघ होती है। वह निरंकुश होकर पुरुष को नाना प्रकार से नचाती और सेवक की तरह उससे काम कराती है। वृथा विलास-चिह्न दिखा कर उससे पैर दबवाती और अपनी इच्छा होने से उसका रक्त-मांस चूसती है। जरा-सी फरमाइश पूरी न होने से और घर की एक चीज भी समय पर न आने से उसके प्राण ले लेती और उसके कलेजे को वाक्यवाणों से विद्ध करके चलनी बना देती है। बहुत कहाँ तक कहें, नरक के दुःख कुलटा के दिये दुःखों के सामने लजा जाते हैं।

सारांश यही है, कि अगर स्त्री नवयौवना, रूपवती और पतिव्रता हो तो पुरुष को जो कष्ट उठाने पड़ते हैं, उनसे उतना कष्ट या मनोवेदना नहीं होती। वह स्वयं बाहर के कष्टों को हर लेती है। पर पतिव्रता के होने पर भी, पुरुष कष्ट और अपमान से बच नहीं सकता। इसलिये, इसमें शक नहीं कि स्त्री से सुख भी है और दुःख भी है। सुख थोड़ा और नाममात्र का है और वह भी अज्ञानी के लिये। ज्ञानी और विरागी की नजरों में तो दुःख ही दुःख है; इसलिये, जिन्हें कष्ट और झंझटों से बचना हो, जिन्हें आत्मा का कल्याण करना हो, वे इस मनोहर विष-बेल से बचें। फौन्टेनेली महोदय कहते हैं—"A beautiful woman is the hell of the soul, the purgatory of the purse and the paradise of the eyes." सुन्दरी कामिनी आत्मा का नरक, सम्पत्ति का नाश और नेत्रों का स्वर्ग है।

'गिरधर' कविराय कहते हैं—

तीनों मूल उपाधि की, जर जोरू जामीन ।
है उपाधि तिसके कहाँ, जाके नहिं ये तीन ?
जाके नहिं ये तीन, हृदय मे नाहिन इच्छा ।
परम सुखी सो साधु, खाय यद्यपि लै भिक्षा ॥
कह गिरधर कविराय, एक आतम रस भीनो ।
निर्भय विचरे सन्त, सर्वथा तज कर तीनो ॥

धन, जमीन और स्त्री—ये तीनो माया-मोह मे उलझाने वाले हैं ।

कहहि सत्य तज पक्ष हम, लोक-विमोहन नारि ।
अरु या सो दु खद अपर, नहिं कछु लेहु विचारि ॥५४॥

सार—स्त्री से बढकर सुखदायी और दुखदायी और कोई नही ।

54 O man, I tell you the truth and without any partiality that in this world there is nothing so attractive to the mind as the women and again, nothing so painful also

●

तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष निर्मलविवेकदीपकः ।
यावदेव न कुरङ्गचक्षुषा ताड्यते चपललोचनांचलैः ॥५५॥

विवेकियो के हृदय मे निर्मल विवेक-रूपी दीपक का प्रकाश तभी तक रहता है, जब तक मृगनयनी स्त्रियो के चञ्चल नेत्ररूपी आँचल से वह बुझाया नही जाता ॥५५॥

खुलासा—अन्त करण मे कामादि मल-रहित निर्मल विवेक का दीपक उसी समय तक जलता है, जब तक कि मृगलोचनी के चंचल नेत्ररूपी आँचल की फटकार नही लगती । और भी स्पष्ट शब्दो मे यो कह सकते हैं कि स्त्रियो के कटाक्ष से विवेकी पुरुषो का भी विवेक ध्वस्त हो जाता है ।

'भामिनी-विलास' मे लिखा है—

तदवधि कुशली पुराणशास्त्रस्मृतिशतचारुविचारजो विवेकः ।
यदवधि न पद दधाति चित्ते हरिणकिशोरदृशो दृशोर्विलासः ॥

कुशलता और पुराण-शास्त्र तथा स्मृतियों के अनेक चारु विचारों से उत्पन्न हुआ विवेक तभी तक है, जब तक मृग के बच्चे की-सी आँखों वाली कामिनी के नेत्र-विलास हृदय में प्रवेश नहीं करते; अर्थात् स्त्री की तीखी नजर पड़ते ही विवेक और चतुराई सब काफूर हो जाते हैं।

उस्ताद 'जौक' भी कुछ ऐसी ही बात कहते हैं—

ऐ जौक ! आज सामने उस चश्मे मस्त के।
बातिल सब अपने दाव-ये-दानिशवरी हुए॥

ऐ जौक ! उसकी मदमत्त मनोहर आँखों के सामने आज हमारी योग्यता और बुद्धिमत्ता का अन्त हो गया।

सच है, जब तक चञ्चल नेत्रों वाली कामिनी की नजर नहीं मिलती, तभी तक विवेक, बुद्धि और विचारों का अस्तित्व समझिये। उसकी नजर से नजर मिलते ही इनका खातमा हो जाता है।

दीपक जरत विवेक कों, तौ लों या चित माहिं।
जौ लों नारि-कटाक्ष-पट, पवनसुत नाहिं ॥५५॥

सार—मृगनयनी नवयुवती से चार नजर होते ही विवेक और और बुद्धि सब हवा हो जाते हैं।

55. The light of reasoning flickers in the heart of a wise man only so long as it is not put out by the moving eyes of a lotus-eyed woman—as if by a scarf.

●

वचसि भवति सङ्गत्यागमुद्दिश्य वार्त्ता
श्रुतिमुखरमुखानां केवलं पण्डितानाम्।
जघनमरुणरत्नग्रन्थिकाञ्चीकलापं
कुवलयनयनानां को विहातुं समर्थः ॥५६॥

शास्त्रवक्ता पण्डितों का स्त्री-त्याग का उपदेश केवल कथनमात्र ही है। लाल रत्न-जडित कर्द्धनीवाली कमलनयनी स्त्रियो की मनोहर जाँघो को कौन त्याग सकता है ॥५६॥

खुलासा—पाण्डित्य का ढकोसला दिखाने वाले पण्डित वास्तव मे स्त्री-त्याग का उपदेश नही देते, खाली अपना पाण्डित्य दिखाने के लिये जुबान से बकते हैं। वे गोस्वामी तुलसीदास की इस कहावत के अनुसार 'पर-उपदेश कुशल बहुतेरे, आप चलहि अस नर न घनेरे' लोगो को उपदेश भर ही देते हैं, आप खुद अमल नही कर सकते। वे किसी ललित ललना के कटाक्ष वाणो से विद्ध नही हुए हैं, इससे बातें बनाते हैं। जब स्वय उन पर पडेगी, तब सब शास्त्रो को भूल जायेंगे।

महाकवि 'दाग' ने ऐसो ही के लिये कहा है—

दिललगी दिल्लगी नही नासह।
तेरे दिल को अभी लगी ही नही॥

उपदेशक जी! दिल-लगी दिल्लगी नही, उसी समय तक आप इसे दिल्लगी समझते हैं, जब तक कि आप के दिल को लगी नही है। अगर किसी से दिल लगा तो आप का सारा पाण्डित्य हवा हो जायगा।

सौन्दर्य मामूली चीज नही। ऐसा कौन है, जिसे सौन्दर्य अपनी ओर न खीच सके? क्लेण्डन कहते है—"A beautiful object doth attract the sight of all men, that it is no man's power not to be pleased with it" सुन्दर पदार्थ मे मनुष्यमात्र की दृष्टि को आकर्षित करने की इतनी प्रबल शक्ति है, कि कोई भी मनुष्य उससे प्रसन्न हुए विना रह नहीं सकता। सुन्दरता मनुष्य के दिमाग मे चढ जाती और उसे नशे से मस्त कर देती है। देखने वाले का दिल वश मे नही रहता। जिम्मरमैन महोदय ने ठीक ही कहा है—'Beauty is worse than wine, it intoxicates both holder and the beholder"—सौन्दर्य शराब से भी बुरा है। यह उसके रखने वाले और उसके देखने वाले दोनो को मतवाला कर देता है। सुन्दरियो के सौन्दर्य

को देख कर, मन और इन्द्रियों को वश में रखने के पूर्ण अभ्यासी भी, अपने मन को वश में रखने में असमर्थ होते है। पुराणों में लिखा है कि पूर्वकाल में मरीचि, शृङ्गी, विश्वामित्र और पराशर जैसे महामुनि, जो केवल वृक्षों के पत्ते और हवा भक्षण करके जीते थे, इन मोहिनियों को सामने पाकर इन्हें त्याग न सके, तब साधारण लोगों की क्या गिनती ? शेक्सपियर ने कहा ने कहा है—1"Beauty is a witch against whose charms faith melth in to blood,"—सुन्दरता ऐसी जादूगरनी है कि उसके जादू से धर्म-ईमान गलकर खून हो जाते हैं; यानी रूप के सामने धर्म-ईमान नहीं ठहरते. न जाने कहां पर काफूर हो जाते हैं।

पण्डित जन जब कहत है, तिय तजिवे की वात।
करत वृथा वकवास वह, तजी नैंक नहिं जात॥
तजी नैंक नहिं जात, गात-छवि कनक वरन वर।
कमल-पत्र-सम नैन, वैन वोलत अमृत झर॥
सोहत मुख मृदु हास, अंग आभूषण मण्डित।
ऐसी तिय को तजै, कौन सो है वह पण्डित ॥५६॥

सार—सुन्दरी नवयौवना कामिनी को सामने पाकर त्यागना खेल नहीं; टेढ़ी खीर है। इसकी निन्दा है करने वाले चाहे अनेक हों, पर त्यागने वाले एक भी नहीं।

56. It is only in the speeches of the talkative scholars that the abandonment of the company of a woman is advocated. But who is strong-minded enough to give up in actual practice the hips of lotus-eyed woman wearing girdle set with red jewels ?

●

स्वपरप्रतारकोऽसौ निन्दति योऽलीकपण्डितो युवतीः।
यस्मात्तपसोऽपि फलं स्वर्गस्तस्यापि फलं तथाप्सरसः ॥५७॥

जो विद्वान युवतियों की निन्दा करता है, वह निश्चय ही झूठा पण्डित है। उसने पहिले आप धोखा खाया है और अब दूसरों को धोखा देता है, क्योंकि अनेक प्रकार की तपस्याओ का फल स्वर्ग है और स्वर्ग का फल अप्सरा-भोग है ॥५७॥

खुलासा—जो विद्वान पण्डित नवयौवना कामिनियो की निन्दा करते है; उनमे अनेक दोष बताते हैं, वे पागल हैं। वे स्वर्ग की प्राप्ति के लिये अनेक प्रकार की तपश्चर्या और जप तप करते हैं। तप-सिद्धि होने पर स्वर्ग मे जाना चाहते हैं। वहाँ उनको भोगने के लिये अप्सरायें मिलेंगी, तब यही उनके भोगने मे कौन-सी बुराई है ? यह तो सीधी-सी बात है कि तपस्या का फल स्वर्ग है और स्वर्ग का फल अप्सरायें।

"आप पाण्डे जी बैंगन खावें, और को परदोष बतावें" ऐसे परोपदेशक दुनिया मे बहुत हैं। आप वही काम करते हैं, पर औरो को मना करते हैं।

ऐसे महापुरुषो के सम्बन्ध मे ही महाकवि 'दाग' कहते है—

हूर के वास्ते जाहिद ने इबादत की है।
खैर तो जब है, कि जन्नत मे न जाने पावे ॥

भक्त महाशय ने स्वर्गीय अप्सराओ या हूरो के भोगने क लिये ईश्वर की उपासना की है। बडा मजा हो, अगर ये स्वर्ग में जाने ही न पायें।

महाकवि 'जौक' कहते हैं —

कब हकपरस्त है जाहिद जन्नतपरस्त है।
हूरो पै मर रहा है, यह शहवतपरस्त है ॥

कौन कहता है, भक्तजी ईश्वर-उपासक हैं ? ये तो घोर कामी और इन्द्रिय-दास हैं। स्वर्ग की अप्सराओ पर मर रहे हैं। जो स्वर्ग कामना से तप करते हैं, उनकी स्त्री-निन्दा ध्यान देने योग्य नही, वे वृथा निन्दा करते हैं। आप स्वर्ग मे जाकर स्त्री ही भोगेंगे और करेंगे क्या ? स्वर्गीय अप्सरायें या हूरें भी तो आखिर स्त्रियाँ ही हैं न ? ऐसे धोखेबाजो की बातो मे न आना चाहिये।

उस्ताद 'जौक' ने कहा है :—

रेशे सफेदे शैख में है जुल्मते फरेब ।
इस मक्र चाँदनी पै न करना गुमाने-सुबह ॥

शेख जी की सफेद दाढ़ी में कपट का अन्धकार छिपा हुआ है। इस झूठी चाँदनी पर प्रातःकाल की सफेदी का धोखा मत खाना; यानी इनकी बात मान, कामिनियों को भोगना न छोड़ना। ऐसे घोंघा-बसन्त अपनी सिद्धई जमाने के कपट से ऐसी बेतुकी बातें कहते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं, जिनको इन नारी-रत्नों की कद्र ही नहीं मालूम; इससे निन्दा करते हैं। जिसे जिसकी कद्र ही नहीं मालूम, वह तो उसकी निन्दा ही करेगा। जंगल में पड़े हुए गज-मोतियों को भीलनी पाकर भी फेंक देती हैं; पर उनकी कीमत जानने वाला जौहरी, उन्हें उठाकर छाती से लगा लेता है। जिसने शराब नहीं पी, जिसे शराब का मजा नहीं मालूम, वह शराब की निन्दा ही करता है। उसे कोई लाख समझाये, वह नहीं समझता। ऐसे ही मौके का एक शेर महाकवि 'दाग' ने कहा है :—

लुत्फे मय तुझसे क्या कहूँ जाहिद ।
हाय ! कम्बख्त तूने पी ही नहीं ॥

रे भक्त ! मैं तुझे शराब का मजा कैसे बताऊँ ? कमबख्त, तूने उसे पिया ही नहीं। जो मदिरा पीता है और कामिनियों को भोगता है, वही जानता है कि उसमें क्या मजा है। उस मजे का हाल जुबान से बताना कठिन ही नहीं, असम्भव है। सच मानिये, पृथ्वी पर अगर स्वर्ग है, तो कमलनयनी उठती जवानी की सुन्दरियों में ही है।

नारिन की निन्दा करत, ते पण्डित मतिहीन।
स्वर्ग गये तिनको सुनें, सदा अप्सरा-लीन ॥५७

सार—स्त्रियों की निन्दा करने वाला पाखण्डी है। आप उन्हें भोगना चाहता है, पर दूसरों को रोकता है।

मतवाले हाथी का मस्तक विदारने वाले और बलवान सिंह को मारने वाले बहुत है, परन्तु कामदेव का गर्व खर्व करने वाले, स्त्री से हार न मानने वाले कोई विरले ही है। यहाँ गजराज और मृगराज को भी मार डालने वाला शूरवीर कामिनी के सामने हाथ जोड रहा है।

57. Those scholars who speak ill of women are liars in as much as they deceive others and also themselves, for the result of austerity is heaven and the result of attaining heaven is the enjoyment of nymphs.

●

मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः
केचित्प्रचण्डमृगराजवधेऽपि दक्षाः
किं तु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य
कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः ॥५८॥

इस पृथ्वी पर, मतवाले हाथी का मस्तक विदारने वाले शूर अनेक हैं, प्रचण्ड मृगराज सिंह के मारने वाले भी कितने ही मिल सकते है, परन्तु बलवानो के सामने हम हठ करके कहते है, कि कामदेव के मद का मर्दन करने वाले पुरुष कोई बिरले ही होगे ॥५८॥

खुलासा—हाथियो और सिंहो को पराजित करने वाले शूरवीर इस पृथ्वी पर अनेक मिल सकते हैं, पर कामदेव को वश मे करने वाला अथवा कामिनी के कटाक्ष बाणो से पराजित न होने वाला, कोई एक भी कठिनाई से मिलता है। बडे-बडे युद्ध-क्षेत्रो मे विजयी होने वाले शूर-वीरो की भी शूर-वीरता कामिनियो के आगे न जाने कहाँ चली जाती है। बडे-बडे बहादुरो की जुबान से यही निकलता है—

मर गये हम इक इशारे मे निगाहे-नाज के।

पर स्वामी शकराचार्य जी के कथनानुसार, सच्चा शूरवीर वही, जो मनोज—कामदेव के बाणो से व्यथित न हो, अर्थात् कामिनी के जाल मे न फँसे। कहा है —

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु।
प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु को वा प्राप्तो न मोहं ललनाकटाक्षैः ॥

संसार में सबसे बड़ा शूरवीर कौन है ? सबसे बड़ा शूरवीर वही है, जो कामदेव के बाणों से पीड़ित न हो। बुद्धिमान, धीर और समदर्शी कौन है ? जो स्त्री के कटाक्ष से मोहित न हो।

हमें एक सर्वजीत नामक राजा की कथा याद आ गई है। उसे हम अपने पाठकों के मनोरंजनार्थ नीचे लिखते हैं। पाठक उसे कोरे मनोरंजन का ही मसाला न समझें, बल्कि सच्चे सर्वजीत बनने की चेष्टा भी करें।

एक राजा ने सारी पृथ्वी को जीत कर अपना नाम 'सर्वजीत' रखा। सब देशों की रैयत और उसके मातहत राजा-महाराजा उसे 'सर्वजीत' कहने लगे, लेकिन स्वयं राजमाता—राजा की जननी—उसे 'सर्वजीत' न कहकर, पुराने नाम से ही पुकारतीं।

एक दिन राजा ने अपनी माँ से कहा—"माता जी ! सारा संसार मुझे 'सर्वजीत कहता है, पर आप मुझे मेरे पुराने नाम से ही क्यों पुकारती हैं ?" राजामाता ने कहा—"बेटा ! बाहर के देशों के जीतने से कोई 'सर्वजीत' नहीं हो सकता। तूने सारा संसार जीत लिया; पर अपना शरीर, मन और इन्द्रियाँ तो जीतीं ही नहीं। तेरा शरीर दिन-दिन क्षय हो रहा है और तेरी इन्द्रियाँ तुझे विषय-भोगों और कुकर्मों की तरफ ले जा रही हैं। पहले तू भीतरी शत्रु—काम, क्रोध, मोह, लोभ प्रभृति और अपने मन तथा इन्द्रियों को वश में कर, तब मैं तुझे 'सर्वजीत' खुशी से कहूंगी।

व्यास भगवान ने कहा है :—

न रणे विजयाच्छूरोऽध्ययनान्न तु पण्डितः।
न वक्ता वाक्पटुत्वेन न दाता चार्थदानतः॥
इन्द्रियाणां जये शूरो धर्मं चरति पण्डितः।
हितप्रायोक्तिभिर्वक्ता दाता सम्मानदानतः॥

रण-क्षेत्र में विजयी होने से कोई शूर नहीं हो सकता, शास्त्र पढ़ने से कोई पंडित नहीं हो सकता, धड़ाधड़ व्याख्यान देने से कोई वक्ता नहीं हो सकता और धन दान करने से कोई दाता नहीं हो सकता।

जो इन्द्रियो पर जय प्राप्त करता है, वह शूरवीर कहलाता है; जो धर्म पर चलता है, वह पण्डित कहलाता है, जो हितकारी बातें कहता है, वह वक्ता कहलाता है और जो दूसरो का आदर-सम्मान करता है, वह दाता कहलाता है।

हाथी मारनहार, होत ऐसे हु शूरे।
मृगपति वध कर सके. वक नहिं नेकहु पूरे॥
वडे-वडे वलवन्त वीर सव तिनके आगे॥
महावली यह काम, जाहि देखत सव भागे॥
अभिमान भरे या मदन को, मान मार मेटे अवधि।
नर धरम-धुरन्धर वीर वै, विरले या ससार-मधि॥५८॥

सार- शूरवीर इस जगत मे वहुत है, पर कामिनियो के कटाक्ष-वाणो से घायल न होने वाला सच्चा शूरवीर शायद ही कोई एक हो।

58 There are many a hero on this earth who can tear the head of a mad elephant and there are also many powerful enough to kill a fearful lion; but I can challenge all the strong men and say that there are few who can fully control the excitements of passions

●

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति स नरस्तावदेवेन्द्रियाणां
लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालम्वते तावदेव।
भ्रूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथगता नीलपक्ष्माण एते
यावल्लीलावतीना हृदिन धृतिमुषो दृष्टिवाणाः पतन्ति॥५६॥

पुरुष सन्मार्ग म तभी तक रह सकता है, इन्द्रियो को तभी तक वश मे रख सकता है, लज्जा को उसी समय तक धारण कर सकता है, नम्रता का अवलम्वन उसी समय तक कर सकता है, जव तक कि लीलावती स्त्रियो के भौह-रूपी धनुष से, कानो तक खीचे गये, श्याम

उन्मत्तप्रेमसंरम्भादारभन्ते यनङ्गनाः।
तत्र प्रत्यूहमाधातुं ब्रह्मापि उलु कातरः ॥६०॥

अतिशय प्रेम की उमंग से उन्मत्त होकर स्त्रियाँ जिस काम को आरम्भ कर देती हैं: उस काम में विघ्न-बाधा उपस्थित करते ब्रह्मा भी डरता है ॥६०॥

खुलासा—इश्क के जोश और जल्दी में स्त्री जो काम कर बैठती है, उससे उसे, मनुष्य तो कौन चीज है, स्वयं ब्रह्मा भी नहीं रोक सकता। स्त्री अत्यन्त काम-पीड़ित होने पर जो छल-बल और साहस के काम करती है, उनको देखकर, उसके बनाने वाला ब्रह्मा भी दांतों तले अँगुली देने लगता है। सास सुसर, पति-पुत्र कोई भी उसे कुकर्मों से विरत कर नहीं सकते।

कामवती स्त्री अत्यन्त कुटिल, क्रूर आचरण वाली और लज्जाहीना हो जाती है। उस समय वह अपने पति, पिता, माता, पुत्र, बन्धु और कुटुम्ब तक से द्रोह करने और उनका नाश करने में भी नहीं हिचकती। घमासान युद्धक्षेत्र में भी वह बन्दूक की गोलियों और तोपों के गोलों की परवा न करके, यदि उसे जाना हो तो पहुंचती है। जिस श्मशान में अकेला-दुकेला मर्द भी न जा सकता हो, उसमें वह घोर अँधेरी रात में बादलों के गरजने बिजली के कड़कने और ऐसा ही अनेक आपदाओं के होने पर भी बेधड़क पहुंचती है। स्त्री के साहस की बात न पूछिये। ऐसा कौन-सा काम है जिसे वह इच्छा करने पर, नहीं कर सकती? किसी पाश्चात्य विद्वान ने कहा है—A woman when she either loves or hates, will dare anything." स्त्री जब प्रेम या घृणा किसी एक पर तुल जाती है, तब सब कुछ करने का साहस कर सकती है।

किसी कवि ने कहा है—

काह न अबला कर सके, कहा न सिन्धु समाय?
काह न पावक में जरे, काहि काल नहि खाय?

'रसिक' कवि ने कहा है—

काह त्रिया नहि कर सके, कामवती जब होय ?
'रसिक' सास पति पुत्र सब, कर न सकै कछु कोय॥

एक पुत्र छोडकर, अपनी इच्छा से, स्त्री सब कुछ कर सकती है। केवल यही उसकी नही चलती।

महामत्त या प्रेम को जब तिय करत उदोत।
तब वाके छल-बल निरखि, विधिहू कायर होत॥६२॥

सार—कामोन्मत्त स्त्री जो चाहे सो कर सकती है।

60 Even Brahma (the creator) has not the power to obstruct the work which a woman undertakes being impassioned with the excitements of love.

※

तावन्महत्त्वं पाण्डित्यं कुलीनत्वं विवेकिता।
यावज्ज्वलति नांगेषु हन्त पंचेषुपावकः॥६१॥

बड़प्पन, पण्डिताई, कुलीनता और विवेक, ये मनुष्य के हृदय मे तभी रह सकते हैं, जब तक शरीर मे कामाग्नि प्रज्वलित नही होती॥६१॥

खुलासा—इश्क मे जात-पांत और नीच-ऊँच का विचार नही है। कामी पुरुषो के विवेक या सत्-असत् की विचार-शक्ति को तो स्त्रियाँ अपनी एक नजर में ही हर लेती हैं। जब भले और बुरे को विचारने की शक्ति नही रहती, तब मनुष्य मे कुलीनता प्रभृति गुण कैसे रह सकते है? अनेक पुरुष मुसलमानियो के प्रेम में फँसकर मुसलमान होगये हैं। कितने ही विलायती मेमो के मोहजाल में फँसकर अपने हिन्दुत्व और ब्राह्मणत्व को तिलाञ्जलि देकर काले साहब बन गये हैं। यह तो कुछ नही, हमने कितने ही उच्च कुल के हिन्दू को मेहतरानियो के इश्क मे गिरफतार होकर, मेहतर होते देखा है। इसमे जरा भी शक नही कि कामाग्नि के प्रज्वलित होते ही बडप्पन और कुलीनता प्रभृति हवा हो जाते हैं।

जबसे अँग्रेजी राज इस देश में हुआ है, अनेक अमीरों के लड़के भारत में बी० ए०, एम० ए० पास करके, बैरिस्ट्री या सिविल सर्विस की परीक्षा पास करने इङ्गलैण्ड जाते हैं। ये विद्वान नवयुवक वहाँ की मिसों की लुनाई, सुघड़ाई और रूप-माधुरी देखकर पागल हो जाते हैं। कितने ही उनको व्याह लाते हैं और इस तरह अपने दीनो-ईमान या धर्म को खोकर जातिच्युत होते हैं। यहाँ के लोग उनकी हँसी उड़ाते और घोर-घोर निन्दा करते हैं। पर इससे होता क्या है? उनके वश की बात नहीं। नवयौवना मिसों से चार नजर होते ही, ये अपनी विद्या-बुद्धि को भूलकर, उन पर पागल हो जाते हैं।

महाकवि 'अकबर' ने ऐसे ही एक लन्दन-प्रवासी का, जो एक मिस के केश-पाश में फँस गया था, अच्छा चित्र खींचा है—

रात उस मिस से कलीसाँ में हुआ मैं दो चार।
हाय-वह हुस्न वो शोखी वो नजाकत वो उभार॥
जुल्फ-पेचाँ में वो सजधज कि बलायें भी मुरीद।
कदे-राना में वो चमखम कि कयामत भी शहीद॥
दिलकशी चाल में ऐसी कि सितारे रुक जायँ।
सरकशी नाज में ऐसी कि गर्वनर झुक जायँ॥
आतिशे हुस्न से तकवा को जलाने वाली।
बिजलियाँ लुत्फे-तबस्सुम से गिराने वाली॥
पिस गया, लोट गया, दिल में सकत ही न रही।
सुर थे तमकीन के जिस गत में वो गत ही न रही॥
अर्ज की मैंने कि ऐ गुलशने-फितरत की बहार।
दौलतो इज्जतो ईमाँ तेरे कदमों पै निसार॥
तू अगर अहदे वफा बाँध के मेरी हो जाय।
सारी दुनियाँ से मेरे कल्ब को सेरी हो जाय॥

रात के समय उस मिस से गिरजे में मेरी मुठभेड़ हो गई। हाय रूप-लावण्य, उसकी चंचलता, उसकी जवानी के उभार का बयान कैसे

कहूँ ? उसकी पेचदार लटो मे वह बला की सजधज थी कि जिसको देख कर बलायें स्वय उसका लोहा मान ले। उसके नाजुक शरीर मे वह चमक-दमक कि जिसको देखकर प्रलय भी उस पर मरने लगे। उसकी चाल मे ऐसी कशिश कि जिसको देखकर सितारो की चाल भी मन्दी पड जाय। उसके हाव-भाव मे ऐसी ऐंठ कि जिसको देख कर गवर्नर लोग भी उसके सामने सिर झुका दे। उसकी खूबसूरती मे ऐसी लपट कि जिससे सदाचार के भाव भस्म हो जायँ। उसकी मन्द मुस्कान मे ऐसी चकाचौंध कि जिससे प्रेमी के दिल पर बिजली गिर पड़े। उसको देखते ही मेरा दिल पिस गया और मेरे शरीर की सारी ताकत निकल गई। मैं जमीन पर बेहोश होकर लोटने लगा। धीरज के स्वर जिस गत मे बज रहे थे, वह गत ही हृदय मे न रही। मैंने कहा—"ऐ प्रकृति की फुलवाड़ी की बहार! मेरा धन-धर्म और मान-मर्यादा सब तेरे चरणो मे अर्पित है। यदि सच्ची मुहब्बत की प्रतिज्ञा करके तू मेरी हो जाय, तो मेरा जी सारे ससार से भर जाय।"

बुद्धि विवेक कुलीनता, तौ लो ही मन माहिं।
कामबाण की अग्नि तन, जौ लो धधकत नाहिं ॥६१॥

सार—काम-वासना, कुलीनता, विवेक और पाण्डित्य प्रभृति सद्गुणो का शत्रु है।

61. Respectability, wisdom, good sense and family distinction find place in a man only so long as the fire of passion has not begun to burn in him,

शास्त्रज्ञोऽपि प्रथितविनयोऽप्यात्मबोधोऽपि बाढं
संसारेऽस्मिन् भवति विरलो भाजनं सद्गतीनाम्।
ये नैतस्मिन्निरयनगरद्वारमुद्घाटयन्ती
वामाक्षीणां भवति कुटिलभ्रूलता कुञ्चिकेव ॥६२॥

शास्त्रज्ञ, विनयी और आत्मज्ञानियों में कोई विरला ही ऐसा होगा, जो सद्गति का पात्र हो, क्योंकि यहाँ वामलोचना स्त्रियों की वांकी भ्रू-लता-रूपी कुञ्जी उनके लिए नरकद्वार का ताला खोले रहती है ॥६२॥

खुलासा—शास्त्रज्ञ और ब्रह्मज्ञानियों की सद्गति ता तभी हो सकती है, जब कि वे कामिनि की वाँधी भौंहों की झपेट में आने से वचें। उनकी कमान-सी भौंहों को देखकर, वड़े-वड़े वेदान्तियों की अक्ल मारी जाती है। वह हजार गीता, भागवत और उपनिषद्रों का पाठ करें, हजार योग-वाशिष्ठों का परिशीलन करें; पर उनके चित्त पर चढ़ी कामिनी का उतरना वहुत कठिन है।

पण्डितेन्द्र जगन्नाथ अपने 'भामिनी-विलास में लिखते हैं—

उपनिषदः परिपीता गीतापि च हन्त मतिपथं नीता।
तदापि न हा विधुवदना मानससदनाद्बहिर्याति ॥

उपनिषदों का पान किया और गीता भी भली भाँति पढ़ी समझी और उसका मनन किया; परन्तु हाय ! इतना सव करने पर भी, वह चन्द्र-वदनी मेरे मनरूपी घर से वाहर नहीं जाती।

ईश्वर की राह में कामिनी और काञ्चन दो घाटियां हैं।

अगर-संसार में कामिनी और काञ्चन न होते, तो इस संसार सागर से तरना और मोक्ष लाभ करना कठिन न होता। मोक्ष की राह में कामिनी और काञ्चन दो घाटियाँ पड़ती हैं। इन घाटियों को पार करना अति कठिन है। जो इन घाटियों को लाँघने में समर्थ हो, वही सद्गति या मोक्ष का अधिकारी हो सकता है।

महात्मा 'कवीर' कहते हैं—

चलूँ चलूँ सब कोई कहै, पहुँचे विरला कोय।
एक कनक अरु कामिनी, दुर्लभ घाटी दोय ॥१॥
एक कनक अरु कामिनी, ये लाँवी तरवारि।
चाले थे हरि भजन को, विच ही लीन्हा मारि ॥२॥

नारि पराई आपनी, भुगतै नरकै जाय ।
आगि-आगि सब एक सी, देह हाथ जरि जाय ॥३॥
नारी तो हम भी करी, पाया नही विचार ।
जब जानी तब परिहरी, नारी बड़ा विकार ॥४॥
नारी नसावे तीन सुख, जेहि नर पासे होय ।
भक्ति मुक्ति अरु ज्ञान मे, पैठि सकै नहिं कोय ॥५॥
एक कनक अरु कामिनी, दोउ अग्नि की झाल ।
देखे ही ते पर जले, परसि करे पैमाल ॥६॥
जहाँ काम तहँ राम नहिं, राम तहाँ नहिं काम ।
दोऊ कबहूँ ना रहे, काम राम इक ठाम ॥७॥

चलूँ चलूँ सब कहते है, पर कोई विरला ही पहुचता है, क्योकि उस (भगवान की) राह मे कनक और कामिनी दो दुर्लभ्य घाटियाँ हैं ॥१॥

कनक और कामिनी—ये दो लम्बी तलवारें हैं । हरिभजन को चले थे पर इन तलवारो ने बीच राह मे ही मार लिया ॥२॥

स्त्री अपनी हो चाहे पराई, भोगने से नरक मे जाना ही पडता है, क्योकि अपनी आग और पराई आग—दोनो आगो मे ही हाथ देने से हाथ तो जलता ही है ॥३॥

जब हममे विवेक-विचार नही था, तब हमने भी स्त्री की थी; लेकिन जब उसका असल तत्व जाना, तब उसे त्याग दिया, क्योकि स्त्री बड़ी विकारवती है ॥४॥

स्त्री तीनो सुखो को नष्ट कर देती है । जिसके स्त्री होती है, उसे ज्ञान नही होता, अत ईश्वर की भक्ति मे भी मन नही लगता और भक्ति बिना मुक्ति नही मिलती ॥५॥

कनक और कामिनी दोनो आग की लपट हैं । इनके देखने से ही पर जलते हैं और छूने से तो प्राणी नष्ट ही हो जाता है ॥६॥

जहाँ स्त्री है वहाँ राम नहीं और जहाँ राम है वहाँ स्त्री नहीं। भगवान की भक्ति और स्त्री की प्रीति दोनों एक पुरुष नहीं कर सकता। जिस तरह दिन और रात एकत्र नहीं हो सकते, उसी तरह राम और काम भी एकत्र नहीं रह सकते ॥७॥

सारांश यह कि मोक्ष-लाभ करने या जन्म-मरण से बचकर परम-पद पाने में ये स्त्रियाँ ही बाधक हैं। लोग इनके जाल में फँस जाते हैं। अतः जन्म-जन्मान्तर तक नरक भोगते हैं। उनको सद्गति मिलना कठिन हो जाता है। वकील महाकवि 'जौक' के कोई समझदार, जहाँदीदा पुरुष ही इस स्त्री-जाल में फँसने से बचता है।

कहा है—

दुनिया हैं वह सैयाद कि सब दाम में इसके।
आ जाते हैं, लेकिन कोई दाना नहीं आता ॥

दुनिया वह जाल है कि इसमें सभी फँस जाते हैं; कोई विचारशील ही इसमें फँसने से बचता है। जो इस जाल में नहीं फँसता, वही नरकों से बचता और मुक्ति लाभ करता है।

सब ग्रन्थन के ज्ञानवान अरु नीतिवान नर।
तिनमें कोऊ होत, मुक्ति-मारग में तत्पर ॥
सबको देत बहाय, वङ्क-नयनी यह नारी।
जाकी बाँकी भौंह, नचत अति ही अनियारी ॥
यह कुन्जी करम-कपाट की, खोलन कोऊकत फिरत।
जिनके न लगत मन दृगन में,ते भवसागर को तरत। ६२॥

सार—सुन्दरी स्त्रियाँ पुरुषों की सद्गति में बाधक हैं।

62. One may be versed in the Shastras, reputedly wise and humble, but there are few who can claim the higher and better life after death, for, there is the oblique brow of women having beautiful eyes moving in it, which like a key opens the lock of the gate of hell.

कृशः काणः खञ्जः श्रवणरहितः तुच्छविकलो
व्रणी पूयक्लिन्नः कृमिकुलशतैरावृततनुः ।
क्षुधाक्षामो जीर्णः पिठरककपालार्पितमलः
शुनीमन्वेति श्वा हतमपि निहन्त्येव मदनः ॥६३॥

काना, लँगडा, कनकटा और दुमकटा कुत्ता—जिसके शरीर में अनेक घाव हो रहे है, उनसे पीव और राध झरते है, दुर्गन्ध का ठिकाना नही है, घावो मे हजारो कीडे है, जो भूख से व्याकुल हो रहा है और जिसके गले मे हाँडी का घेरा पड़ा हुआ है—कामान्ध होकर कुतिया के पीछे-पीछे दौडता है। हाय ! कामदेव बड़ा ही निर्दयी है, जो मरे को भी मारता है ॥६३॥

खुलासा—कुत्ता, इतने क्लेशो से व्याप्त होने पर भी, शरीर मे दम न होने पर भी और भूख से व्याकुल होने पर भी, कामान्ध होकर, कुतिया के पीछे दौडता है। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि कामदेव बडा ही नीच और निर्दयी है, क्योकि वह मुसीबत से मरते हुओ पर भी अपने सत्यानाशी बाण छोड़ने मे आगा-पीछा नही करता। जो कामदेव ऐसे दुर्बलो का यह हाल करता है, वह मावा-मलाई, घी-दूध और रबडी-पेडे खाने वाले सण्ड-मुसण्डो का तो और भी बुरा हाल करता होगा। धूर्त्त साधु-सन्त और पण्डे-महन्त, जो नित्य माल-पर-माल उड़ाते हैं, क्या कामदेव के बाणो से रक्षित रहने मे समर्थ हो सकते होगे ? कदापि नही। जो ऐसा कहते है, वे महापापी और मिथ्यावादी हैं। वे एक पाप तो जारकर्म का करते हैं और दूसरा मिथ्या भाषण का।

हमारे देश के अनेक तीर्थों मे जो कुकर्म होते हैं, उनकी याद आने से कलेजा फटने लगता है। हमारी बेवा माँ, बहिनो और बेटियो की आबरू

बचना कठिन हो रहा है। सच तो यह है, दुष्टों ने तीर्थों और मन्दिरों को इन कुलाङ्गनाओं में फँसाने का जाल मुकर्रर कर रखा है। मोटे-ताजे वैरागी, सन्त और महन्त मुफ्त का बढ़िया-से-बढ़िया माल उड़ाते हैं। इसके बाद जब उन्हें कामदेवता सताता है तब भोली-भाली स्त्रियों को बहका कर, उन्हें उल्टी पट्टियाँ पढ़ा कर उनकी लाज लूटते और उनका सतीत्व भङ्ग करते हैं। घोंघाबसन्त भोंदू लोग ऐसे सण्ड-मुसण्डों को सच्चा महात्मा समझते हैं। मन में इतना भी नहीं समझते कि, इतने लड्डू-पेड़े, रबड़ी-मलाई, मोहनभोग और खीर-पूरी प्रभृति उड़ाने वालों को क्या काम न सताता होगा? ये अपनी कामाग्नि किस तरह शान्त करते होंगे? जब पेड़ के पत्ते और हवा खाकर जीवन-निर्वाह करने वालों को भी कामदेव सताता है, तब क्या इनको छोड़ देता होगा? महात्मा भर्तृहरि के कुत्ते से लोगों को शिक्षा ग्रहण कर, सावधान रहना चाहिये और स्त्रियों को तीर्थों या मन्दिरों में जाने से सर्वथा रोकना चाहिये। हम यह नहीं कहते कि सभी महात्मा और पुजारी कहलाने वाले ऐसे कुकर्म करते हैं. पर चूँकि हमने ये दुष्कर्म आँखों से देखे हैं अतः कहना पड़ता है कि ९९ फीसदी दुष्ट इन कुकर्मों में फँसे रहते हैं। क्या आप इन्हें विश्वामित्र और पराशर प्रभृति महर्षियों से भी अधिक इन्द्रिय-विजयी समझते हैं? स्त्री-पुरुष—अग्नि और घी, आग और फूस अथवा चुम्बक—पत्थर और लोहे के समान हैं! घी और आग के आस-पास होते ही घी पिलघने लगता है। फूस के पास अग्नि के आते ही फूस में झट से आग लग जाती है। चुम्बक के सामने लोहा आते ही, चुम्बक लोहे को अपनी ओर खींचता है। ये नेचरल (natural) या स्वाभाविक मामले हैं। इनमें मनुष्य का वश नहीं।

इसीलिये महात्माओं ने कहा है—

नारी निरखि न देखिये, निरखि न कीजै दोर।
देखत ही तें विष चढ़ें, मन आवे कछु और॥
सब सोना की सुन्दरी, आवे बास-मुबास।
जो जननी हो आपनी, तऊ न बैठे पास॥

स्त्री को कभी घूर कर न देखना चाहिये। उससे आँखें न मिलानी चाहिए, क्योंकि स्त्री के देखने से ही विष चढता है और फिर मन भी बिगड़ जाता है।

अगर सुन्दरी सोने की भी हो और उसमे सुगन्ध आ रही हो, यदि वह अपनी पैदा करने वाली माँ ही हो, तो भी उसके पास न बैठना चाहिये।

आशा है, हमारे देश के सीधे-सादे लोग, इन पक्तियो पर ध्यान दे, अपने घरो की इज्जत-आबरू पर पानी न फिरने देगे।

दुबरो कानो हीन-श्रवण, विन पूँछ नवाये।
बूढौ विकल शरीर, वार विन छार लगाये॥
झरत शीश ते राध रुधिर कृमि आरत डोलत।
क्षुधा-क्षीण अति दीन, गले घट-कण्ठ कलोलत॥
यह दशा श्वान पाई तऊ, कुतियन से उरझत फिरत।
देखो अनीति या मदन की, मृतकन को मारत फिरत॥६३॥

सार—कोई भी प्राणी कामदेव के बाणो से अछूता बच नहीं सकता हैं।

63. A dog—thin, one-eyed, lame, without ear and tail with sores full of pus, and worms walking over its body, hungry, old, having the round neck of a broken pot round its shoulder, goes after a bitch for intercourse. Alas! Kamdeva (Cupid) makes senseless even those who are almost dead (An animal under the influence of Cupid is devoid of all senses).

❦

स्त्रीमदां झषकेतनस्य परमां सर्वार्थसम्पत्करीं
ये मूढ़ाः प्रविहाय यान्ति कुधियो मिथ्याफलान्वेषिणः।

ते तेनैव निहत्य निर्दयतरं नग्नीकृता मुण्डिताः
केचित्पञ्चशिखिकृताश्च जटिलाः कापालिकाश्चापरे ॥६४॥

जो मूर्ख सब अर्थ और सम्पदों को देने वाली, कामदेव की मुद्रारूपी स्त्रियों को त्यागकर, स्वर्ग प्रभृति की इच्छा से, घर छोड़कर निकल गये हैं, उन्हें विरक्त भेप में न समझना चाहिये। उन्हें कामदेव ने अनेक प्रकार के कठोर दण्ड दिये हैं। इसी से कोई नङ्गा फिरता है, कोई सिर मुँड़ाए घूमता है, किसी ने पञ्चकेशी रखाई है, किसी ने जटा रखाई है और कोई हाथ में ठीकरो लेकर भीख मांगता फिरता है ॥६४॥

खुलासा—स्त्री कामदेव की मुद्रा या मुहर है। जिस तरह राज की मुद्रा या मुहर का अनादर करने वाले को राजा अनेक प्रकार के दण्ड देता है, उसी तरह कामदेव भी अपनी स्त्री-रूपी मुद्रा का अनादर करने वालों को नाना प्रकार के दण्ड देता है। किसी को नङ्गा करके फिराता है, तो किसी से भीख मँगाता है।

यही भाव नीचे की कविता में और भी स्पष्ट रूप से झलका है—

कामिनी मुद्रा काम की, सकल अर्थ को देत।
मूरख वाको तजत हैं, झूठे फल के हेत॥
झूठे फल के हेत, तजत तिनही को डाँडे।
गहि-गहि मूँड़े मूड़, वसन विन कर-कर छाँड़े॥
भगवा करि-करि भेप, जटिल है जगत जामिनी।
भीख माँग के खात, कहत हम छाँड़ी कामिनी ॥६४॥

सार—स्त्री-त्यागियों को कामदेव नाना प्रकार के दण्ड देता है।

62. Those fools, who throw aside the token of king Kamdeva, namely the women, who are productive of love and all sorts of fortunes and run after unkown subjects, are cruelly punished by the king Kamdeva, some by being made

to roam about naked, some by being made to have their heads shaved, some by being allowed to keep only five bunches of hair on their head and some by being made to beg with a pot in their hand

☼

बिश्वामित्रपराशरप्रभृतयो वाताम्बुपर्णाशना-
स्तेऽपि स्त्रीमुखापङ्कजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः ।
शाल्यन्नं सघृतं पयोदधियुतं भुञ्जन्ति ये मानवा-
स्तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भवेद्विन्ध्यस्तरेत्सागरम् ॥६५॥

जव विश्वामित्र, पराशर, मरीचि और शृङ्गी प्रभृति वड़े-वड़े विद्वान् ऋषि-मुनि, जो वायु, जल और पत्ते खाकर गुजारा करते थे, स्त्री के मुखकमल को देखकर मोहित हो गये, तव जो मनुष्य अन्न, घी, दूध, दही प्रभृति नाना प्रकार के व्यञ्जन खाते और पीते है, वे कैसे अपनी इन्द्रियो को वश मे रख सकते है ? यदि अपनी इन्द्रियो को वे वश मे कर सके, तो विन्ध्याचल पर्वत भी समुद्र मे तैर सके ॥६५॥

खुलासा—कामदेव वडा वली है। उसने जव केवल जल, वायु और पत्ते खाने वाले मुनियो को न छोडा, तव वह घी-दूध खाने वालो को कव छोड सकता है ? महामुनि विश्वामित्र जव अपना ज्ञान-ध्यान और विवेक-बुद्धि खोकर स्वर्गीय अप्सरा मेनका की रूपच्छटा पर मुग्ध हो गये, महर्षि पराशर नाव मे वैठे-वैठे अनजान नाविक की कन्या पर मोहित हो गये और हया-शर्म को तिलाञ्जलि देकर, दिन-दहाडे, अपनी माया से दिन में अन्धकार करके, अपनी कामाग्नि की शान्ति मे मशगूल हो गये, जव मरीचि और शृङ्गी जैसे ऋषि वेश्याओ के हाव-भावो पर मर मिटे, तव साधारण लोग मोहिनियो के मोह-पाश से कैसे बच सकते हैं ?

कहा है—

स्त्रीभिः कस्य न खण्डित भुवि मनः ।

इस पृथ्वी पर स्त्रियों ने किसका मन खण्डित या आकृष्ट नहीं किया ? अर्थात् स्त्रियों ने प्रायः सभी का मन हरा—सभी के दिलों पर अपनी छाप जमाई ।

कौशिकादि मुनि भये, वात-पय-पर्णाहारी ।
तेहू तिय-मुख-कमल देख सब बुद्धि बिसारी ॥
दधि घृत ओदन दूध, मधुर पकवान मलाई ।
नित प्रति सेवन करे, रहे बहु मोद बढ़ाई ॥
बहु विध ज्ञानी नर जग भए, वे नहिं मन कर सके बस ।
यदि होवहिं तो गिरिबिन्ध्य जनु,उदधि मध्य उतराहिं तस ॥६५॥

सार—जब विश्वामित्र और पराशर जैसे मुनि स्त्रियों के माया-जाल में फँस गये, तब और कौन बच सकता है ?

65. Vishwamitra, Parashara and others, who lived upon air, water and dry leaves only (they also) became captivated as soon as they saw the charming lotus-like faces of women. Surely then, if those, who live upon rice mixed with ghee, butter, and milk, can be successful in controlling their passions, Vindhya mountains would float on the ocean.

●

स्त्री त्याग की प्रशंसा

संसारेऽस्मिन्नसारे कुनृपतिभवनद्वारसेवावलम्ब-
व्यासङ्गध्वस्तधैर्यं कथममलधियो मानसं सन्निदध्युः ।
यद्येताः प्रोद्यदिन्दुद्युतिनिचयभृतो न स्युरम्भोजनेत्राः
प्रेङ्खत्काञ्चीकलापाः स्तनभरविनमन्मध्यभागास्तरुण्य ॥६६॥

अगर इस असार संसार में पूर्ण चन्द्रमा की-सी कान्ति वाली, कमल-सी आँखों वाली, कमर में लटकती हुई कर्धनो पहनने वाली,

स्तनो के भार से झुकी हुई कमर वाली युवती स्त्रियाँ न होती, तो निर्मल-बुद्धि मनुष्य, दुष्ट राजाओ के द्वार की सेवाओ में, अनेक कष्ट उठाकर अधीर चित्त क्यो होते ॥६६॥

खुलासा—पुरुषों को अपने पेट के लिए, राजा-महाराजाओ और-अमीर-उमराओ की सेवा करके, उनकी टेढी भृकुटियो से हर समय काँपते रहने और वारम्वार अपमानित होने एव अन्यान्य प्रकार की अनेक मुसीवतें उठाने की क्या जरूरत थी ? ससार मे पुरुष अपनी प्राणप्यारी के लिये ही नाना प्रकार के कष्ट सहता है, उसी के लिये रणक्षेत्र मे जाकर अपनी गर्दन दे देता है; उसी के लिये तरह-तरह की जिल्लत और वेइज्जती बर्दाश्त करता है, उसी के सुख की गरज से, वह अपने घोर शत्रुओ तक की खुशामदें करके, अपने मान को मलीन करता है। बहुत कहना व्यर्थ है, स्त्री ही पुरुषो के मान मर्दन और और दीनता का कारण है।

तौ असार ससार जान सन्तोष न तजते।
भीर भार के भरे भूप को भूल न भजते॥
बुद्धि-विवेक-निधान मान अपने नहिं देते।
हुकुम विरानो राख दुःख सम्पद नहिं लेते॥
जो यह नहिं होती शशि-मुखी, मृगनयनी केहरि-कटि।
छवि जटी छटा निकसी छरी, रस लपटी छूटी लटी। ६६॥

सार—स्त्रियो के ही कारण से पुरुषो को नाना प्रकार की तकलीफें उठानी पडती है।

66. If their would not have been such lotus-eyed young women with face shining like a newly risen moon, wearing sweet sounding girdle, whose waist is bent under the load of breats, then persons of pure intellect would not have put up with various insults by serving in the courts of wicked kings.

सिद्धाध्यासितकन्दरे हरवृषस्कन्धावगाढद्रुमे
गङ्गाधौतशिलातले हिमवतः स्थाने स्थिते श्रेयसि ।
कः कुर्वीत शिरः प्रणाममलिनं म्लानं मनस्वी जनो
यद्वित्रस्तकुरङ्गशावनयना न स्युः स्मरास्त्रं स्त्रियः ॥६७॥

यदि त्रस्ता मृगशावकनयनी कामास्त्ररूपा कामिनी इस जगत में न होती, तो सिद्ध-महात्माओं की गुफायें, महादेव के वाहन—नन्दीश्वर-बैल के कन्धा रगड़ने के वृक्ष और गङ्गाजल से पवित्र हुई शिलाओं वाले हिमालय के स्थान छोड़कर कौन मनस्वी—बुद्धिमान पुरुष, लोगों के सामने जा, उन्हें माथा झुका, अपने मन को मलीन करता ॥६७॥

खुलासा—संसार में, एकमात्र स्त्री के ही कारण से, पुरुषों को अनेक तरह से नीचा देखना पड़ता है। अगर स्त्री न होती, तो पुरुष हिमालय पर्वत की गुफाओं में अथवा गङ्गातट पर किसी उत्तम वृक्ष की छाया में बैठकर, शिव-शिव करता हुआ, अपने दिन सच्ची सुख-शान्ति से व्यतीत करता। उसे अपनी मान-प्रतिष्ठा खोकर, जने-जने की खुशामद करने की कौन-सी आवश्यकता थी? इसमें जरा भी शक नहीं कि संसार में एकमात्र स्त्री के ही कारण पुरुष को तरह-तरह की जिल्लतें उठानी और जगह-जगह बेइज्जती सहनी पड़ती है।

अभय हरिण—शावक—नयन, कामबाण सम नार ।
जो घर में होती नहीं, सहजहिं होतौ पार ॥
सहजहिं होतौ पार, बैठ गिरिगुहा सिद्ध बन ।
जहाँ तरुन सों अंग, खुजावत शिव कै वाहन ॥
स्वच्छ फटिक हिम—शैल, तले जहँ बहै गङ्गापय ।
निशिदिन धरि हरि ध्यान, चित्त को राखिय निर्भय ॥६७॥

सार—स्त्रियों के कारण ही पुरुषों को जगह-जगह नीचा देखना पड़ता है; नहीं तो वन-पर्वतों में किस चीज का अभाव है?

67. If there would not have been women, who are the instruments of Kamadeva and who have eyes like those of the

fearless young deer, then what for highminded man would have humiliated himself by bowing his head down before men and women, leaving the blissful region of the Himalayas in whose caves pious men reside and where the bull of God Shiva rubs his shoulder against the trees and where mountain slabs are washed by the water of the Ganga

●

संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी ।
अन्तरा दुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥६८॥

हे ससार ! यदि तुझमे मदसे मतवाले नेत्रोवाली दुस्तरा स्त्रियाँ न होती, तो तेरे परली पार जाना कुछ कठिन न होता ॥६८॥

खुलासा—मनुष्य इस लोक मे, कर्म-बन्धन या जन्म-मरण की फाँसी से पीछा छुडाने के लिये आता है। मोक्ष की साधना के लिये ही उसे मनुष्य-देह-रूपी पारसमणि मिलती है कि वह नियत अवधि के भीतर उससे मोक्षरूपी सोना बना ले। पर, यहाँ आने पर उसका बचपन तो खेल-कूद और पढने-लिखने मे कट जाता है। यौवनावस्था आने पर वह चचलनयनी, उन्नत-नितम्बिनी, पीनपयोधरा कामिनियो के रूप-जाल मे फँस जाता है। इनमे वह ऐसा भूलता है, कि उसकी सारी उम्र बीत जाती है और उसे अपने कर्त्तव्य-कर्म की याद तक नही आती। इतने मे ही उसकी अवधि पूरी हो जाती और उससे पारसमणि-रूपी मनुष्य-देह छिन जाती है। यहाँ से वह मोक्षरूपी सोना बनाये बिना ही, फिर कोरा चला जाता है। तात्पर्य यह, कि कामिनियो के आकर्षण के कारण से मनुष्य इस ससार-सागर से पार नही हो सकता। उसके इस काम मे वे बाधा डालती हैं। सच है, ससार में यदि कामिनी और काचन न होते, तो फिर किसी को भी इस भव-सागर को पार करने मे कठिनाई नहीं होती।, 'रसिक' कवि ने खूब कहा है :—

तावदेवामृतमयी यावल्लोचनगोचरा ।
चक्षुःपथादपगता विषादप्यतिरिच्यते ॥७४॥

स्त्री जब तक आँखों के सामने रहती है, तब तक अमृत-सी मालूम होती है; किन्तु आँखों की ओट होते ही, विष से भी अधिक दुःखदायिनी हो जाती है ॥७४॥

खुलासा—पुरुष के पास होने से स्त्री निश्चय ही अमृत-सी मालूम होती है; क्योंकि वह अपने हाव-भाव, कटाक्ष और मधुर वचन तथा सेवा प्रभृति से पति के चित्त को हाथ में लिए रहती है; पर अलग होते ही मन में भारी विरह-वेदना उत्पन्न करती है। वियोग-विकल पुरुष का खाना-पीना और नियमित समय पर सोना प्रभृति छूट जाता और साथ ही स्वास्थ्य तक नष्ट हो जाता है। स्त्री का विरह पुरुष के शरीर पर जहर का काम करता है। उसके मन में घोर सन्ताप होता है। इसी से कहा है कि स्त्री आँखों के सामने से हटते ही विषवत् हो जाती है।

ऐसी ही बात एक-दूसरे कवि ने कही है :—

अपूर्वो दृश्यते वह्निः कामिन्याः स्तनमण्डले ।
दूरतो दहते गात्रं हृदि लग्नस्तु शीतलः ॥

कामिनी के स्तन-मण्डलों में अपूर्व अग्नि है, जो दूर से तो शरीर को जलाती है और हृदय में लगाने पर शीतल हो जाती है।

मतलब यह है कि स्त्री स्मरण करने से सन्ताप पैदा करती, देखने से चित्त को हर लेती और मनुष्य को अन्धा बना देती; छूने से बल का नाश करती, सम्भोग करने से वीर्य का नाश करती और नेत्रों के सामने से हटने पर विरहाग्नि में जलाती है। स्त्री से किसी तरह भी पुरुष को सुख नहीं। न स्मरण करने में सुख, न देखने में सुख, न छूने में सुख, न भोगने में सुख, न पास रहने में सुख, न अलग होने में सुख। फिर लोग स्त्री पर जान देते हैं, यह क्या कम आश्चर्य की बात है?
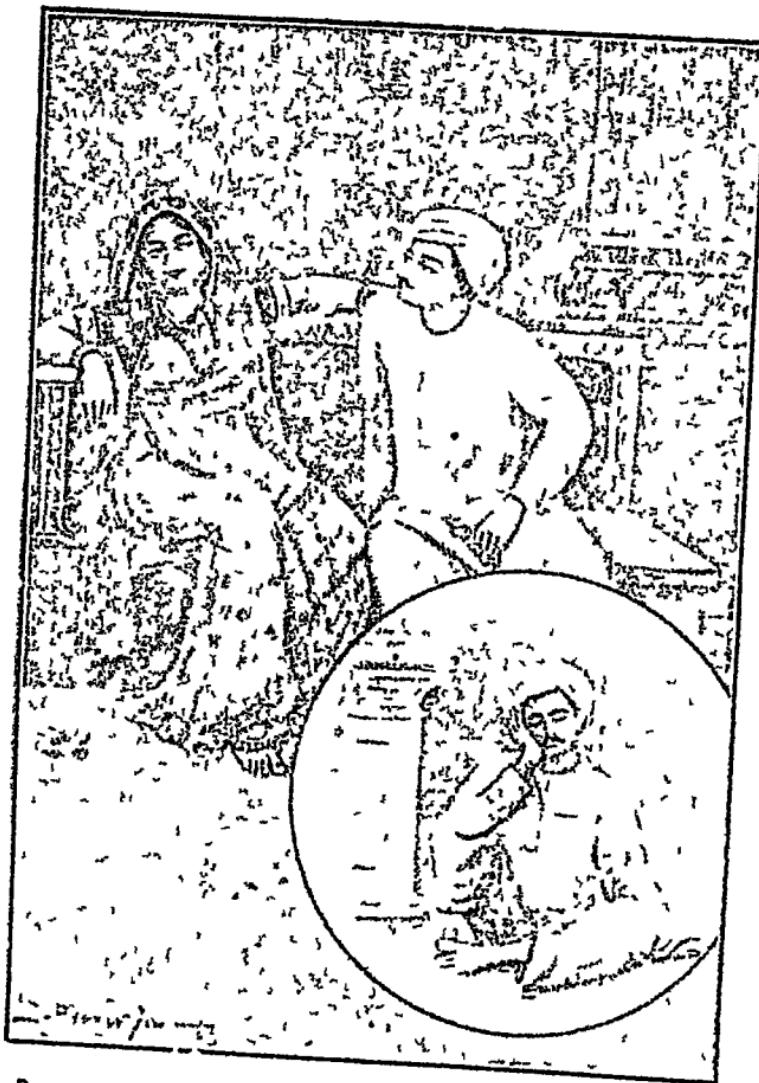
स्त्री जब तक आँखों के सामने रहती है, अमृत-सी मालूम होती है, आँखों की ओट होते ही विष से भी अधिक दुखदायिनी हो जाती है। चित्र में, ऊपर पुरुष स्त्री के सामने बैठा मुख-सुधा पान कर रहा है, नीचे जुदाई से दुखी है—यही भाव दिखाया है।

हकीम साहब ! आप क्यों अपने हाथ को पंजशाखे की तरह दिलजले आशिक की नब्ज पर रखकर वृथा जलाते हो ? इश्क का मरीज आपकी दवा से आराम न होगा।

मन्त्र दवा अरु आपसों, वेदन मिटै न वैद ।
कामवान सों भ्रमत मन, कैसे मिटिहै कैद ॥८८॥

सार—साधारण अपस्मार या मृगी रोग का इलाज है, पर काम के अपस्मार का इलाज नहीं है।

88. This Kamdeva (Cupid) like Epilepsy gives much pain due to senselessness, overcasts the mind and rolls the eyes. Neither any charm nor any medicine has any effect on those attacked by it, nor is it cured by various pacifying worships.

जात्यन्धाय च दुर्मुखाय च जराजीर्णाखिलाङ्गाय च
ग्रामीणाय च दुष्कुलाय च गलत्कुष्ठाभिभूताय च ।
यच्छन्तीषु मनोहरं निजवपुर्लक्ष्मीलवश्रद्धया
पण्यस्त्रीषु विवेककल्पलतिकाशस्त्रीषु रज्येत कः ॥८९॥

कुरूप, बुढ़ापे से शिथिल, गँवार, नीच और गलित कुष्ठी को, थोड़े से धन की आशा से, जो अपना सुन्दर शरीर सौंप देती है और जो विवेक-रूपी कल्पलता के लिये छुरी के समान है, उस वेश्या से कौन विद्वान रमण करना चाहेगा ॥८९॥

वेश्या पैसों को प्यार करती है, पुरुषों को नहीं। उसे जो पैसा देता है, वह उसी की हो जाती है; चाहे वह भंगी, चमार या चाण्डाल ही क्यों न हो ! जातिहीन, कुलहीन, जन्मान्ध, कुरूप, बूढ़ा, दुर्बल, काना और गलित कुष्ठी भी अपार धनी हो और उसे धन दे, तो वेश्या—बिना किसी तरह के विचार और पेशोपेश के—उसके नीचे अपना सोने-सा शरीर बिछा देती है। वेश्या को जवान

और बूढे, खूबसूरत और बदसूरत, काने और अन्धे, लूले और लँगडे, निर्बल और सबल, चोर और ठग, जुआरी और शराबी, सदाचारी और कदाचारी, हिन्दू और मुसलमान सब समान हैं। उसको न किसी से मुहब्बत है और न किसी से परहेज। वह धन देने वाले को चाहती है और न देने वाले से परहेज करती है।

किसी कवि ने कहा है और बिल्कुल ठीक कहा है :—

वित्तेन वेत्ति वेश्या स्मरसदृशं कुष्ठिनं जराजीर्णम्।
वित्तं विनापि वेत्ति स्मरसदृशं कुष्ठिनं जराजीर्णम्॥

पैसे वाले कोढी और जराजीर्ण पुरुष को वेश्या कामदेव के समान सुन्दर समझती है, और बिना पैसे वाले धन हीन को, चाहे वह कामदेव के समान सुन्दर ही क्यो न हो, कोढी और बुढापे से जीर्ण समझती है।

वेश्या जगत की जूठन, गन्दगी का पिटारा और नरक-कूप है। कौन बुद्धिमान ऐसी वेश्या के नर्म-नर्म होठो को चूसना और उसे आलिङ्गन करना पसन्द करेगा?

यो तो संसार में जितनी स्त्रियाँ हैं, सभी पुरुष के चित्त को हरने वाली हैं, पर साधारण स्त्रियो की अपेक्षा वेश्या मे चचलता बहुत ज्यादा होती है, इसी से उसमे पुरुष को मोहित कर लेने की शक्ति भी उनसे हजार गुणा ज्यादा होती है। वेश्यायें अपने गाने-बजाने का जाल बिछा कर और रूप का चुगा दिखाकर नौजवान पक्षियो को, सहज में, फन्दे में फँसा लेती हैं। वेश्याओ की लपक-झपक, चटक-मटक, नाजो-अदा और हाव-भाव तथा नखरों पर उठती जवानी के नातजुरबेकार नौजवान फिदा होकर, शीघ्र ही फँस जाते हैं। जो इनके दास या शिष्य हो जाते हैं, वे फिर किसी के नही रहते। उन्हें अपनी घर गृहस्थी अपने पूज्यपाद माता-पिता और अर्द्धाङ्गी कहलाने वाली स्त्री तक विषवत् बुरे लगते हैं।

साधारण नवयुवको को पागल बनाना तो वेश्याओ के बायें हाथ का खेल है। जब इन्होने एकान्त वन मे रहने वाले, वृक्षों के पत्तो और जल पर

गुजारा करने वाले महान तपस्वी शृङ्गी और मरीचि तक को अपना चेला बनाकर छोड़ा, उनको अपने रूप-जाल में फँसाकर उनके कठिन परीश्रम स किये हुए तप को क्षण भर में नष्ट कर दिया, तब इनके लिये नादान नौजवानों को फन्दे में फँसाना कितनी बड़ी बात है ? ऐसा शिकार मारने में तो इन्हें जरा भी कठिनाई नहीं होती।

ये, दिव्य मणिधारी सर्प की तरह, देखने में बड़ी मनोहर होती हैं। ये अपनी रूपच्छटा से पुरुषों के मनों को मोह लेतीं, मधुर-मधुर बातों से चित्तों को चुरा लेतीं तथा हाव-भाव और नाजो-अदा से हिये को हर लेती हैं। योद्धाओं के अग्निबाणों से चाहे रक्षा हो जाय, पर इनके नयनबाणों से किसी का निस्तार नहीं। इनके चचल नेत्र प्रायः सभी के हृदयों में क्षोभ करते हैं। किसी बिरली ही सती का सपूत इनके नेत्र-बाणों से बचे तो बच सकता है।

वेश्यायें पुरुष का रक्त-मांस खा जाने वाली सच्ची डायन है; क्योंकि जो काम डायनों के सुने जाते हैं, वे ही काम ये करती हैं। डायनें जिसे नजर-भर के देख लेती हैं, वह गलगलकर मरता है और वे उसका कलेजा निकालकर खा जाती हैं। वेश्यायें भी जिस पर अपने कटाक्ष बाण चला देती हैं, वह पागल हो जाता है और फिर वे उसका कलेजा निकाल खाती है; वेश्यायें लड़के और नौजवान सबको खा जाती हैं; खासकर धनियों की तो चटनी ही कर जाती हैं। इनसे न राजा की रक्षा है और न प्रजा की। इनकी चपेट में जो आ जाता है, ये उसी का करम-कल्याण कर देती हैं। ये देखते ही पुरुषों को घायल कर देती हैं और पीछे अपनी नजर से उनके प्राण खींच लेती हैं। सर्प का डसा हुआ आदमी बच भी सकता है। पर इन डायनों का डसा हुआ नहीं बचता। साँप के तो मुँह में विष रहता है, पर इनके समस्त शरीर मे विष रहता है। सर्प मनुष्य के पास आकर डसता है; पर इनका विष तो दूर से ही, इनके देखने मात्र से ही चढ़ जाता है। इनके अङ्ग-प्रत्यंग और एक-एक बाल तक में जहर भरा रहता है। इसी से इनका कोई अङ्ग भी यदि पुरुष की नजरों में आ जाता है, तो

उस पर बुरी तरह से जहर चढने लगता है। जहर चढने से फिर उस पुरुष की खैर नही।

किसी ने कहा है —

धर्म-कर्म-धन-भक्षिणी, सन्तति खावनहार।
वेश्या है अति राक्षसी, बुधजन कहत पुकार ॥

और भी —

दर्शनाद्धरते चित्त स्पर्शनाद्धरते बलम् ।
मैथुनाद्धरते वीर्य्य वेश्या प्रत्यक्षराक्षसी ॥

वेश्या साक्षात् राक्षसी है, क्योकि वह देखने से चित्त को, छूने से बल को और मैथुन से वीर्य को हरती है।

वेश्याओ की वजह से श्रेष्ठ कुलवती और पतिपरायणा अबलाये नाना प्रकार के कष्ट भोगती हैं। वेश्या भक्त न अपनी सहधर्मिणियो के पास आते, न उनसे बोलते और न उनका आदर सम्मान करते है। पतिव्रता स्त्रियो को खाने को अन्न और तन ढांकने को कपडा भी नसीव नही होता, पर वेश्याओ को, जो अपने पतियो को तज, ससुरकुल एव पितृकुल को बदनाम कर, वेश्यावृत्ति करती हैं, सब तरह के सुख मिलते है। पतिपरायणा नारियो को मरने के लिये जहर तक नही मिलता, पर वेश्याओ को हजारो-लाखो के जेवर मिलते हैं। वेश्या-भक्तो की सती स्त्रियाँ मिहनत-मजदूरी करके पेट भरती हैं। अनेक कुलागनाये चरखे कात-कातकर और आटा पीस-पीसकर अपनी शिशु-सन्तानों को पालती है। इस तरह नासमझ लोग बडा अन्याय करते हैं। उनके अन्याय-आचरणो के फलस्वरूप इन दुष्टा वेश्याओ की सख्या दिन-दिन बढती है, क्योकि जब धर्म पर चलने से भी कुलवधुओ को अन्न-वस्त्र तक नही मिलते, पति का सुख नसीब नही होता, तब वे अन्तस की अग्नि शान्त न होने और नाना प्रकार के दुख पाने से दुखित हो अपना धर्म त्याग, अधर्म-मार्ग का अवलम्बन करती और वेश्या हो जाती हैं। इनमे उनका अपराध नहीं क्योकि जैसी इन्द्रियाँ मर्दों के होती हैं, वैसी ही इन्द्रियाँ स्त्रियो के भी होती हैं। काम मर्दों

को सताता है, तो स्त्रियों को भी सताता है। जिस चीज की ख्वाहिश पुरुषों को होती है, उसी की स्त्रियों को भी होती है। जो पुरुष आप खाते, रण्डियों को खिलाते, आप मौज करते, वेश्याओं को मौज कराते, किन्तु घर की स्त्रियों की सुध भी नहीं, उनकी स्त्रियाँ उनका मुँह काला करतीं और उनके जीते-जी ही, उनकी बदनामी कराती हैं। वह जैसा करते हैं, वैसा फल भोगते हैं; अतः अपना सुख चाहने वाले समझदारों को, आगा-पीछा सोचकर, वेश्याओं से सदा दूर रहना चाहिये।

नासमझ नादान लोग जब वेश्याओं के कटाक्ष बाणों से घायल होते हैं, तब रात-दिन अष्ट पहर चौसठ घड़ी उन्हें वही वह दीखती है। वे उन्हें स्वर्गीय देवी समझ, उनकी हर तरह से स्तुति, पूजा और उपासना करते हैं। कोई कहता है :—

दिल से मिटाना तेरी अंगुश्त हिनाई का खयाल।
हो गया गोश्त से नाखून का जुदा हो जाना॥

कोई कहता है :—

दिल वह क्या जिसको नहीं तेरी तमन्नायें विसाल।
चश्म वह क्या जिसको तेरे दीद की हसरत नहीं॥

इस तरह उनके उपासक और भक्त उनकी स्तुति किया करते हैं। उनकी जुबान से बात निकालती नहीं कि उनके भक्त उसे फौरन ही पूरी करते हैं। उनकी फरमाइशें पूरी करने के लिए उनके सेवक अपनी जमीन-जायदाद गिरवी रख देते हैं, अपनी घर की स्त्री का जेवर तक उतारकर उनके हवाले कर देते हैं। इतने पर भी यदि कोई त्रुटि या गलती हो जाती है, तो वेश्यायें सख्त नाराजी जाहिर करती हैं। उनकी नाराजी, वेश्या-भक्तों के लिये रुद्र के तीसरे नेत्र खुलने या महाप्रलय होने के समान होती है। वे घबराकर इनके चरणों में लोटते और कदमों मे नाक रगड़-रगड़ कर कर माफी माँगते हैं।

जब वेश्यायें देखती हैं कि हमारे उपासकों के पास धन नहीं रहा, घर-

पूरा सब विक चुका, तब वे उन्हे जूतियों से पिटवाकर अपने घरो से निकलवा देती है। पर वे बेहया, इतनी बेइज्जती और जिल्लतें उठाने पर भी, उनको छोडना नही चाहते, पैरो मे गिरते हैं, अनेक तरह की खुशामदें करते हैं, तब उन्हे ये अपनी नीचे के सेवको मे रहने देती हैं। अच्छे अच्छे खानदानी अमीरों के लडको से घर मे झाड़ू लगवातीं, खाना पकवाती, पीकदान साफ करवातीं और हुक्के भरवाती हैं। कहाँ तक लिखे वेश्यादासो की अन्त मे बडी मिट्टी खराब होती है। भगवान दुश्मन को भी वेश्या के फन्दे मे न फँसाये। वेश्या बुरी बला है। यदि वेश्याओ की पूरी तारीफ लिखी जाय, तो एक पोथा हो जाय, इसलिये हम इस विषय को यही खत्म करते हैं।

वेश्या है अवगुण भरी, सब दोषो का का सिन्धु ।
अल्प दोष वर्णन किये, लखो सिन्धु मे विन्दु ॥

ऐसी अवगुणो की खान, धन-धर्म नसाने वाली अबलाओ पर अन्याय कराने वाली, कुलबधुओ को दुष्कर्मों का पाठ पढाने वाली, बाल-हत्या, पुत्री-हत्या और गो-हत्या तक करने वाली वेश्या को जो देखते, छूते और उससे रमण करते हैं, उनको धिक्कार है ! नाचते समय वेश्या स्वय कहती है :—

जब पूरन पाप भाण्डे ते भगवन्त-कथा न रुचे जिनको ।
एक गणिका नारी बुलाय लेईं नचवावत हैं दिन को रन को ॥
मृदंग कहे—'धिक् है ! धिक् है !! मजीर कहे-किनको-किनको ?'
तब हाथ उठायके नारि कहे, 'इनको, इनको, इनको, इनको ॥

वेश्यायें अपने यारो को रिझाने और नये-नये शिकार फँसाने के लिए मन्दिरो, मेलो-तमाशो और तीर्थ-स्थानो तथा बाग-बगीचो मे जाती और नाना प्रकार के मनमोहक वस्त्राभूषण पहनती हैं। नादान लोग इनकी झूठी और मक्कारी की बातो पर लट्टू होकर, इनको अपनी सच्ची प्रेमिका समझ लेते है; पर जहाँदीदा लोग जानते हैं कि वेश्याओ मे प्रीति का नाम भी नही।

बुद्धिमानो ! वेश्या से सदा सावधान रहो। वह तुमसे प्रेम रखती है,

सुधामय चन्द्रमा, अपने क्षय-रोग की शान्ति के लिये, मोती का रूप धारण कर, कामिनी के होठों का अमृत पी रहा है। मतलब यह है कि स्त्री के होठों में ऐसा उत्तम अमृत है कि उसे पीने के लिये सुधाकर चन्द्रमा ने भी मोती का रूप धारण किया है।

98. Fortunate is the man who being exhausted by sexual intercourse rests, even for a short while at night, between the arms of a woman setting his bosom on her breasts big like the heads of elephants and besmeared with wet safforn paste

सुधामयोऽपि क्षयरोगशान्त्यै नासाग्रमुक्ताफलकच्छलेन ।
अनङ्गसञ्जीवनदृष्टिशक्तिर्मुखामृतं ते पिबतीव चन्द्रः ॥९९॥

हे प्यारी ! यह चन्द्रमा अमृतमय, अतएव काम-चैतन्य करने वाला होते पर भी, अपने क्षय-रोग की शान्ति के लिये ही नाक के अगले हिस्से मे लटकाते हुए मोती के मिस से, तेरे अधरामृत को पी रहा है ॥९९॥

कवि महोदय स्त्री की नाक के अग्र भाग मे लटकते हुए, मोती को पूर्ण चन्द्रमा मानकर कहते हैं कि हे सुन्दरी ! यद्यपि चन्द्रमा स्वय अमृतमय है और वह पुरुषो के हृदयो मे कामोद्दीपन करने की शक्ति और सामर्थ्य रखता है; तथापि वह, अपने राजरोग या क्षय-रोग को आराम करने के लिये बड़े-से मोती का रूप धरके, तेरी नाक की बुलाक या नथ मे लटका हुआ, तेरे होठों के अमृत का पान कर रहा है ।

मनसिज-वर्द्धक अमृतमय, क्षयी-हरण शशि जान ।
नासा मोती मिस किये, करे अधरामृत पान ॥९९॥

सार—स्त्री का अधरामृत सुधाकर के अमृत से भी अच्छा है ।

99. O lady ! although the moon is full of nectar and the sight of moon gives rise to sexual desires, yet he is unable to cure himself of that disease of pthisis and in order to cure himself of that disease, the moon has as it were

transformed himself into peral-pendant of your nose and is constantly tasting the nectar of your lips.

★

दिश वनहरिणीभ्यो वंशकाण्डच्छवीनां
कवलमुपलकोटिच्छिन्नमूलं कुशानाम् ।
शुकयुवकतिपोलोपाण्डुताम्बूलवल्ली-
फलमरुणनखाग्रैः पाटितं वा वधूभ्यः ।।१००।।

हे पुरुषो ! या तो तुम वन-मृगियों के लिये बाँस के दण्डे के समान छवि वाली, पत्थर की नोंक से कटी हुई मूल वाली, कुश नामक घास के ग्रास दो; अथवा सुन्दरी बहुओं के लिये लाल-लाल नाखूनों से तोड़े हुए, सूई—तोती के कपोल के समान जरा-जरा पीले रङ्ग के पान दो ।।१००।।

खुलासा—मनुष्यो ! दो में से एक काम करो—(१) या तो घर गृहस्थी की मोह-ममता तोड़, वन में जा, ईश्वराधना में मन लगाओ और पत्थर की नोंक से कुछ-घास की जड़ काट-काटकर जङ्गली हिरनियों को चुगाओ; अथवा (२) घर में रहकर सुन्दरी नवयुवतियों को पके हुए पीले-पीले पानों के बीड़े दो।

बनमृगिन के देन को, हरे-हरे तृण लेहु ।
अथवा पीरे पान को, बीरा वधुवन देहु ।।१००।।

सार—दो में से एक काम करो—(१) या तो वन में जाकर ईश्वर का भजन करो, अथवा (२) घर में रहकर नव-वधुओं को भोगो ।

100. O people, you are either to feed the wild deer with Kush grass cut by the sharp edges of stone resembling bamboo sticks or to offer betel of slight yellow colour, torn, by red nails to beautiful wives.

❂
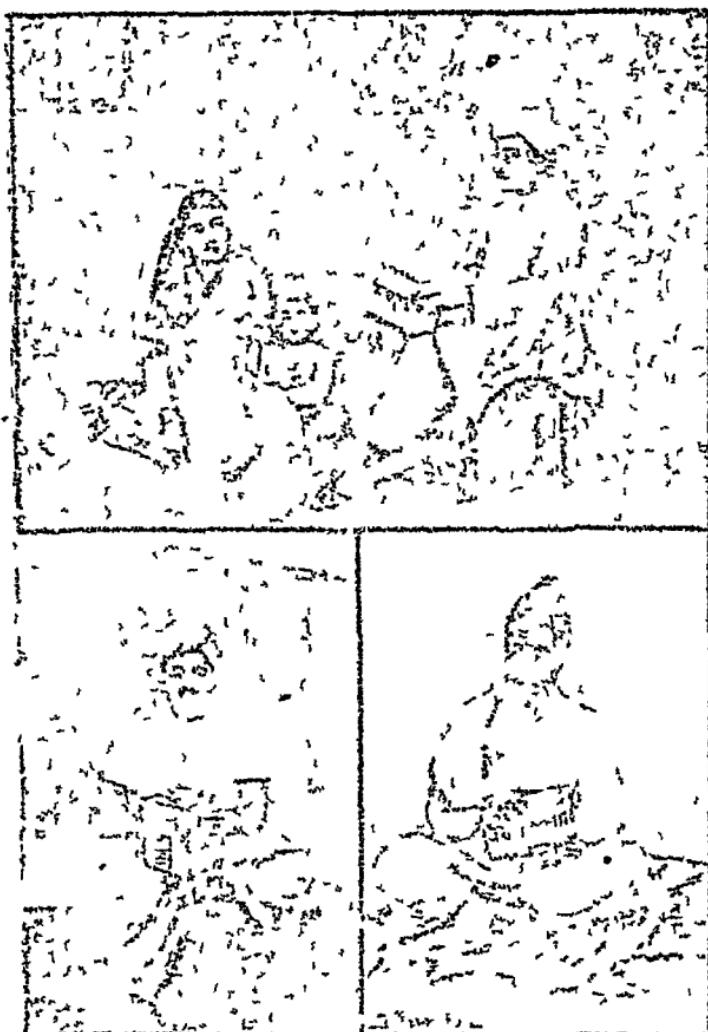
ससार मे सबकी रुचि एक-सी नही होती । किसी को शृङ्गार पसन्द है—कामिनियो का स्वर्गीय आनन्द लूटना पसन्द है, किसी को स्त्रियाँ विष से भी बुरी लगती है—उन्हे वैराग्य पसन्द है और किसी को नीति का अध्ययन पसन्द है। इसी से भर्तृहरि ने शृङ्गार, वैराग्य व नीति पर तीन शतक लिखे है।

दीखती है, न पुरुष, न और ही कुछ; सर्वत्र एक ब्रह्म ही दीखता है। अतः अब मैं उसी के ध्यान में लीलीन रहता हूँ, क्योंकि वैराग्य की अग्नि से संसारी भोग-विषयों के खयालात जड़ से ही भस्म कर दिये हैं।

101. So long as I was labouring under ignorance due to the darkness caused by Cupid, I could see nothing but woman is this whole world. Now, by applying the collyrium of better reasoning, my eye-sight has become normal and I find Brahma pervading the three worlds.

●

वैराग्ये सञ्चरत्येको नीतौ भ्रमति चापरः ।
शृङ्गारे रमते कश्चिद् भुवि भेदः परस्परम् ॥१०२॥

कोई वैराग्य को पसन्द करता है, कोई नीति में मस्त रहता है और कोई शृङ्गार में मग्न रहता है। इस भूतल पर, मनुष्यों में परस्पर इच्छाओं का भेदाभेद है ॥१०२॥

इस दुनियाँ में सबकी रुचि एक नहीं। किसी को एक चीज अच्छी लगती है, तो दूसरे को दूसरी और तीसरे को तीसरी। सबके मन और रुचि एक नहीं; किसी को यह संसार बुरा लगता है; अतः वह इसे मिथ्या और असार समझ, सबको त्याग, परम परमात्मा को भजता है। किसी को नीतिशास्त्रों का अध्ययन ही अच्छा लगता है; अतः वह रात-दिन नीति-ग्रन्थों का ही कीड़ा बना रहता है। किसी को न वैराग्य पसन्द है और न नीति; उसे एकमात्र विषयों का भोगना ही अच्छा लगता है; अतः वह इन्हीं में आनन्द समझता है, दिन-रात विषय-सुखों में ही मतवाला रहता है, स्त्रियों को ही अपनी आराध्य देवी समझता है और उनकी तारीफों से भरे हुए शृङ्गार-रस के ग्रन्थ देखने में ही लगा रहता है। सबकी रुचि भिन्न-भिन्न है, इसीसे भर्तृहरि महाराज ने "वैराग्य-शतक", "शृङ्गार-शतक" और "नीति-शतक"—तीन-शतक, तीनों प्रकार के लोगों के लिये लिखे हैं। जिसका दिल वैराग्य में हो, वह "वैराग्य-शतक" पढ़ें;

ो नीति से प्रेम हो, वह "नीति-शतक" पढ़े और जिसे शृङ्गार से प्रेम हो,
"शृङ्गार-शतक" पढ़े।

काहू के वैराग्य-रुचि, काहू के रुचि नीति।
काहू के शृङ्गार-रुचि, जुदी-जुदी परतीति ॥१०२॥

102 Some one feels pleasure in renunciation, some dy morality and some take delight in love So there is ersity of desires in this world.

※

यद्यस्य नास्ति रुचिरं तस्मिंस्तस्यास्पृहा मनोज्ञेऽपि।
रमणीयेऽपि सुधांशौ न मनः कामः सरोजिन्याः ॥१०३॥

जिस चीज मे जिसकी रुचि नही होती, वह चाहे कैसी भी ार क्यो न हो, उसे वह अच्छी नही लगती। चन्द्रमा सुन्दर है, पर लिनी उसे नहीं चाहती ॥१०३॥

जो जाके मन भावतो, ताको तासो काम।
कमल न चाहत चाँदनी, विकसत परसत घाम ॥१०३॥

103 A man has no inclination for the thing which does not like, though it may be a very good one. The on is beautiful yet she is not liked by the lotus.

चिकित्सा चन्द्रोदय

हर गृहस्थ व वैद्य के लिये उपयोगी

डा० देवेन्द्र दत्त शर्मा, वैद्य

करौल बाग, देहली-३ से लिखते हैं—

कि मैंने चिकित्सा-चन्द्रोदय खरीदी। इन पुस्तकों के कारण ही मैंने आयुर्वेद-रत्न तथा वैद्याचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं।

यह सत्य है जब पुस्तकें मँगाई और चिकित्सा-चन्द्रोदय का सहयोग मुझे मिला इसके साथ ही अन्य ग्रन्थों का स्वाध्याय भी करना पड़ा। परन्तु शीघ्र समझाने में और पाठकों को तुरन्त परिपक्व ज्ञान देने में इन पुस्तकों की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही कम है।

कृपया स्वास्थ्य-रक्षा एक कापी भेज दें।